दैनिक
भारत देश हमारा
मुख्य सम्पादक - जगजीत सिंह दर्दी
www.Bharatdeshhamara.com
DAILY BHARAT DESH HAMARA PATIALA
रजिस्ट्रेशन नं. पीबी/पीटीए (0273)/2024-26 PRGI (RNI) Regd. No.42376/1985 वर्ष 41 अंक 128 पटियाला शनिवार 10 मई 2025 मूल्य दो रुपए कुल पृष्ठ: 8 फोन : 0175-5061948, Posted at RMS Patiala E-mail:- bdhpatiala@gmail.com

पाक मिसाइल से क्षतिग्रस्त हुआ रजौरी का मकान

रजौरी, 9 मई (निस) भारत-पाकिस्तान सीमा पर तनाव अब चरम पर पहुंच चुका है। भारतीय वायुसेना द्वारा पाकिस्तान के दो जेएफ-17 और एक एफ-16 लड़ाकू विमान के साथ-साथ एयरबोर्न वॉर्निंग सिस्टम (एडब्ल्यूएसीएस) को मार गिराए जाने के बाद पाकिस्तान की हताशा साफ झलक रही है।

आईपीएल टूर्नामेंट अभी स्थगित

नई दिल्ली 9 मई (निस) भारत और पाकिस्तान के बीच बढ़ते तनाव को देखते हुए बीसीसीआई (भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड) ने एक बड़ा फैसला लिया है। बीसीसीआई ने मौजूदा हालात को ध्यान में रखते हुए आईपीएल (इंडियन प्रीमियर लीग) को एक सप्ताह तक स्थगित करने का फैसला लिया है। नया कार्यक्रम बाद में जारी किया जाएगा

लेह से सर क्रीक तक 36 ठिकानों पर हमले की कोशिश नाकाम, सेना ने पाक के एफ-16 विमानों को उड़ाया, मिसाइल हमले भी निष्क्रिय

पाकिस्तान में दहशत का माहौल, बठिंडा सैन्य स्टेशन को निशाना बनाने की कोशिश, पाकिस्तान की अधिकतर ऐयर डिफेंस प्रणाली भारत ने नाकाम की, राजौरी में एलओसी पर गोलीबारी तेज, गृह मंत्रालय ने सीमावर्ती राज्यों को दिए चौकसी के आदेश, जैसलमेर में विशेष चौकसी

नई दिल्ली 9 मई (निस) भारत और पाकिस्तान के बीच लगातार दूसरे दिन भी तनाव की स्थिति बनी रही। पाकिस्तान ने जम्मू कश्मीर, पंजाब, राजस्थान और गुजरात में हमले किए। पाकिस्तान के सभी हमलों को भारत के एस-400 मिसाइल डिफेंस सिस्टम ने हवा में ही मार गिराया। वहीं पाकिस्तान के 2 फाइटर जेट एफ-16 और एफ-17 को भी गिरा दिया। पाकिस्तान पर पलटवार करते हुए भारत ने लाहौर, कराची और रावलपिंडी में HQ- 9 एयर डिफेंस सिस्टम को भी तबाह कर दिया।

जम्मू कश्मीर के मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला आज जम्मू रवाना हो रहे हैं। भारत ने पाकिस्तान को दो टूक चेतावनी दी है कि अगर पड़ोसी मुल्क अपनी हरकतों से बाज नहीं आया तो भारत हर वार का मुंहतोड़ जवाब देगा।

पाकिस्तान ने ड्रोन और मिसाइल से किया उकसावे वाला हमला

विंग कमांडर व्योमिका सिंह ने बताया कि 7 मई की रात 8:30 बजे पाकिस्तान ने भारत पर ड्रोन और मिसाइल से असफल व उकसावे वाला हमला किया। उसके बाद भी उसने अपना नागरिक हवाई क्षेत्र बंद नहीं किया। पाकिस्तान जानबूझकर नागरिक विमानों को ढाल बना रहा है। यह जानते हुए कि भारत की एयर डिफेंस से त्वरित जवाब मिलेगा। यह स्थिति अंतरराष्ट्रीय उड़ानों सहित आम नागरिक विमानों के लिए खतरनाक है। जो भारत-पाक सीमा के पास उड़ान भर रहे थे।

करतारपुर कॉरिडोर की यात्रा रोकी गई-विदेश सचिव विक्रम मिस्री ने बताया कि पाकिस्तान धार्मिक स्थलों को निशाना बनाने की कोशिश कर रहा है। पूंछ में गुरुद्वारा पर हमले की कोशिश की वहीं ननकाना साहब पर भी हमले का नापाक प्रयास किया गया है।

पाकिस्तान ने नियंत्रण रेखा के पार गोलीबारी की-कर्नल सोफिया कुरैशी ने बताया कि पाकिस्तान ने जम्मू-कश्मीर के तंगधार, उरी, पुंछ, मेंढर, राजौरी, अखनूर और उधमपुर में भारी कैलिबर आर्टिलरी गन और सशस्त्र ड्रोन का उपयोग करके नियंत्रण रेखा के पार गोलीबारी भी की। जिसके परिणाम स्वरूप भारतीय सेना के कुछ जवान हताहत हुए और घायल हुए। भारतीय जवाबी कार्रवाई में पाकिस्तानी सेना को भी बड़ा नुकसान पहुंचाया गया है।

पाक ने की बठिंडा सैन्य स्टेशन को निशाना बनाने की कोशिश

कर्नल सोफिया कुरैशी ने बताया कि रात में पाकिस्तान के सशस्त्र (मानव रहित हवाई वाहन) ने बठिंडा सैन्य स्टेशन को निशाना बनाने की कोशिश भी की जिसे पकड़ कर निष्क्रिय कर दिया गया। पाकिस्तानी हमले के जवाब में पाकिस्तान में 4 हवाई रक्षा स्थालों पर सशस्त्र ड्रोन लॉन्च किए गए। इनमें से एक ड्रोन,ष्ठ रडार को नष्ट करने में सक्षम रहा।

पाकिस्तान ने पूंछ में गुरुद्वारे पर हमला किया था

विदेश सचिव विक्रम मिस्री ने कहा कि अपनी हरकतों को स्वीकार करने के बजाय पाकिस्तान ने बेतुका और अपमानजनक दावा कर रहा है। विदेश सचिव ने कहा कि पाकिस्तान ने गलत सूचना फैलाई कि भारत ने ड्रोन हमले के जरिए नानकम साहिब गुरुद्वारे को निशाना बनाया जो सरासर झूठ है। पाकिस्तान सांप्रदायिक विवाद पैदा करने के (शेष अंतिम पृष्ठ पर)

पुंछ में पाकिस्तानी गोलीबारी से एक व्यक्ति की मौत, तीन घायल, सेना की जवाबी कार्रवाई

पुंछ 9 मई (निस) जम्मू-कश्मीर के पुंछ और राजौरी जिलों के अग्रिम इलाकों में शुक्रवार सुबह पाकिस्तान की ओर से की गई गोलाबारी में एक ग्रामीण की मौत हो गई और तीन अन्य घायल हो गए। जिसके बाद सेना के जवानों ने जवाबी कार्रवाई की। अधिकारियों ने बताया कि सुबह 3:50 से 4:45 बजे के बीच कई उच्च तीव्रता वाले विस्फोट हुए, जिसके बाद तत्काल ब्लैकआउट हो गया और सायरन बजने लगे। भोर से पहले के वीडियो में जम्मू क्षेत्र में ड्रोन और अन्य उड़ने वाली वस्तुओं को वायु रक्षा प्रणाली द्वारा निष्प्रभावी करते हुए दिखाया गया है। कश्मीर के कुपवाड़ा और बारामुल्ला जिलों के अलावा राजौरी, पुंछ और जम्मू जिलों में रात भर गोलीबारी हुई।

एक व्यक्ति की मौत, 3 लोग घायल

पुंछ जिले के लोरान और मेंढर सेक्टरों के विभिन्न इलाकों में पाकिस्तानी गोलाबारी में एक व्यक्ति की मौत हो गई और उसकी पत्नी समेत तीन अन्य घायल हो गए। घायलों को अस्पताल ले जाया गया। उन्होंने बताया कि गोलाबारी से संपत्ति को भी काफी नुकसान पहुंचा है, जिसमें कई घर और सैकड़ों वाहन प्रभावित हुए हैं। मृतक की पहचान लोरान इलाके के मोहम्मद अबरार के रूप में हुई है। घायलों में मेंढर के (शेष अंतिम पृष्ठ पर)

पाक की कायराना चाल: नागरिक विमानों को बना रहा हमलों की ढाल-विदेश मंत्रालय

नई दिल्ली, 9 मई (निस)। भारत के 'ऑपरेशन सिंदूर' के जवाब में पाकिस्तान द्वारा की गई कायराना हरकतों की भारत सरकार ने शुक्रवार को प्रेस ब्रीफिंग में विस्तार से जानकारी दी। विदेश मंत्रालय की ओर से हुई इस ब्रीफिंग में विदेश सचिव विक्रम मिसरी, कर्नल सोफिया कुरैशी और विंग कमांडर व्योमिका सिंह ने हिस्सा लिया और पाकिस्तानी रणनीति की परतें खोल कर रख दीं। कर्नल सोफिया कुरैशी ने मीडिया के सामने कुछ तस्वीरें पेश करते हुए यह खुलासा किया कि पाकिस्तान ने अपने सैन्य हमलों के दौरान नागरिक विमानों को जानबूझकर ढाल के रूप में इस्तेमाल किया। हमले के वक्त करांची और लाहौर एयरस्पेस में पैसेंजर फ्लाइट्स हवा में थीं, जिससे यह स्पष्ट हुआ कि पाकिस्तान ने हवाई क्षेत्र को जानबूझकर खुला रखा ताकि भारत जवाबी कार्रवाई में संयम बरते और हमलों को रोका जा सके। कर्नल सोफिया ने बताया कि पाकिस्तान ने भारत के 36 ठिकानों को निशाना बनाने की कोशिश की, जिनमें उत्तरी और पश्चिमी भारत के कई सैन्य प्रतिष्ठान शामिल थे। उन्होंने कहा कि भारतीय वायुसेना ने संयम बरतते हुए जवाबी कार्रवाई की और आम नागरिकों को कोई नुकसान न हो इसका विशेष ध्यान रखा गया।

तुर्किये निर्मित ड्रोन का इस्तेमाल

कर्नल सोफिया के अनुसार, पाकिस्तान ने तुर्किये में निर्मित ड्रोन से हमला किया। भारत ने इन हमलों का जवाब देते हुए पाकिस्तान की सर्विलांस रडार प्रणाली को नष्ट कर दिया। यह कार्रवाई पाकिस्तान की सेना के लिए बड़ा सामरिक झटका साबित हुई है।

मिसरी की पाक को चेतावनी

विदेश सचिव विक्रम मिसरी ने पाकिस्तान को चेतावनी दी कि इस तरह की हरकतें न केवल भारत-पाक संबंधों को नुकसान पहुंचाती हैं,बल्कि नागरिक विमानन सुरक्षा के लिए भी खतरा हैं।

काशी विश्वनाथ, श्रीकृष्ण जन्मभूमि, बांकेबिहारी मंदिर में सुरक्षा के अभेद इंतजाम

ऑपरेशन सिंदूर के बाद भारत पाकिस्तान के बीच अघोषित युद्ध में पूरा यूपी (शेष अंतिम पृष्ठ पर)

सीमा पर सुरक्षा बलों ने 7 आतंकियों को किया ढेर

जम्मू 9 मई (निस) जम्मू फ्रंटियर के सांबा सेक्टर में 8 और 9 मई 2025 की रात को आतंकवादियों के एक बड़े समूह ने अंतरराष्ट्रीय सीमा पर घुसपैठ की कोशिश की है। यह घुसपैठ उस समय हुई जब सभी लोग सो रहे थे, लेकिन BSF की निगरानी टीम ने समय रहते इस गतिविधि को पकड़ लिया। आतंकियों को पाकिस्तानी रेंजरों की ओर से ढांढर पोस्ट से गोलीबारी का समर्थन मिल रहा था, ताकि वे भारत में दाखिल हो सकें। लेकिन बीएसएफ के सतर्क जवानों ने तुरंत कार्रवाई करते हुए इस घुसपैठ की कोशिश को पूरी तरह नाकाम कर दिया। बीएसएफ की जवाबी कार्रवाई में कम से कम 7 आतंकवादी मारे गए हैं। साथ ही पाकिस्तान की ढांढर पोस्ट को भी भारी नुकसान पहुंचा है। इस दौरान कोई भी भारतीय जवान हताहत नहीं हुआ है।

युद्ध समाधान नहीं- मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड ने भारत-पाक से की शांति की अपील

नई दिल्ली 9 मई (निस) भारत और पाकिस्तान के बीच तनावपूर्ण माहौल में ऑल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड (एआईएमपीएलबी) ने दोनों देशों से संयम और संवाद की अपील की है। संगठन ने कहा कि युद्ध किसी भी समस्या का स्थायी हल नहीं है, विशेष रूप से तब, जब दोनों देशों के पास परमाणु हथियार मौजूद हों। बोर्ड ने शुक्रवार को एक ऑनलाइन बैठक के बाद बयान जारी किया जिसमें कहा गया कि वह देश की सुरक्षा के लिए उठाए जा रहे कदमों का समर्थन करता है, लेकिन आम नागरिकों की जिंदगी और शांति भी उतनी ही अहम है। एआईएमपीएलबी ने आतंकवाद और निर्दोष लोगों की हत्या की सख्त निंदा करते हुए कहा कि इस्लाम में हिंसा और आतंक के लिए कोई स्थान नहीं है। मानवीय मूल्य किसी भी प्रकार के आतंकवाद को खारिज करते हैं।

गृह मंत्रालय ने सभी राज्यों को निर्देश जारी किए, आपात सेवाएं तैयार रखें

नई दिल्ली 9 मई (निस) भारत व पाकिस्तान के बीच बढ़ते तनाव को देखते हुए गृह मंत्रालय ने सभी राज्यों को सख्त निर्देश जारि किए हैं। युद्ध के हालात के बीच भारत पूरी तरह से तैयार है। आज सुबह भी पाकिस्तान द्वारा भेजे गए कई ड्रोन व मिसाइलों को नष्ट कर दिया गया है। जानकारी के मुताबिक, 22 अप्रैल को पहलगाम आतंकवादी हमले के बाद पाकिस्तान के साथ बढ़ते तनाव के मद्देनजर गृह मंत्रालय (एमएचए) ने सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को आपात स्थिति के लिए तैयार रहने के निर्देश जारी किए हैं। राज्यों को नागरिक सुरक्षा नियमों के तहत आपातकालीन शक्तियों को सक्रिय करने, मॉक ड्रिल आयोजित करने और आवश्यक सेवाओं की तैयारी सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए हैं। गृह मंत्रालय ने सभी राज्यों मुख्य सचिवों और प्रशासकों को पूरी तरह से तैयार रहने की सलाह दी है।

भारत-पाक तनाव के बीच राजधानी में हाई अलर्ट, सभी जिलों में बजाए जा रहे सायरन

नई दिल्ली 9 मई (निस) भारत और पाकिस्तान के बीच जारी सैन्य संघर्ष के मद्देनजर दिल्ली में अधिकारी हवाई हमलों के प्रति आगाह करने वाले सायरन लगाने से लेकर नागरिक सुरक्षा कर्मियों की तैनाती, नियंत्रण कक्ष की स्थापना और 'मॉक ड्रिल% के आयोजन जैसी तैयारियों में जुटे हैं। अधिकारियों ने शुक्रवार को यह जानकारी दी। अधिकारियों ने बताया कि राष्ट्रीय राजधानी में यातायात के लिहाज से व्यस्त इलाकों और सरकारी भवनों सहित महत्वपूर्ण प्रतिष्ठानों पर भारी सुरक्षा व्यवस्था की गई है। उन्होंने बताया कि पुलिस ने बाजार, रेलवे स्टेशन, मॉल, पार्क और मेट्रो स्टेशन सहित अधिक आवाजाही वाले क्षेत्रों में भी निगरानी बढ़ा दी है। राजस्व विभाग के एक वरिष्ठ अधिकारी के मुताबिक, प्रशासनिक स्तर पर 11 राजस्व जिले किसी भी अप्रत्याशित स्थिति से निपटने की तैयारी कर रहे हैं।उन्होंने बताया कि पूरी दिल्ली में हवाई हमले के प्रति आगाह करने वाले सायरन लगाए जा रहे हैं। अधिकारी के अनुसार, संवेदनशील जगहों की पहचान कर ली गई है और हवाई हमले के प्रति अलर्ट करने वाले सायरन लगाए जा रहे हैं। नागरिक सुरक्षा निदेशालय ने शुक्रवार दोपहर आईटीओ स्थित बहुमंजिला पीडब्ल्यूडी इमारत के ऊपर लगाए गए सायरन का परीक्षण किया। आने वाले दिनों में अन्य क्षेत्रों में भी इसी तरह के परीक्षण अभ्यास किए जाएंगे।

ऑपरेशन सिंदूर की सफलता से गदगद संघ

नई दिल्ली, 9 मई (निस) पहलगाम में हुए आतंकी हमले के जवाब में किए गए भारतीय सेना के ऑपरेशन सिंदूर को लेकर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) प्रमुख मोहन भागवत और संघ सरकार्यवाह दत्तात्रेय होसबाले की ओर से बयान जारी हुआ है। उन्होंने आतंकियों के खिलाफ जारी ऑपरेशन सिंदूर का समर्थन कर भारत सरकार और सैन्य बलों का हार्दिक अभिनंदन किया है। संघ ने कहा कि संकट की इस घड़ी में संपूर्ण देश तन-मन-धन से सरकार एवं सैन्य बलों के साथ खड़ा है। संघ ने एक्स पर ऑपरेशन सिंदूर की फोटो शेयर कर लिखा, पहलगाम की कायरतापूर्ण आतंकवादी घटना के बाद पाक प्रायोजित आतंकवादियों एवं उनके समर्थक पारितंत्र पर की जा रही निर्णायक कार्रवाई ऑपरेशन सिंदूर के लिए भारत सरकार के नेतृत्व और सैन्य बलों का हार्दिक अभिनंदन। हिंदू यात्रियों के नृशंस हत्याकांड में आहत परिवारों को एवं समस्त देश को न्याय दिलाने हेतु हो रही इस कार्रवाई ने समूचे देश के स्वाभिमान एवं हिम्मत को बढ़ाया है।पोस्ट में लिखा गया है, हमारा मानना है कि पाकिस्तान में आतंकियों, उनका ढांचा एवं सहयोगी तंत्र पर की जा रही सैनिक कार्रवाई देश की सुरक्षा के लिए आवश्यक एवं अपरिहार्य कदम है। संकट की घड़ी में संपूर्ण देश तन-मन-धन से देश की सरकार एवं सैन्य बलों के साथ खड़ा है। आरएसएस ने पोस्ट में लिखा, संघ इस चुनौतीपूर्ण मौके पर समस्त देशवासियों से आह्वान करता है।

चंडीगढ़, मोहाली में बाजार 7 बजे बंद होंगे, पंजाब के अनेक शहरों में रात को अभी ब्लैकआऊट रहेगा

मोहाली/चंडीगढ़ 9 मई (निस) मौजूदा परिस्थितियों को देखते हुए सख्त आदेश जारी हुए हैं। मिली जानकारी के अनुसार एसएएस नगर में इन्वर्टर व जनरेटर पर पूर्ण तौर पर पाबंदी लग गई है। जिला मजिस्ट्रेट कोमल मित्तल का कहना है कि, मौजूदा परिस्थितियों और पाकिस्तान से संभावित हवाई हमले के खतरे का संकेत देने वाली खुफिया सूचनाओं के मद्देनजर, सार्वजनिक सुरक्षा और रणनीतिक हितों की रक्षा के लिए रात के समय पूर्ण ब्लैकआउट की आवश्यकता हो सकती है। जबकि आउटडोर लाइट्स, बिल बोर्ड, स्ट्रीट लाइट्स, सोलर लाइट्स आदि के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले इन्वर्टर, जनरेटर और किसी भी अन्य पावर बैकअप का उपयोग जिला एसएएस नगर में किसी भी आतंकवादी/ड्रोन हमले को आमंत्रित कर सकता है। जिला मजिस्ट्रेट ने कहा कि भारत और पाकिस्तान के बीच मौजूदा स्थिति को देखते हुए, आम जनता की सुरक्षा और जान-माल की रक्षा के लिए सिनेमाघरों और शॉपिंग मॉल जैसे सार्वजनिक स्थानों को बंद करना भी आवश्यक हो गया है, ताकि भविष्य में किसी भी खतरे से बचा जा सके। उन्होंने भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता 2023 की धारा 163 के तहत कई पाबंदिया लगा दी हैं। उन्होंने कहा कि, जिला एसएएस नगर में अगले आदेश तक आउटडोर लाइट्स, बिल बोर्ड, स्ट्रीट लाइट्स आदि के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले इन्वर्टर, जनरेटर और किसी भी अन्य पावर बैकअप के इस्तेमाल पर और ब्लैकआउट संचालन के मामले में सोलर लाइट्स के इस्तेमाल पर पूर्ण प्रतिबंध। जिला एसएएस नगर में अगले आदेश तक सभी सिनेमा हॉल, शॉपिंग मॉल रात 8.00 बजे से सुबह 6.00 बजे बंद रहेंगे। शाम के समय पटाखों और लंबी बीम लेजर/डीजे लाइट्स के इस्तेमाल पर प्रतिबंध है। इसके अलावा किसी तरह के ध्वनि प्रदूषण पर भी पाबंदी है। शाम के समय लाउड स्पीकर, डीजे पर सख्त पाबंदी है।

तनावपूर्ण माहौल को लेकर चंडीगढ़ में नई एडवाइजरी जारी, रात 7 बजे के बाद...भारत व पाकिस्तान के बीच बढ़ते तनाव के चलते चंडीगढ़ प्रशासन ने सख्त एडवाइजरी जारी की है। तनावपूर्ण माहौल के चलते शहर की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए सख्त आदेश जारी किए गए हैं। लोगों से कहा गया है कि, वह रात 7 बजे के बाद बाजार को बंद कर दें। इसके साथ भी मेडिकल की दुकानें व इमरजेंसी सेवाओं को छोड़ कर सभी दुकानें बंद रहेंगी। प्रशासन ने पुलिस और पीसीआर की टीमों को सख्ती से इन आदेशों को लागू करने के लिए कहा है। प्रशासन ने दुकानों के बाहर लगे स्टॉल, सीसीटीवी कैमरे और बोर्ड लाइटें शाम 7 बजे के बाद बंद रखने के भी आदेश दिए हैं। जानकारी के मुताबिक, पुलिस पीसीआर टीमें लगातार शहर में गश्त कर रही हैं और लाउडस्पीकर के जरिए जनता को सूचित कर रही हैं। वहीं नियमों का पालन न करने वालों को सख्त कार्रवाई की चेतावनी भी दी गई है।

चंडीगढ़ एसएसपी ने लोगों से की खास अपील - एसएसपी कंवरदीप कौर ने चंडीगढ़ वासियों से अपील है कि सोशल मीडिया पर चल रही किसी भी अफवाह पर भरोसा न करें। सही जानकारी (शेष अंतिम पृष्ठ पर)

हम सेना के साथ, दुश्मनों को मिलेगा मुंह तोड़ जवाब, सीमापर एंटी ड्रोन कवच लगेगा-सीएम मान

चंडीगढ़, 9 मई (निस)पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान की अध्यक्षता में शुक्रवार को हुई कैबिनेट बैठक में एक ऐतिहासिक और निर्णायक फैसला लिया गया। बैठक में अंतरराष्ट्रीय सीमा पर ड्रोन के माध्यम से हो रही हथियारों और नशे की तस्करी को रोकने के लिए अत्याधुनिक एंटी-ड्रोन सिस्टम की खरीद को मंजूरी दी गई।

मुख्यमंत्री कार्यालय के प्रवक्ता ने जानकारी दी कि राज्य सरकार 532 किलोमीटर लंबी अंतरराष्ट्रीय सीमा पर 9 एंटी-ड्रोन सिस्टम स्थापित करेगी, जिससे पाकिस्तान की ओर से की जा रही ड्रोन आधारित तस्करी पर प्रभावी नियंत्रण पाया जा सकेगा। इस उद्देश्य के लिए राज्य सरकार 51.41 करोड़ रुपये खर्च करेगी।

मुख्यमंत्री भगवंत मान ने स्पष्ट शब्दों में कहा, ड्रोन के ज़रिए पाकिस्तान नशा और हथियार भेजकर हमारे युवाओं को बर्बाद करना चाहता है और आतंकवाद को फंडिंग देता है। लेकिन अब यह हरकतें नहीं चलेंगी। पंजाब सरकार इस साजिश को जड़ से खत्म करेगी।उन्होंने आगे कहा, हमारी सरकार अपनी सीमाओं की सुरक्षा और देश की अखंडता के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध है। हम अपनी सुरक्षा एजेंसियों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़े हैं और पाकिस्तान को हर मोर्चे पर मुंहतोड़ जवाब देंगे।

पंजाब की भौगोलिक स्थिति को देखते हुए यह फैसला और भी महत्वपूर्ण बन जाता है। राज्य की सीमा न केवल पाकिस्तान से लगती है, बल्कि अफगानिस्तान जैसे दुनिया के प्रमुख हेरोइन उत्पादक देश के नजदीक भी है। यह क्षेत्र लंबे समय से पाकिस्तान समर्थित नार्को-टेररिज्म (नशा आतंकवाद) का शिकार रहा है।

प्रवक्ता ने बताया कि हाल के वर्षों में ड्रोन और,ङ्क के माध्यम से सीमाएं भेदने की घटनाएं बढ़ी हैं, जिनका इस्तेमाल हथियारों, नशे और विस्फोटकों को भारत में भेजने के लिए किया जा रहा है। अब ये अत्याधुनिक एंटी-ड्रोन सिस्टम इन खतरों को समय रहते पहचान कर उन्हें निष्क्रिय करेंगे। इसके साथ ही, यह तकनीक ङ्कढ्ढक्क मूवमेंट और संवेदनशील क्षेत्रों की सुरक्षा में भी उपयोगी सिद्ध होगी। कैबिनेट का यह निर्णय सीमावर्ती जिलों की सुरक्षा को और मजबूत करने की दिशा में एक ठोस और रणनीतिक कदम है।

सम्पादकीय

मसलों पर समय सीमा तय करने पर विवाद क्यों ?

उच्चतम न्यायालय ने राज्यपालों और राष्ट्रपति के स्तर पर विधेयक स्वीकृत करने संबंधी समय सीमा निर्धारित क्या की, समूचे राजनीतिक जगत में जैसे भूचाल आ गया। नेताओं द्वारा इसे विधायिका की कार्यवाही में सीधा हस्तक्षेप मानते हुए इस कार्यवाही को न्यायपालिका द्वारा अपनी सीमा लांघने जैसे बयान दिए जाने लगे। उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने बयान दे डाला कि संविधान की मूल भावना के 'अंतिम स्वामी' चुने हुए जनप्रतिनिधि होते हैं और संसद से ऊपर कोई भी नहीं है। भाजपा सांसद निशिकांत दुबे तो इतने आगे चले गए कि, यदि सुप्रीम कोर्ट को ही कानून बनाना है तो संसद और विधानसभाओं को बंद कर देना चाहिए, और भारत में गृह युद्ध के लिए सीजेआई खन्ना जिम्मेदार हैं धनखड़ के बयान पर सुप्रीम कोर्ट बार एसोसिएशन के अध्यक्ष और वरिष्ठ कानूनविद कपिल सिब्बल मैदान में आए। उन्होंने कहा कि न तो संसद और कार्यपालिका नहीं संविधान सर्वोच्च है जिसके प्रावधानों की व्याख्या सुप्रीम कोर्ट द्वारा की जाती है। इस देश ने अब तक कानून को इसी तरह समझा है। सिब्बल ने उपराष्ट्रपति का नाम तो नहीं लिय मगर कहा कि शीर्ष अदालत के हालिया फैसले, जिनकी कुछ भाजपा नेताओं और उपराष्ट्रपति ने आलोचना की है, हमारे संवैधानिक मूल्यों के अनुरूप और राष्ट्रीय हित से प्रेरित हैं। संसद को कानून बनाने का पूर्ण अधिकार है मगर संविधान की व्याख्या करना और पूर्ण न्याय करना न्यायालय का दायित्व है। जहां तक निशिकांत दुबे का प्रश्न है भाजपा ने उनके बयानों से खुद को अलग कर लिया है लोकतंत्र के महत्वपूर्ण स्तंभ न्यायपालिका और विधायिका के बीच ऐसी परिस्थितियां निस्संदेह दुर्भाग्यपूर्ण हैं। मगर यह भी तय है कि किसी भी समृद्ध लोकतंत्र में जनहित से जुड़े कार्यों को लेकर समय-सीमा निर्धारित होनी चाहिए। तमिलनाडु के राज्यपाल के रवि के मामले को देखें तो तमिलनाडु राज्य सरकार द्वारा पारित अनेक विधेयक तो तीन साल से ज़्यादा की अवधि के बाद भी उनके कार्यालय में लंबित थे। और यह अकेला मामला नहीं है। विरोधी पक्ष की सरकारें वाले देश के कितने ही राज्यों में स्थितियां कमोबेश यही हैं। संवैधानिक रूप से राज्यपाल पद बेहद मर्यादित है और उस पर बिना किसी राजनैतिक दल या विचारधारा के प्रति पूर्वाग्रह के विशुद्ध रूप से राज्य सरकार की प्रशासनिक मदद का दायित्व है। टकराव की यह परिस्थितियां और राज्यपाल पद का राजनीतिक दुरुपयोग पहले भी होता रहा है और पूर्ववर्ती केंद्र सरकारों ने तो चुनी हुई राज्य सरकार गिराने तक में इसका प्रयोग किया है। जहां तक विधायिका का प्रश्न है, संसद की कार्यवाही कमोबेश हर सत्र में हंगामे और बहिष्कार का शिकार होती दिखती है। स्वस्थ बहस के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण यह संस्था अब सरकार और विरोध पक्ष के संघर्ष के लिए ज्यादा पहचानी जाती है। जनहित से जुड़े महत्वपूर्ण विधेयक सालों से लंबित पड़े हैं। सदस्यों के लंबित प्राईवेट विधेयकों की संख्या तो सैकड़ों पार कर रही है। यही हाल विधानसभाओं का है। महत्वपूर्ण विधेयक लंबित रहते हैं और जो स्वीकृत हो जाते हैं वे राजनीतिक रस्साकसी का शिकार होकर वर्षों राज्यपाल के स्तर पर धूल फांकते रहते हैं। विधानसभा सत्र के दौरान उठाए गए प्रश्न या समस्या पर मंत्री की घोषणा आश्वासन बन जाती है। सत्र में पूछे गए प्रश्न के उत्तर के आधार पर भी आश्वासन बन जाते हैं। ऐसा आश्वासन निभाना संवैधानिक बाध्यता न सही नैतिक आवश्यकता तो है। यह चुनाव मंच पर किया गया वादा नहीं अपितु सदन जैसे संवैधानिक मंदिर में दिया गया भरोसा है। मगर इसके प्रति आवश्यक गंभीरता का सर्वथा अभाव है। मध्यप्रदेश विधानसभा के परिप्रेक्ष्य में ही ऐसे ढाई हजार के लगभग लंबित आश्वासन बताते हैं कि विधानसभा में किसी जनोपयोगी आवाज उठ भी जाए तो उसकी सुनवाई जरूरी नहीं है। क्या ऐसे आश्वासनों की पूर्ति के लिए समय-सीमा निर्धारित किया जाना आवश्यक नहीं है ? यह लेट लतीफी सिर्फ संसद और विधानसभाओं की कार्यवाही तक ही सीमित नहीं है। निर्वाचित सरकारें जन सामान्य के हितों और शिकायतों से संबंधित कार्यों के समय-सीमा निर्धारित कर ही अपना दायित्व पूरा समझ लेती हैं। प्रदेश को ही लें, आम जनता की शिकायतों के त्वरित निराकरण के लिए बनाई गई सीएम हेल्पलाइन में पिछले अक्टूबर की स्थिति में 7 लाख से अधिक शिकायतें पेंडिंग थीं, जिनमें से 3 लाख से अधिक 100 दिनों की समय सीमा पार कर चुकी थीं। इनमें पीएम आवास योजना (ग्रामीण) में राशि न मिलने, पीएम मातृ वंदन योजना, श्रमिक प्रसूति सहायता और जननी सुरक्षा, पुलिस विवेचना में लापरवाही और कोर्ट में केस पेंडेंसी और संबल योजना का लाभ न मिलने जैसी महत्वपूर्ण सुविधाओं से संबंधित शिकायतें शामिल थीं। तथाकथित निराकृत प्रकरणों में भी शिकायतें येन-केन प्रकारेण निपटाए जाने जैसे मामले ही ज्यादा थे। सरकारों को समझना चाहिए कि उनका दायित्व सिर्फ जनोपयोगी योजनाएं बनाने तक ही सीमित नहीं है। अफसरशाही इन लाभों को जन-सामान्य तक पहुंचाने का जरिया है और अगर यह व्यवस्था ठीक काम नहीं करती और लाभ निर्दिष्ट व्यक्ति तक नहीं पहुंचता है तो सारा का सारा तामझाम व्यर्थ है। हर कार्य के लिए न सिर्फ समय-सीमा निर्धारित होना चाहिए बल्कि उसका पालन हो रहा है या नहीं इसके लिए भी एक पारदर्शी व्यवस्था निर्धारित होना चाहिए। यह समझ जितनी जल्दी आ जाए उतना ही अच्छा होगा। और अगर विधायिका ऐसा नहीं कर पाती है और न्यायालय हस्तक्षेप करता है तो फिर इसे सीमा का उल्लंघन कहना कदापि उचित नहीं होंगा।दूसरी तरफ न्यायालयों को भी इस बात पर विचार करना होगा कि अदालतों में लंबित मामलों की भी एक सीमा तय की जाय देखना होगा किस मसले पर विवाद कैसे हल हो सकेगा ।

आतंकवाद के विरुद्ध प्रतिशोध एवं शौर्य का प्रतीक है आप्रेशन सिन्दूर

- योगेश कुमार गोयल

- आतंक के गढ़ में भारत का निर्णायक प्रहार

भारत ने 22 अप्रैल को पहलगाम में हुए आतंकी हमले का जवाब 15 दिन बाद 'ऑपरेशन सिंदूर' के माध्यम से देकर एक बार फिर यह जता दिया है कि अब वह न तो चुप रहेगा और न ही आतंकी हमलों को बर्दाश्त करेगा। इस हमले में भारत के 26 निर्दोष लोगों की जान गई थी और यह हमला स्पष्ट रूप से पाकिस्तान के आतंकी ठिकानों से ही संचालित किया गया था। इसके सटीक जवाब में भारत ने 7 मई सुबह डेढ़ बजे पाकिस्तान और पाक अधिकृत कश्मीर (पीओके) में आतंकियों के 9 ठिकानों को ध्वस्त करते हुए 'ऑपरेशन सिंदूर' को अंजाम दिया। भारत की यह एक सुनियोजित, सीमित और सटीक सैन्य कार्रवाई थी, जिसका उद्देश्य स्पष्ट था, आतंकवाद को उसी की जमीन पर कुचलना। इस ऑपरेशन को 'सिंदूर' नाम देना भारत की सांस्कृतिक और भावनात्मक सोच को दर्शाता है। 'सिंदूर' एक ओर जहां भारतीय संस्कृति में शक्ति, सौभाग्य और सम्मान का प्रतीक है, वहीं इस संदर्भ में यह उन शहीदों के बलिदान की लालिमा भी है, जिनकी शहादत का बदला लेने के लिए यह कार्रवाई की गई।

ऑपरेशन सिंदूर के जरिये भारत ने स्पष्ट कर दिया है कि यह ऑपरेशन केवल उन आतंकी ढ़ांचों के विरुद्ध था, जो लगातार भारत में घुसपैठ, आत्मघाती हमले और हथियारों की तस्करी को बढ़ावा दे रहे थे। बहावलपुर जैश-ए-मोहम्मद का गढ़ है, वहीं मुजफ्फराबाद और कोटली लश्कर-ए-तैयबा और हिजबुल मुजाहिदीन जैसे संगठनों के लिए लांच पैड के रूप में काम आते हैं। इन स्थानों पर हुए हमलों के माध्यम से भारत ने उन आतंकी गुटों की कमर तोड़ने की कोशिश की है, जो वर्षों से भारत को अस्थिर करने की कोशिश में लगे हुए थे। इस ऑपरेशनके जरिये भारत ने अपने नागरिकों को यह भरोसा भी दिलाया है कि देश की सुरक्षा महज कागजों तक सीमित नहीं है बल्कि उसे धरातल पर भी लागू किया जा रहा है। ऑपरेशन सिंदूर यह विश्वास पैदा करता है कि अब भारत किसी भी आतंकी हरकत का जवाब उसी भाषा में देगा और अपने सैनिकों और नागरिकों की शहादत व्यर्थ नहीं जाने देगा। यह संदेश केवल पाकिस्तान के लिए ही नहीं बल्कि उन ताकतों के लिए भी है, जो सीमा पार से भारत के खिलाफ जंग छेड़े हुए हैं। भारतीय वायुसेना ने इस ऑपरेशन के तहत अत्याधुनिक मिसाइलों का इस्तेमाल करते हुए बहावलपुर, मुजफ्फराबाद, कोटली, मुरीदके, बाघ और पाकिस्तान के पंजाब प्रांत की कुछ

आतंक-प्रवण लोकेशनों पर हमलाकर पूरी दुनिया को यह दिखा दिया है कि आतंकवाद से निपटने के लिए उसे अब किसी की अनुमति की आवश्यकता नहीं है और वह अपने नागरिकों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए हरसंभव कदम उठाने को तैयार है। इस ऑपरेशन की योजना और क्रियान्वयन अत्यंत गोपनीय और तकनीकी रूप से उन्नत स्तर पर हुई। भारतीय खुफिया एजेंसियों ने 22 अप्रैल के हमले के बाद जिस तेजी से पाकिस्तान के आतंकी ठिकानों की पहचान की और सेना के साथ समन्वय किया, वह भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा रणनीति की परिपक्वता का प्रमाण है। रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी बयान में स्पष्ट किया गया है कि इस कार्रवाई का उद्देश्य केवल आतंकवाद के अड्डों को निशाना बनाना था, न कि पाकिस्तानी सैन्य ठिकानों या नागरिक आबादी को। इस ऑपरेशन के दौरान भारत ने कुल 24 मिसाइलें दागी, जिनमें से अधिकांश लश्कर-ए-तैयबा और जैश-ए-मोहम्मद जैसे आतंकी संगठनों के ठिकानों पर सटीकता से गिरी।

बताया जा रहा है कि इन हमलों में कई आतंकियों के मारे जाने की खबर है, जिनमें लश्कर और जैश के कई शीर्ष कमांडर भी शामिल हैं, जो भारत में आतंकी हमलों की योजना बनाते रहे हैं। पाकिस्तान का स्थानीय मीडिया और प्रशासन पहले इस हमले को नकारते रहे, फिर अलग-अलग बयान देकर भ्रम फैलाने की कोशिश की। पाकिस्तानी सेना के आईएसपीआर प्रमुख लेफ्टिनेंट जनरल अहमद शरीफ चौधरी ने दावा किया कि भारत ने 6 अलग-अलग स्थानों पर मिसाइलें दागी, जिनमें 8 नागरिकों की मौत हुई। वहीं दूसरी ओर, पाकिस्तान के रक्षा मंत्री ख्वाजा आसिफ ने जियो टीवी पर दावा किया कि भारत ने अपने ही हवाई क्षेत्र से हमला किया और मिसाइलें रिहायशी इलाकों पर गिरी। पाकिस्तान के दावे आपस में ही विरोधाभासी हैं, जो इस बात का स्पष्ट संकेत है कि वे न तो इस हमले के लिए तैयार थे और न ही उनके पास इसकी ठोस जानकारी है। वहीं, भारत ने इस ऑपरेशन के तुरंत बाद अमेरिका को इस कार्रवाई की जानकारी दी। राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल ने अमेरिकी एनएसए और विदेश मंत्री मार्को रुबियो से बात कर उन्हें स्पष्ट रूप से बताया कि यह कार्रवाई पूरी तरह आतंकवाद के खिलाफ थी, न कि पाकिस्तान की संप्रभुता के विरुद्ध। भारतीय दूतावास ने अमेरिका में बयान जारी कर बताया कि भारत ने किसी भी पाकिस्तानी नागरिक, सैन्य या आर्थिक ठिकानों को निशाना नहीं बनाया, केवल उन्हीं आतंकी शिविरों पर हमला किया गया, जो भारत के खिलाफ साजिश रच रहे थे। इस ऑपरेशन के पूरे समय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी इसकी निगरानी कर रहे थे। उन्होंने सेना को पूर्ण स्वतंत्रता दी थी और इस ऑपरेशन की बारीकियों पर लगातार नजर बनाए रखी। ऑपरेशन पूरा होने के बाद भारतीय सेना ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म 'एक्स' पर 'जस्टिस इज सर्व्ड' यानी 'न्याय हो गया' लिखा जबकि रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने 'भारत माता की जय' के नारे के साथ इस कार्रवाई को राष्ट्र के प्रति समर्पित किया। इस ऑपरेशन के बाद भारत और पाकिस्तान के बीच तनाव और बढ़ना स्वाभाविक था। पाकिस्तान की ओर से फायरिंग और जवाबी बयानबाजी जारी रही। पाकिस्तान के मीडिया ने प्रोपेगेंडा फैलाने के लिए भारत के 6 फाइटर जेट मार गिराए हैं, जिसमें 3 राफेल, 2 मिग-29 और 1 सुखोई शामिल हैं, साथ ही भारतीय सेना की 12वीं इन्फैंट्री ब्रिगेड के मुख्यालय को नष्ट करने का झूठा दावा भी किया गया। हालांकि भारत द्वारा इन बेबुनियाद झूठे दावों को सिरे से खारिज कर दिया गया है।

भारत का अगला कदम अब इस कार्रवाई को कूटनीतिक और रणनीतिक स्तर पर वैश्विक समर्थन में बदलना होगा। ऑपरेशन सिंदूर के बाद अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर भारत आतंकवाद के खिलाफ अपने दृष्टिकोण को और मजबूत तरीके से प्रस्तुत करेगा। अमेरिका, फ्रांस, रूस और इजरायल जैसे देश पहले ही भारत के साथ खड़े नजर आ रहे हैं परंतु संयुक्त राष्ट्र और इस्लामी देशों के संगठन (आईओसी) में पाकिस्तान अपने झूठे प्रचार को हवा देने की कोशिश अवश्य करेगा, इसलिए भारत को अब इस कूटनीतिक लड़ाई में भी स्पष्टता और तथ्यों के साथ आगे बढ़ना होगा। बहरहाल, ऑपरेशन सिंदूर भारत की सैन्य और कूटनीतिक परिपक्वता का प्रतीक है। भारत अब संयम और जवाबदेही के साथ अपनी रक्षा नीति पर अमल कर रहा है। 'सिंदूर' का रंग भले ही सांस्कृतिक दृष्टि से सौभाग्य और शक्ति का प्रतीक हो परंतु इस सैन्य कार्रवाई में यह रंग आतंकवाद के विरुद्ध प्रतिशोध और शौर्य का प्रतीक बन गया है।

आप्रेशन सिन्दूरः आखिर दुश्मन को धर्म तो बताना पड़ेगा

- मुस्ताअली बोहरा

22 अप्रैल 2025 को जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुआ हमला साजिशन और नियोजित था। धर्म पूछकर 26 निर्दोष लोगों को आतंकियों ने गोली मार दी। इस तरह के हमले से जाहिर हो गया कि पाकिस्तान ना सिर्फ आतंकवाद को पोषित कर रहा है बल्कि अब सामाजिक उन्माद बिगड़ना चाहता और भारतीय समाज में नफरत फैलाना चाहता था। इस हमले के बाद देश के कुछेक हिस्सों में वो ही हुआ जो पाकिस्तान और आतंकी चाहते थे। यानि, कुछेक जगहों पर सामाजिक सदभाव बिगड़ता दिखा, कुछेक जगह उपद्रव भी हुए और मुसलमानों को निशाने पर लेकर पहलगाम का बदला लेने की कोशिशें हुईं। हालांकि, पूरे देश में साम्प्रदायिक उन्माद भड़काने की आतंकी साजिश नाकाम हो गई। जल्द ही लोगों को समझ आ गया कि पाकिस्तान भी तो यही चाहता था कि भारत में हिंदू-मुसलमान आपस में उलझ जाएं। लिहाजा, भारतीयों ने एकजुटता और संयम दिखाया। पहलगाम की घटना को लेकर मुसलमानों में भी उतना ही गम और गुस्सा दिखा जितना गैर मुसलमानों में। पाकिस्तान के खिलाफ नारेबाजी करते हुए

मुसलमानों ने केन्द्र सरकार से अपील की कि वो आतंकियों को सबक सिखाए। मुस्लिम संगठनों और कई मुस्लिम धर्मगुरूओं ने साफ तौर पर कहा कि इस्लाम में इस तरह से निर्दोष लोगों को मारने या जिहाद करने की कोई जगह नहीं है। विपक्ष ने भी मोदी सरकार के आतंक के खिलाफ उठाए जाने वाले हर फैसले को समर्थन देने की बात कही। इसके बाद जो हुआ वो इतिहास बन गया। पूरी दुनिया ने देख लिया कि जिस तरह से निर्दोष पुरूषों की जान ली गई उनकी विधवाओं को न्याय भी दो महिलाओं ने दिलाया पाक के आतंकी ठिकानों पर बम बरसाकर। इस ऑपरेशन को नाम दिया गया ऑपरेशन सिंदूर। भारतीय परंपरा में सिंदूर को शक्ति, सम्मान और संरक्षण का प्रतीक माना जाता है। भारतीय थल सेना, वायुसेना और नौसेना की संयुक्त रणनीति ने 6 मई 2025 रात्रि को पाकिस्तान के भीतर 9 प्रमुख आतंकवादी ठिकानों पर जोरदार हमला कर दिया। यह हमले न केवल लाइन ऑफ कंट्रोल के पास स्थित आतंकी लॉन्च पैड्स पर किए गए, बल्कि पाकिस्तान के भीतरी हिस्सों में भी उन ठिकानों को टारगेट किया गया जो लंबे समय से आतंक की फैक्टरी बने हुए थे। ऑपरेशन सिंदूर के तहत बहावलपुर-जैश-ए-मोहम्मद का मुख्यालय, मुरीदके लश्कर-ए-तैयबा का आधार स्थल, जो 2008 मुंबई हमले से जुड़ा रहा है। गुलपुर-नियंत्रण रेखा के पास स्थित वह अड्डा, जहां से 2023-24 के हमलों की योजना बनी। सावाई- जहां से तीर्थयात्रियों पर हमलों की साजिश रची गई। बिलाल-जैश का प्रमुख लॉन्चपैड। कोटली- हिजबुल मुजाहिदीन की उपस्थिति वाला अड्डा। बरनाला, सरजाला और महसुन्ता- आतंकी ट्रेनिंग और लॉन्चिंग सेंटर। मिसाइलों और ड्रोन हमलों के जरिए इन ठिकानों को ध्वस्त किया गया। भारत ने पाकिस्तान के किसी भी सैन्य ठिकाने या आम नागरिकों के रहवासी क्षेत्रों को निशाना नहीं बनाया। खास बात यह रही कि इस पूरे ऑपरेशन में भारतीय पक्ष को कोई नुकसान नहीं हुआ, और सभी सैनिक सुरक्षित वापस लौटे।

ऑपरेशन सिंदूर पर जो प्रेस ब्रीफिंग की गई, उसके जरिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने एक साथ कई संदेश दे दिए। उन्होंने पूरी दुनिया को ये मैसेज दे दिया कि देश में धर्म के आधार पर कोई भेदभाव नहीं है। जो लोग पीएम मोदी को मुसलमान विरोधी मानते थे शायद उन लोगों को मैसेज देने के लिए ही महिला कर्नल सोफिया कुरैशी के जरिए सेना की कार्रवाई की जानकारी दी गई। सोफिया कुरैशी के साथ ही विंग कमांडर व्योमिका सिंह भी शामिल थीं। सशस्त्र सेना की दो महिला अधिकारियों के जरिए ऑपरेशन सिंदूर को अंजाम देने और फिर उसकी जानकारी इन्हीं दोनों महिलाओं के जरिए देकर ये संदेश देने की भी कोशिश की गई कि भारतीय सेना किस तरह मजबूत और आत्मनिर्भर है। पाकिस्तान को भी नसीहत मिल गई कि भारत में सिर्फ पुरूष ही नहीं महिलाएं भी मुंह तोड़ जवाब देने की ताकत रखतीं हैं। बहरहाल, मोदी की राजनीति और कूटनीति का कोई सानी है ये ऑपरेशन सिंदूर से साबित हो गया। लगातार हाई लेवल की मीटिंग कर और सीमावर्ती एरियों में सैन्य गतिविधियों के साथ अलर्ट के जरिए मोदी ने ये भनक भी नहीं लगने दी कि हमला कब, कहां और कैसे होगा। इसके अलावा दो महिला सैन्य अधिकारियों को कार्रवाई की लीड करके बदला ले लिया। इतना ही नहीं एक महिला सैन्य अफसर के जरिए प्रेस ब्रीफिंग करवाकर ये मैसेज दे दिया कि तुम धर्म पूछकर मारोगे तो हम धर्म बताकर बदला लेंगे। अब हिम्मत हो तो पूछो धम.....। ऑपरेशन सिंदूर का श्रेय मोदी चाहते तो खुद ले सकते थे लेकिन उन्होंने ऐसा ना करके महिला सैन्य अफसरों को आगे कर दिया। खैर, ऑपरेशन सिंदूर के जरिए जिस तरह से पहलगाम का बदला लिया गया उसने हर हिन्दुतानी का सीना गर्व से चैड़ा कर दिया है लेकिन अभी आतंकवाद पूरी तरह से खत्म नहीं हुआ है। रहा सवाल, मोदीजी और उनकी सरकार के राजनीतिक फायदे का तो सोफिया कुरैशी और व्योमिका सिंह के जरिए महिलाओं और मुसलमानों का दिल और विश्वास जीतने में वे कामयाब हो गए फिलहाल ऐसा माना जा सकता है। इसके अलावा और भी कितने राजनीतिक लाभ होंगे ये तो सभी जानते हैं।

ढाई सौ साल बाद भागलपुर जिला ने मनाया स्थापना दिवस

- शिव शंकर सिंह पारिजात

यह भी एक विशेष बात है कि बिहार का एक पुराना जिला भागलपुर 252 वर्षों के बाद राजकीय और विधिवत ढंग से अपनी स्थापना का दिवस मनाया। किसी भी जिले के लिये उसकी स्थापना की तिथि का एक खास महत्व होता है, क्योंकि उस दिन से उसकी एक अलग और स्वतंत्र पहचान बनती है। प्रत्येक वर्ष अपने स्थापना दिवस का समारोह मनाकर वो जिला अपने ऐतिहासिक-सांस्कृतिक धरोहरों व स्मारकों को याद कर सामाजिक-आर्थिक विकास के नये आयाम गढ़ने का संकल्प लेता है। यह भी एक विडम्बना रही है कि ब्रिटिश भारत में भागलपुर बिहार का सबसे पुराना जिला होने के बावजूद स्थापना की तिथि स्पष्ट नहीं होने के कारण पिछले ढाई सौ वर्षों तक अपना स्थापना समारोह नहीं मना सका। अंतत: काफी शोध, अध्ययन और जिला प्रशासन के उपक्रमों के पश्चात् इस साल 4 मई को भागलपुर अपना पहला राजकीय स्थापना दिवस समारोह पूरे धूमधाम व भव्यता के साथ मनाया। इस अवसर पर पूरी भव्यता के साथ स्थानीय टाउन हॉल में समारोह का आयोजन किया गया तथा कलेक्ट्रियट भवन के नगर के चौक-चौराहों व स्मारकों को रंगीन लाईट से सज्जित किया गया। इसके अलावा प्रमुख संस्थान गांधी शांति प्रतिष्ठान, नगर विकास परिषद व अन्य संस्थाओं ने भी इस अवसर पर समारोह आयोजित किये। भागलपुर वासियों को यह मलाल रहा कि ब्रिटिश काल में संताल परगना से लेकर बंगाल तक के क्षेत्रफल तक फैले भागलपुर, जो उस समय जंगल तराई कहलाता था, से निकले मुंगेर, मधेपुरा, सुपौल, बेगूसराय, जमुई सहित झारखंड के दुमका, देवघर, गोड्डा आदि जिले तो अपने स्थापना दिवस समारोह मना रहे थे पर भागलपुर इससे मरहूम रहा। इस दौरान जिले के विभिन्न राजनैतिक-सामाजिक संगठनों तथा प्रबुद्ध नागरिकों व बुद्धिजीवियों के द्वारा लंबे समय तक जिला स्थापना दिवस समारोह आयोजित करने की मांग की जाती रही जिसके मद्देनजर तत्कालीन जिलाधिकारी प्रणव कुमार ने जिला स्थापना तिथि निर्धारण हेतु अपर समाहर्ता की अध्यक्षता में 6 दिसंबर, 2018 को एक चार-सदस्यीय समिति का गठन किया जिसमें तिलकामांझी भागलपुर विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग के प्राध्यापक प्रो. (डॉ.) रमन सिन्हा भी शामिल किये गये थे। इतिहासकार डॉ. सिन्हा ने कोलकाता स्थित बंगाल राज्य अभिलेखागार के दस्तावेजों, कोलकाता के नेशनल लाइब्रेरी के ग्रंथों, कैलेंडर ऑफ पर्सियन करसपोंडेंट्स, ब्रिटिश सरकार के प्रशासनिक केंद्र फोर्ट विलियम, कोलकाता के इंडिया हाउस करसपोंडेंट्स आदि का अध्ययन करने के पश्चात् अपने शोध निष्कर्षों के आधार पर यह दावा किया कि 4 मई, 1773 को मि. जेम्स बर्टन ने भागलपुर के पहले कलक्टर के रूप में योगदान किया था जिससे स्पष्ट होता है कि भागलपुर जिले की स्थापना 4 मई, 1773 को हुई थी। 1765 में मुगल बादशाह शाह आलम से ईस्ट इंडिया कंपनी को बिहार, बंगाल और उड़ीसा की दीवानी (जमींदारी) मिली, किंतु एक नीति के तहत अंग्रेजों ने मुगलकालीन व्यवस्था में तत्काल दखलंदाजी न करते हुए मुगल कालीन व्यवस्था कायम रखते हुए राजस्व मामलों के लिये 1769 में राजमहल-भागलपुर (पुराना भागलपुर) के लिये विलियम हारउड को सुपरवाइजर नियुक्त किया। इसके बाद कंपनी सरकार द्वारा गठित पांच-सदस्यीय कमिटी की सिफारिश पर 18 फरवरी, 1773 को राजमहल-भागलपुर अर्थात ग्रेटर भागलपुर जिले का निर्माण किया गया। पर इसका प्रभार कलक्टर की बजाय पूर्व से कार्यरत सुपरवाइजर मि.हारउड के हाथों में ही रहा। इसके उपरांत कंपनी सरकार ने राजस्व संग्रह अधिकार के साथ कलक्टर नियुक्त करने का निर्णय लिया जिसके फलस्वरूप मि. जेम्स बर्टन ने 4 मई, 1773 को राजमहल-भागलपुर अर्थात ग्रेटर भागलपुर के पहले कलक्टर के रूप में सुपरवाइजर मि. हारउड से प्रभार लेकर पदभार ग्रहण किया।

जिला स्थापना तिथि निर्धारण हेतु अपर समाहर्ता की अध्यक्षता में गठित समिति ने पूर्ण विचार कर डॉ. सिन्हा के द्वारा प्रस्तुत तिथि पर सहमति प्रदान की जिसपर सहमत होकर जिलाधिकारी ने राज्य सरकार से मार्गदर्शन मांगा।

तत्पश्चात् राज्य के सामान्य प्रशासन विभाग के प्रधान सचिव द्वारा 2023 में जिला स्थापना की इस तिथि अर्थात् 4 मई को अनुमोदित किया गया।

प्रत्येक नागरिक को भारतीय सेना और अपने वीर जवानो पर गर्व : रजनीश शामगढ़

तरावड़ी, 9 मई (छाया शर्मा) : भाजपा युवा मोर्चा के जिला महामंत्री रजनीश शामगढ़ ने कहा कि हमारा देश प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के हाथों में सुरक्षित है। किसी भी देशवासी को घबराने की जरूरत नहीं है। उन्होंने कहा कि हमें विषम परिस्थिति में घबराना नहीं है, बल्कि संयम एवं साहस का परिचय देना है। उन्होंने बताया कि करवाई जा रही मॉक ड्रिल के माध्यम से यह भी देखा गया है कि ऐसी परिस्थितियों में हमें कैसे सूचना तंत्र एवं प्रबंधन को मजबूत बनाना है। मॉक ड्रिल एवं ब्लैक आउट ड्रिल में प्रत्येक नागरिक ने अपना सहयोग देना है। भाजपा युवा मोर्चा के जिला महामंत्री रजनीश शामगढ़ पत्रकारो से बातचीत कर रहे थे। उन्होंने सभी

लोगों से आपात स्थिति के दौरान बरती जाने वाली सावधानियों का पालन करने की अपील की है। रजनीश शामगढ़ ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारतीय सेना ने ऑपरेशन सिंदूर के तहत अपना पराक्रम दिखाया है और आतंकियों व उनके ठिकानों को ध्वस्त करके एक सराहनीय कार्य किया है। अब भारत ने दुनिया को दिखा दिया है कि भारतीय सेना कितनी मजबूत है और वह हर स्थिति में अपना दमखम बेहतरीन तरीके से दिखाने में सक्षम है। पहलगाम में आतंकवादियों द्वारा जो नुकसान भारत देश को पहुंचाया है, उसका बदला ले लिया है। उन्होंने कहा कि पहलगाम में हमारी बेटियों की मांग के सिंदूर को उजाड़ने वाले आतंकी हमले के जवाब में इस ऑपरेशन का नाम ऑपरेशन सिंदूर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा रखा गया है। हमें भारतीय सेना और अपने वीर जवानो पर गर्व है। आतंकवाद के खिलाफ इस लड़ाई में प्रत्येक देशवासी भारतीय सेना के साथ खड़ा है।

जिला प्रशासन द्वारा आपातकालीन प्रबंधन को लेकर महत्वपूर्ण निर्देश जारी

हिसार, 9 मई (मनमोहन शर्मा) : उपायुक्त अनीश यादव ने कहा कि जिले में आपातकालीन स्थितियों से निपटने के लिए संबंधित विभागों के कर्मचारियों की कभी भी आवश्यकता पड़ सकती है। इसलिए कार्यालयों में ड्यूटी समय के उपरांत भी शिफ्ट के अनुसार कर्मचारियों की उपलब्धता को सुनिश्चित किया जाए। उन्होंने कहा कि प्रत्येक विभाग एक व्यवस्थित ड्यूटी रोस्टर तैयार करना सुनिश्चित करें ताकि किसी भी समय तत्काल कार्रवाई की जा सके। उपायुक्त ने लघु सचिवालय में एक वॉर रूम स्थापित करने के भी निर्देश दिए, जिससे सभी गतिविधियों की निगरानी की जाएगी और तेजी से निर्णय लिए जा सकेंगे। सभी संबंधित विभागों के अधिकारियों, सिविल एविएशन, आर्मी व प्रशासनिक इकाइयों को जोड़ते हुए एक विशेष व्हाट्सएप ग्रुप बनाया गया है, जिसमें सभी महत्वपूर्ण सूचनाओं की रियल टाइम अपडेट साझा की जाएगी।

उपायुक्त अनीश यादव ने स्पष्ट किया कि जिले में अब सामान्यत: कोई सायरन नहीं बजाया जाएगा, बल्कि केवल एयर वार्निंग की स्थिति में ही सायरन का प्रयोग किया जाएगा ताकि नागरिकों में भ्रम की स्थिति न बने।

नगर निगम, लोक निर्माण विभाग, राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण और एचएसवीपी सहित अन्य संबंधित विभागों के अधिकारियों को आदेश मिलते ही स्ट्रीट लाइट्स बंद करने के लिए सतर्क रहने के निर्देश दिए

गए हैं। वहीं बिजली विभाग को निर्देशित किया गया है कि प्रशासन के आदेश मिलते ही वो बिजली ग्रिड को बंद करने की प्रक्रिया के लिए पूरी तरह तैयार रहें, जिससे ब्लैकआउट प्रभावी ढंग से लागू किया जा सके। नगर निगम, आपदा प्रबंधन दल, पंचायत विभाग तथा अन्य संबंधित विभागों की टीमों को निर्देशित किया गया है कि वे मुनादी के माध्यम से आमजन को जागरूक करें और उन्हें आवश्यक दिशा-निर्देशों की जानकारी समय रहते दें।

उपायुक्त ने जनता से अपील की है कि वे प्रशासन के साथ पूर्ण सहयोग करें और रात के समय आउटडोर लाइटिंग बंद कर ब्लैकआउट को प्रभावी बनाने में मदद करें। उक्त व्यवस्थाएं एहतिहात के तौर पर की जा रहीं हैं। इसलिए आमजन को घबराने की कोई आवश्यकता नहीं है।

सभी से अनुरोध किया गया है कि प्रशासन द्वारा जारी अधिकारिक सूचनाओं व निर्देशों का पालन करें। उपायुक्त ने जिले के सभी स्कूल संचालकों को भी हिदायत जारी की है कि वे आगामी दो दिनों तक स्कूलों को पूर्णत: बंद रखेंगे।

इस उच्चस्तरीय बैठक में पुलिस अधीक्षक शशांक कुमार सावन, अतिरिक्त उपायुक्त सी. जयाश्रद्धा, हिसार एसडीएम ज्योति मित्तल सहित विभिन्न विभागों के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहे। उपायुक्त ने सभी अधिकारियों को निर्देश दिए कि वे पूरी तत्परता, संयम और समन्वय के साथ कार्य करें ताकि किसी भी आपातकालीन स्थिति से प्रभावी ढंग से निपटा जा सके।

17 वर्षीय नाबालिग से दुष्कर्म करने के मामने में आरोपी गिरफ्तार

यमुनानगर, 9 मई (दिनेश कुमार) : पुलिस प्रवक्ता ने जानकारी देते हुए बताया कि पुलिस अधीक्षक सुरेंद्र सिंह भौरिया के मार्गदर्शन में कार्य करते हुए पुलिस चौकी बुढ़िया गेट की टीम ने 17 वर्षीय नाबालिग से दुष्कर्म कर गर्भवती करने के मामले में एक आरोपी को गिरफ्तार करने में सफलता हासिल की है। आरोपी को कोर्ट में पेश कर न्यायिक हिरासत में भेजा गया। चौकी इंचार्ज गुरदयाल सिंह ने जानकारी देते हुए बताया कि थाना शहर जगाधरी क्षेत्र की एक महिला ने शिकायत दर्ज करवाई की उसकी लडकी की उम्र 17 साल 10 महिने है। उसकी लड़की ने उसे बताया कि वह उसके साथ पढ़ने वाले प्रहलाद उर्फ राज वर्मा वासी मनोहर कालोनी जगाधरी से शादी करना चाहती है। जिनकी शादी के लिए हम दोनों परिवार सहमत हो गए।

दिनांक 6 मई कों मेरी लडकी ने मुझे कहा कि मेरे पेट में काफी दर्द हो रहा है। जिस पर मेरी लडकी अकेले ही सरकारी हस्पताल दवाई लेने चली गई। फिर मुझे सरकारी हस्पताल से सुचना मिली कि आपकी लड़की की तबीयत खराब है आप हस्पताल पहुँचो। जिस पर जब वह हस्पताल पहुँची तो मुझे डाक्टरों से पता चला कि मेरी लडकी 7 माह की गर्भवती है तो उसकी लडकी ने बताया कि राज वर्मा ने करीब 7 महिने पहले मेरे साथ मनोहर कालोनी में मेरी सहमति के बिना गलत काम किया था। जिससे मेरी लडकी 7 माह की गर्भवती हों गई है। किसी शिकायत पर विभिन्न धाराओं के तहत मुकदमा दर्ज किया गया। आरोपी को गिरफ्तार करने के लिए टीम का गठन किया गया। टीम ने तुरंत कार्रवाई करते हुए आरोपी प्रहलाद उर्फ राज वर्मा को गिरफ्तार कर लिया। आरोपी को कोर्ट में पेश कर न्यायिक हिरासत में भेजा गया।

सामूहिक प्रयास से 4 साल बाद परिजनों को मिला मानसिक दिव्यांग बच्चा : वाणी गोपाल शर्मा

सोनीपत, 9 मई (विनोद) : जिला सत्र न्यायाधीश वाणी गोपाल शर्मा ने बताया कि जिला विधिक सेवाएं प्राधिकरण व जिला बाल संरक्षण विभाग के सामूहिक प्रयास से कारोना काल में मानसिक रूप से दिव्यांग किशोर गुम हो गया था। कोरोना काल में जब सब अपने स्थाई निवास पर जा रहे थे। उस समय एक मानसिक दिव्यांग किशोर अंकित अपने परिजनों से बिछड़ गया था। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के सचिव प्रचेता सिंह

के निर्देशन में दिव्यांग सेवा समिति गोहाना में मानसिक रूप से विकलांग लगभग 12 बच्चे रह रहे हैं। उनके आर्थिक सहयोग के लिए पेंशन बनवाने के लिए जब जिला बाल संरक्षण अधिकारी डॉ रितु गिल ने बच्चों का आधार कार्ड बनवाने के लिए आधार केंद्र पर बच्चों को लाया गया तो अंकित नाम का मानसिक दिव्यांग किशोर जिसका 2021 में आधार कार्ड बना हुआ था आधार कार्ड में दिए गए पते व दूरभाष नंबर से अंकित के परिजनों से संपर्क किया गया । इस बारे में परिजनों ने बताया कि बच्चा 2021 में करोना के दौरान जब हम अपने स्थाई निवास उत्तर प्रदेश जा रहे थे ।तो किशोर गुम हो गया था। क्योंकि किशोर मानसिक रूप से दिव्यांग था। एक समाजसेवी को किशोर मिल गया था, समाजसेवी ने बच्चें को गोहाना दिव्यंग सेवा समिति आश्रम में छोड़ दिया था। अब बच्चे का आधार कार्ड बनवाते समय फिंगरप्रिंट स्कैन के माध्यम से बच्चे का पता व परिजनों का दूरभाष नंबर पता चला जिन से संपर्क कर बच्चे को सुपर्द कर दिया है। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण सचिव एवं जिला बाल संरक्षण अधिकारी के आपसी सहयोग से बच्चा अपने परिजनों से मिला, इससे परिजन बहुत खुश थे। परिजनों ने अधिकारियों व विभागों के सामूहिक प्रयास के लिए धन्यवाद किया।

डीएवी पब्लिक स्कूल में धूमधाम से मनाया मदर्स-डे

असंध, 9 मई (दलसिह मान) : डीएवी पब्लिक स्कूल मदर्स डे बहुत उत्साह व धूमधाम से मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ स्कूल के प्रधानाचार्य सुखपाल सिंह मान ने दीप प्रज्जवलित करके किया। इस कार्यक्रम में अभिभावकों को भी आमंत्रित किया गया। कार्यक्रम में बच्चों तथा अभिभावकों ने विभिन्न सांस्कृतिक गतिविधियों तथा प्रतियोगिताओं में भाग लेकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाने का काम किया। अभिभावकों द्वारा डांस, भजन, कविता आदि का प्रस्तुतिकरण किया गया जिसने कार्यक्रम में चार चांद लगाने का काम किया। बच्चों नें सांस्कृतिक गतिविधियों, कविता, भाषण, पेंटिंग आदि के माध्यम से मां की महत्वता तथा ममता का गुणगान किया। इस मौके पर प्रधानाचार्य सुखपाल सिंह मान ने बताया कि मदर्स डे माँ के प्रति कृतज्ञता और सम्मान व्यक्त करने, मातृत्व का उत्सव मनाने और उनके अथाह त्याग और निस्वार्थ प्रेम को याद करने का अवसर होता है। उन्होंने कहा कि माँ ईश्वर का स्वरूप है तथा माँ का दर्जा ईश्वर से भी ऊपर है। माँ की सेवा करना तथा उनको खुश रखना हमारा परम धर्म है। प्रधानाचार्य ने स्कूल की गतिविधि इंचार्ज रुही वर्मा तथा सभी अध्यापकों को इस कार्यक्रम की रूपरेखा तैयार करने तथा अनुशासन के साथ सफल संचालन करने पर बधाई दी। उन्होंने सभी अभिभावकों का कार्यक्रम मे उपस्थित होने तथा गतिविधियों में भाग लेने के लिए आभार व्यक्त किया। सभी विद्यार्थियों को शुभकामनाएं प्रदान करते हुए कार्यक्रम का समापन किया गया।

महाराणा प्रताप जयंती पर राजपूत सभा के प्रधान का ऐलान, तन मन और धन से सेना और सरकार के साथ

करनाल, 9 मई (संदीप रोहिला) : राजपूत सभा करनाल की ओर से महाराणा प्रताप चौक पर स्थित वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप जी की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित कर उन्हें नमन किया गया। हर वर्ष की तरह महाराणा प्रताप जी की जयंती धूमधाम के साथ मनाई गई। महाराणा प्रताप चौक पर हवन यज्ञ कर प्रसाद वितरित किया गया। महाराणा प्रताप जी का चौक फूलों से सजाया गया था ।राजपूत सभा करनाल के प्रधान डॉक्टर नरेंद्र प्रताप सिंह, महासचिव एडवोकेट बृजपाल राणा सहित उपस्थित सभी पदाधिकारियों ने सभी देशवासियों को महाराणा जी की जयंती की शुभकामनाएं दी। प्रधान डॉक्टर नरेंद्र प्रताप सिंह महासचिव एडवोकेट बृजपाल राणा, कैप्टन राजेंद्र सिंह, ईश्वर सिंह राणा व अन्य ने बताया कि 9 मई को महाराणा प्रताप जी के जन्म दिवस पर राजपूतों के सबसे बड़े गांव सालवन में असंध विधायक योगेन्द्र राणा की अध्यक्षता में राज्य स्तरीय जयंती का आयोजन किया जाना था जिसमें मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी बतौर मुख्य अतिथि पहुंचने वाले थे, लेकिन भारत और पाकिस्तान के बीच चल रहे तनाव के मद्देनजर इस बड़े कार्यक्रम को स्थगित किया गया। इस कार्यक्रम की सभी तैयारियां पूरी हो चुकी थी। इसके बाद गांव स्तर पर ही महाराणा प्रताप जी की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित

कर और प्रसाद वितरित करके उनकी जयंती मनाई जा रही है। प्रधान ने कहा की राजपूत समाज तन मन और धन से भारतीय सेना और सरकार के साथ है। इस लड़ाई में किसी भी रूप में सरकार और सेना को जरूरत पड़ेगी तो राजपूत हमेशा सबसे आगे खड़े मिलेंगे। इस दौरान समाज के लोगों में पाकिस्तान के प्रति गुस्सा भी दिखाई दिया और सीधे तौर पर कहा कि इस बार आर पार की लड़ाई होनी चाहिए। आतंकवाद को बढ़ावा देने वाले देश पाकिस्तान को पूरी तरह से मिट्टी में मिला देना चाहिए। हमें महाराणा प्रताप जी के जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिए जिन्होंने विपरीत परिस्थितियों में भी उन्होंने दुश्मन का डटकर मुकाबला किया और अपनी सेना और नागरिकों का मनोबल कभी भी कम नहीं होने दिया। उन्होंने मातृभूमि की रक्षा के लिए अपना संपूर्ण जीवन न्योछावर किया जिसके चलते उन्हें वीर शिरोमणि, मेवाड़ मुकुट,महान पराक्रमी योद्धा सहित अन्य उपाधियों से भी जाना जाता है इस अवसर पर अजमेर सिंह पंवार, राजेंद्र सिंह ऊंचा समाना, दीपक केरवाली, बिशपाल राणा, भूप सिंह राणा, विजयपाल सिंह, नरेंद्र अमृतपुर, चंद्रशेखर राणा बड़ागांव, देवव्रत एडवोकेट, प्रदीप बीजना, कुलदीप राणा, योगेश कुमार, शेखर राणा,दीपक राणा, दीपक मैनेजर, गौरव राणा अरडाना मैनेजर संतोष तेजान सहित काफी संख्या में 36 बिरादरी के लोग उपस्थित रहे।

डीएवी पीजी कॉलेज में वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप की जयंती पर कार्यक्रम का हुआ आयोजन

करनाल, 9 मई (संदीप रोहिला) : डीएवी पीजी कॉलेज के एनएसएस प्रकोष्ठ द्वारा महाराणा प्रताप की जयंती पर आयोजित कार्यक्रम में कॉलेज के प्राचार्य प्रोफेसर रामपाल सैनी ने उनके चित्र पर पुष्प अर्पित कर उन्हें याद करते हुए कहा कि देशभक्ति से ओत-प्रोत, उनका जीवन हमें मातृभूमि पर अपना सर्वस्व समर्पित करने की सीख देता है।

वह भारतीय इतिहास के ऐसे महानायक थे, जिन्होंने अपनी मातृभूमि के मान-सम्मान और स्वाभिमान की रक्षा के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया। महाराणा प्रताप की कहानी भारतीय इतिहास में स्वतंत्रता सेनानी और प्रतिरोध के प्रतीक के रूप में याद की जाती है।

उन्होंने कहा कि महाराणा प्रताप को उनकी वीरता और साहस के लिए जाना जाता है। उन्होंने मुगल बादशाह अकबर की अधीनता स्वीकार नहीं की और मेवाड़ को मुगल साम्राज्य से बचाने के लिए संघर्ष किया। इस मौके पर एनएसएस कार्यक्रम अधिकारी डॉ बलराम शर्मा, डॉ पूनम वर्मा, डॉ राधिका सहित अन्य स्टाफ सदस्य व विद्यार्थी मौजूद रहे।

वार्ड 21 व 12 से निगम ने पकड़े 11 गोवंश, पहुंचाए गौशाला

यमुनानगर, 9 मई (संजीव कुमार) : लावारिस गोवंशों को पकड़ने का निगम का अभियान जारी है। नगर निगम क्षेत्र में घूम रहे लावारिस गोवंशों को रोजाना पकड़ा जा रहा है। अब तक 982 लावारिस पशुओं को पकड़कर नगर निगम गौशालाओं में पहुंचा चुका है। इसी कड़ी में नगर निगम ने वार्ड नंबर 21 और 12 के विभिन्न क्षेत्रों से 11 लावारिस गोवंशों को पकड़ कर गौशाला पहुंचाया। जब तक से शहर से हर लावारिश गोवंश नहीं पकड़ा जाता, निगम का यह अभियान जारी रहेगा। शहरवासी भी नगर निगम क्षेत्र में घूम रहे लावारिस गोवंश की फोटो खींचकर पत्ते व लोकेशन सहित निगम के व्हाट्सएप नंबर 7082410524 पर भेजे। जिसके बाद निगम की टीम मौके पर पहुंचकर लावारिस गोवंश को

पकड़कर गौशाला पहुंचाएगी। लावारिस पशुओं को पकड़ने के लिए नगर निगम द्वारा जोन एक में सीएसआई हरजीत सिंह व जोन दो में सीएसआई सुनील दत्त के नेतृत्व में टीमों का गठन किया गया। सीएसआई सुनील दत्त के नेतृत्व में गठित टीम लावारिस गोवंशों को पकड़ने के लिए वार्ड नंबर 12 में पहुंची। यहां निगम कर्मियों ने वार्ड के पांसरा, बाड़ी माजरा समेत विभिन्न स्थानों पर घूम रहे छह बेसहारा गोवंशों को पकड़ा। निगम कर्मियों ने रस्सियों के माध्यम घेरा डालकर गोवंशों को पकड़ा। इसके बाद उन्हें निगम के वाहन में चढ़ाया। गोवंशों को पकड़ने के बाद उन्हें गौशाला पहुंचाया। इससे पूर्व निगम की टीम ने वार्ड 21 में विभिन्न स्थानों से पांच गोवंशों को पकड़कर निगम के वाहन में चढ़ाकर गौशाला पहुंचाया। निगम कर्मियों ने गोवंशों रस्सियों से घेराबंदी करके पकड़ा। बड़ी मुश्किल से निगम कर्मियों ने उन्हें निगम के वाहन में चढ़ाया। इसके बाद उन्हें टैग लगाकर गौशाला पहुंचाया। सीएसआई सुनील दत्त ने बताया कि लावारिस पशुओं को पकड़ने का यह अभियान आगे भी जारी रहेगा। शहर में घूमने वाले सभी लावारिस गोवंश को पकड़ा जाएगा। अब नगर निगम ने 982 गोवंशों को पकड़ कर गौशाला पहुंचाया है। सभी पशुओं को टैग भी लगाए गए है। उन्होंने कहा कि कोई भी शहरवासी गोवंशों का इस्तेमाल करने के बाद उन्हें खुले में न छोड़े। यदि कोई गोवंश खुले में छोड़ता है तो उस पर 51 सौ रुपये जुर्माना लगाया जाएगा। इसके अलावा यदि ग्रामीण क्षेत्र से भी कोई व्यक्ति शहरी क्षेत्र में गोवंश छोड़ता है तो उस पर भी कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने आमजन से अपील की कि यदि उन्हें शहरी क्षेत्र में कहीं भी कोई लावारिस पशु दिखाई दे तो उसकी फोटो खींचकर पते या लोकेशन समेत निगम के व्हाट्सएप नंबर 7082410524 पर भेजे। निगम की टीम तुरंत मौके पर पहुंचकर उन पशुओं को पकड़कर गौशाला पहुंचाएगी। उन्होंने बताया कि निगम द्वारा जो बेसहारा गोवंश पकड़कर गोशाला में छोड़े जाते है, उसके लिए नगर निगम द्वारा प्रति पशु के हिसाब से चारा खर्च गौशाला कमेटी को दिया जाता है। पशु पकड़ते समय उस पर निगम की ओर से टैग लगाया जाता है। यदि टैग वाला पशु दोबारा खुले में मिलता है तो संबंधित गौशाला संचालक पर भी जुर्माना लगाया जाएगा।

रिवार्ड प्वाइंट का लालच देकर 50 हजार ठगने के मामले में आरोपी काबू

कैथल, 9 मई (प्रवेश बहादुर) : साइबर अपराधों से बचाव बारे आमजन को जागरूक करने के अतिरिक्त जिला पुलिस द्वारा एसपी आस्था मोदी के आदेशानुसार साइबर अपराधियों पर शिकंजा भी कसा जा रहा है। एसे ही रिवार्ड प्वाइंट का लालच देकर 50 हजार रुपए ठगी मामले की जांच थाना साइबर क्राइम के एएसआई विनोद कुमार की टीम द्वारा करते हुए आरोपी गांव घावड़ जिला हिसार निवासी युवराज बेनीवाल को गिरफ्तार कर लिया गया। पुलिस प्रवक्ता ने बताया कि कैथल निवासी विवेक की शिकायत अनुसार 31 दिसंबर को उसके पास एक अज्ञात मोबाइल नंबर से मैसेज आया। उसमें अंग्रेजी में लिखा था कि आपके एसबीआई के 13 हजार 679 रिवार्ड प्वाइंट इकट्ठे हुए हैं, जिनको निकालने की आज आखिरी तारीख है और साथ में एक लिंक था। जब उसने उस लिंक पर क्लिक किया तो एसबीआई की साइट खुल गई। इसमें नेट बैंकिंग के लिए आईडी और पासवर्ड मांगे जो उसने भर दिए। पासवर्ड भरने के बाद एक ओटीपी आया तो उसने भर दिया। बाद में स्क्रीन पर मैसेज आया कि अपना पैन नंबर व पिता का नाम कंफर्म करें। उसके बाद अन्य डिटेल भरने के लिए मैसेज व ओटीपी आया। ओटीपी भरते ही उसके खाते से 50 हजार रुपए कट गए। जब दोबारा ओटीपी आया तो उसे पता चला कि उसके साथ ठगी हुई है। जिस बारे थाना साइबर क्राइम में मामला दर्ज किया गया। आरोपी के कब्जे से 7 हजार रुपए बरामद किए गए। पुलिस द्वारा नियमानुसार आगामी कार्रवाई की जा रही है।

करनाल सहकारी चीनी मिल ने बनाया नया कीर्तिमान : राजीव प्रसाद

करनाल, 9 मई (रविन्द्र मलिक) : करनाल सहकारी चीनी मिल के प्रबंध निदेशक राजीव प्रसाद ने बताया कि पिराई सत्र 2024-25 में करनाल सहकारी चीनी मिल ने नया कीर्तिमान स्थापित करते हुए किसानों से जो गन्ना खरीद किया है, उसके कुल देय भुगतान 192 करोड़ रुपये में से 190 करोड़ रुपये का भुगतान बिना सरकार से लोन लिए अपने स्तर पर पूर्ण अदायगी के साथ किया है यानी कि अनुदान राशि जो केन कमिश्नर कार्यालय द्वारा जारी की जानी है के अलावा किसी भी किसान का मिल पर गन्ने का कोई बकाया नहीं रह गया है। राजीव प्रसाद ने बताया कि करनाल सहकारी चीनी मिल का 2024-25 पिराई सत्र नवंबर 2024 को शुरू होकर 15 अप्रैल 2025 को पूरा हुआ किया है। मिल ने इस पिराई सत्र के दौरान 48.11 लाख क्विंटल गन्ने की पिराई करके 9.47 प्रतिशत रिकवरी के साथ 4.55 लाख क्विंटल चीनी का उत्पादन किया है, जिसका किसानों को कुल देय गन्ना भुगतान 192 करोड़ रुपये बनता है जिसमें से 190 करोड़ रुपये का भुगतान मिल ने बिना सरकार से लोन लिए अपने स्तर पर पूर्ण अदायगी के साथ कर दिया है। उन्होंने बताया कि पिछले पिराई सत्र में शुरू की गई ऑनलाइन टोकन प्रणाली से ही किसानों ने स्वयं अपनी गन्ने की ट्रालियों पर टोकन लगाये और 2 से 3 घण्टे में अपनी गन्ने से भरी ट्राली खाली करके वापिस अपने घर चले जाते थे। इससे किसानों को समय की बचत के साथ-साथ वित्तीय लाभ भी हुआ है। इसके अलावा मिल में स्थापित 18 मेगावाट को0-जन0 प्लांट से मिल ने पिराई सत्र 2024-25 में बिजली का 35702600 किलोवाट प्रति घंटा उत्पादन किया और 22.67 करोड़ की बिजली हरियाणा पावर परचेज सेंटर को बेची गई है। इससे मिल द्वारा अतिरिक्त आय अर्जित की गई है जोकि अपने आप में एक कीर्तिमान है।

कलाउड कंपयूटिंग में कुशल पेशेवरों की मांग आज भी

सूचना तकनीक के इस दौर में क्लाउड कंप्यूटिंग में कुशल पेशेवरों की सबसे ज्यादा जरूरत स्टार्टअप से लेकर बड़े व्यवसायों तक को होती है। यह पेशेवरों क्लाउड कंप्यूटिंग सिस्टम और सेवाओं को डिजाइन करने और अच्छे से प्रबंधित करना आता है। यही वजह है कि इन पेशेवरों की मांग बढ़ती जा रही है। ऐसे में अगर आप भी क्लाउड कंप्यूटिंग में बेहतर करियर बना सकते हैं।

इसमें कौशल बढ़ाने के लिए आप पढ़ाई के साथ-साथ विभिन्न क्लाउड आधारित कोर्स कर सकते हैं। इन कोर्स को करने से आपको जेमिनी, जेनरेटिव एआई को समझने और स्ट्रीमलिट के साथ एप्लीकेशन बनाने का मौका मिलेगा।

क्या है क्लाउड कंप्यूटिंग

डेटा और प्रोग्रामिंग को दूरस्थ रूप से संग्रहीत और एक्सेस करने का एक तरीका है जो आपके कंप्यूटर की हार्ड ड्राइव पर जानकारी होस्ट करने के बजाय इंटरनेट का उपयोग करता है। संक्षेप में, क्लाउड कंप्यूटिंग को डेवलपर्स और गैर-डेवलपर्स दोनों के लिए प्रक्रियाओं को सरल बनाने के लिए डिज़ाइन किया गया है, जिसका अंतिम लक्ष्य क्लाउड और ऑन-प्रिमाइसेस डेटा को कनेक्ट और साझा करना है। क्लाउड कंप्यूटिंग को मूल रूप से एक डिलीवरी पद्धति के रूप में सोचें। एस प्रकार से यह डेटा स्टोरेज भी है।

इंट्रोडक्शन टू लार्ज लैंग्वेज मॉडल = शुरूआती स्तर पर यह माइक्रो-लर्निंग कोर्स आपको लार्ज लैंग्वेज मॉडल की छोटी-छोटी बारीकियों के बारे में बताएगा। इस कोर्स में एलएलएम के उपयोग और इसके प्रदर्शन को अच्छा बनाने के लिए आपको प्रॉम्प्ट ट्यूनिंग का इस्तेमाल करना सिखाया जाता है। इस कोर्स में ऐसे गूगल टूल्स भी शामिल किए गए हैं। जिनकी मदद से आप खुद का जेनरेटिव एप बना सकेंगे।

प्रॉम्प्ट डिजाइन इन वर्टेक्स एआई = प्रॉम्प्ट डिजाइन इन वर्टेक्स एआई कोर्स में जेनरेटिव एआई आउटपुट कंट्रोल करने, प्रॉम्प्ट तैयार करने और वास्तविक दुनिया के मार्केटिंग परिदृश्यों में जेमिनी मॉडल लागू करने के विभिन्न तरीकों के बारे में सिखाया जाता है।

जेन एआई एप विथ जेमिनी और स्ट्रीमलिट = जेन एआई एप विथ जेमिनी और स्ट्रीमलिट आपको पायथन एसडीके, टेक्स्ट जेनरेशन और जेमिनी एपीआई के साथ कार्यात्मक निर्णय लेने और क्लाउड रन के साथ स्ट्रीमलिट एप्लिकेशन बनाने का तरीका सीखाएगा।

इमेज जेनरेशन = पिछले कुछ सालों में अनुसंधान और उद्योग और दोनों ही क्षेत्रों में डिफ्यूजन मॉडल कॉफी लोकप्रिया हो रहा है। इस कोर्स के जरिए आपको डिफ्यूजन मॉडल के सिद्धांतों को वर्टेक्स एआई के साथ जोड़कर सीखने से कौशल निखरेंगे।

मशीन लर्निंग सॉल्यूशंस ऑन वर्टेक्स = इसमें आपको मशीन लर्निंग के समाधान के बारे में सीखने का अवसर मिलेगा।

इंजीनियरिंग में बीई और बीटेक का अंतर

इंजीनियरिंग के क्षेत्र में जाने वाले युवाओं के लिए बीई और बीटेक का अंतर जानना जरुरी है। तभी वे अंदाजा लगा सकेंगे कि कौन सा कोर्स उनके कॅरियर के लिए अच्छा रहेगा। बैचलर ऑफ इंजीनियरिंग बीई एक पारंपरिक डिग्री कोर्स है, जोकि इंजीनियरिंग के प्रिंसिपल और बेसिक कॉन्सेप्ट पर फोकस करता है। बैचलर ऑफ इंजीनियरिंग में स्टूडेंट्स को थ्योरी बेस्ड नॉलेज अधिक दी जाती है। जिससे कि स्टूडेंट्स इंजीनियरिंग के बेसिक प्रिंसिपल्स को अच्छे से समझ सकें। वहीं इस कोर्स में प्रैक्टिकल और लैब वर्क भी होते हैं। लेकिन इस कोर्स की थ्योरी की गहराई अपेक्षाकृत अधिक होती है। बीई और बीटेक दोनों ही डिग्रियां इंजीनियरिंग की फील्ड में समान मान्यता प्राप्त है। इन दोनों कोर्स में फर्क सिर्फ कॅरियर गोल्स और पढ़ाई के तरीके में होता है। ऐसे में सही कोर्स का चुनाव करके आपके लक्ष्य, रुचि और पढ़ाई के प्रति रुख पर निर्भर करता है।

बैचलर ऑफ टेक्नोलॉजी

यह कोर्स प्रैक्टिकल और एप्लिकेशन-ओरिएंटेड डिग्री है। इसमें तकनीकी पहलुओं पर अधिक ध्यान दिया जाता है। इस कोर्स में इंडस्ट्री में चलने वाले ट्रेंड्स, नई टेक्नोलॉजी और रियल टाइम प्रोजेक्ट्स आदि पर फोकस किया जाता है। इंडस्ट्री की जरूरतों के अनुसार बीटेक कोर्स डिजाइन किया जाता है। जिससे कि स्टूडेंट्स सीधे तौर पर जॉब के लिए तैयार हो सकें।

बैचलर ऑफ इंजीनियरिंग कोर्स थ्योरी और फंडामेंटल्स पर अधिक केंद्रित होता है। वहीं बीटेक में इंडस्ट्री स्किल्स और प्रैक्टिकल नॉलेज पर ध्यान दिया जाता है।

बीई कोर्स में एकेडमिक और रिसर्च बेस्ड स्टडी अधिक की जाती है जबकि बीटेक में प्रैक्टिकल ट्रेनिंग और प्रोजेक्ट वर्क पर अधिक फोकस होता है।

बीई का सिलेबस थोड़ा ट्रेडिशनल होता है और बीटेक का सिलेबस इंडस्ट्री की डिमांड के हिसाब से बार-बार अपडेट होता रहता है।

कैसे चयन करें

अगर आपका रुझान इंजीनियरिंग के प्रिंसिपल्स को गहराई से समझने में और फ्यूचर में रिसर्च या फिर हायर एजुकेशन किए जाने में हैं, तो बैचलर ऑफ इंजीनियरिंग कोर्स आपके लिए बेहतर ऑप्शन साबित हो सकता है।

वहीं अगर आप पढ़ाई के फौरन बाद किसी टेक्निकल जॉब में जाना चाहते हैं इंडस्ट्री में अपना कॅरियर बनाना चाहते हैं, तो फिर बीटेक कोर्स आपके लिए ज्यादा बेहतर रहेगा।

सहायक अभियंता के पदों पर 28 मई तक कर सकते हैं आवेदन

सरकारी नौकरी की तलाश करने वाले तकनीकी क्षेत्र के युवाओं के लिए अच्छा मौका है। बिहार राज्य के विभिन्न विभागों में सहायक अभियंता के पदों पर वैकेंसी निकली है। ऐसे में आप 28 मई तक इन पदों पर आवेदन कर सकते हैं। बिहार लोक सेवा आयोग की ओर से बिहार राज्य के विभिन्न विभागों में सहायक अभियंता (असैनिक, यांत्रिक, विद्युत) के पदों पर भर्ती निकली है।

की कुल संख्या 1
है। बता दें कि
भर्ती उन उम्मीदव
के एक सुनहरा मौ
है, जो इंजीनियरि
के क्षेत्र में सरका
नौकरी की तलाश
में हैं। इन पदों पर
आवेदन के लिए
इच्छुक हैं, तो आप
28 मई तक इन पदों पर आवेदन कर सकते हैं।

ऑनलाइन आवेदन की लास्ट डेट- 28 मई 2025

यह आवेदन की प्रक्रिया ऑनलाइन होगी और आवेदन करने वाले कैंडिडेट्स को आयोग की ऑफिशियल वेबसाइट पर जाकर आवेदन करना होगा। वहीं आवेदन की दिशा-निर्देशों का पूरी तरह से पालन करना होगा।

पद -कुल 1024 असहायक अभियंता पदों पर भर्ती निकाली गई है। जिनमे से सहायक अभियंता 984 पद हैं, जिनमें से 324 पद महिला के लिए हैं। वहीं 36 सहायक अभियंता (यांत्रिक) 36 पद हैं। जिनमें से 8 पद महिला के लिए शामिल हैं। वहीं सहायक अभियंता (विद्युत) के 4 पद हैं।

योग्यता -आवेदन करने वाले उम्मीदवारों के पास प्राप्त किसी भी यूनिवर्सिटी या इंस्टीट्यूट से मैकेनिकल, सिविल या इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग की डिग्री होनी चाहिए।

आयु सीमा-आवेदन के इच्छुक उम्मीदवारों की न्यूनतम आयु 21 साल होनी चाहिए। वहीं आयु की गणना 01 अगस्त 2024 के आधार पर की जाएगी। वहीं आरक्षित वर्ग के कैंडिडेट्स को आयु सीमा में छूट मिलेगी।

आवेदन शुल्क-सामान्य उम्मीदवारों की फीस - 750 रुपए अनुसूचित जाति व अनुसूचित जनजाति की फीस - 200 रुपए बिहार के स्थायी निवासी सभी आरक्षित और अनारक्षित महिला उम्मीदवारों की फीस - 200 रुपए दिव्यांग अभ्यर्थियों की फीस - 200 रुपए।

लेखन में भी हैं रोजगार क्रिएटिव बनकर सरगर्मी दिखाएं

अगर आपको किताबें पढ़ना और अपने मन की बात को डायरी में लिखना पसंद है तो आप लेखन में भी अच्छा करियर बना सकते हैं, और खूब सारे पैसे भी कमा सकते हैं। लेखन में करियर बनाना चाहते हैं तो बस इन तीन बातों को अपने दिमाग में रख लें।

क्रिएटिव बने -लेखन के लिए क्रिएटिव दिमाग का होना बहुत जरूरी है। जिसे किसी भी राइटिंग कोर्स के जरिए सीखा नहीं जा सकता जिस भाषा में आप लिखना चाहते हैं उसमें पकड़ लाने के लिए आपको अखबार, नॉवल, कहानियों को लगातार पढ़ते रहना होगा तभी आप लिखने में महारत प्राप्त कर पाएंगे। एक बाद याद रखें कोई भी लेखन लिखते वक्त जितनी बढ़िया वर्तनी होगी उतना ही मजबूत आपका लेख होगा.।

सीधे तरीके से लिखे

अक्सर पाठक घुमावदार तरीके से लिखे हुए लेखन को पढ़ने से बचते हैं। उन्हें वहीं पढ़ना पसंद है जिसमें बात साफ और सीधे तरीके से लिखी गई हो। इसलिए प्वाइंट टू प्वाइंट लिखने की आदत डालें, ताकि आप कम वाक्य में ज्यादा से ज्यादा जानकारी दें सकें।

एक लेखक को सफलता तभी मिलती है जब वह ताजा मामलों पर लिखता है। ऐसा ना हो कि देश और दुनिया में कुछ और बात चल रही है और आप अपने पाठकों को कोई और बात परोस रहे हैं।

दुनिया में क्या चल रहा है इसके लिए आपको सोशल मीडिया पर अपडेट रहना होगा। ताकि आप वही लिखें जो पाठक पढ़ना चाहतें हैं।

बीटेक कोर्स में प्रवेश के समय ब्रांच पर ध्यान दें

संगीत में भी हैं कई संभावनाएं

संगीत अब केवल शौक नहीं रहा यह एक बाजार के रुप में विकसित हो गया है। तेजी से बदलते परिदृश्य में संगीत का क्षेत्र एक महत्वपूर्ण पेश बन गय है। युवाओं में इस क्षेत्र का रुझान तेजी से बढ़ता जा रहा है। संगीत को अपना करियर बनाने की इच्छा रखने वाले युवाओं के लिए महज संगीत में रुचि रखना ही काफी नहीं है। इसके अलावा उन्हें सृजनात्मक प्रतिभा का धनी, धुन का पक्का, मेहनती, संगीत की समझ, वाद्ययंत्रों का की जानकारी होनी चाहिये। इसके लिए ट्रेनिंग के साथ ही ग्रेजुएशन, पोस्ट ग्रेजुएशन के अतिरिक्त सर्टिफिकेट डिप्लोमा एवं पार्ट टाइम प्रकार के कोर्स्हो सकते हैं। नामी विश्वविद्यालयों से लेकर संगीत अकादमियों तक में इस प्रकार के ट्रेनिंग कोर्सेज स्कूली बच्चों और युवाओं के लिए उपलब्ध हैं।

वर्तमान में देश-विदेश में युवाओं में म्यूजिक बैंड बनाने और परफॉर्म करने का ट्रेंड जोर पकड़ता जा रहा है। इस प्रकार के बैंडस में वोकल आर्टिस्ट (गायक) और इंस्ट्रूमैंट्रल आर्टिस्ट (वाद्ययंत्र कलाकार) दोनों का ही समन्वयन होता है। स्कूलों, कॉलेजों और अन्य छोटे स्तरों पर इस प्रकार के सैकड़ों हजारों बैंडस आज अस्तित्व में आ चुके हैं। आम तौर पर यही माना जाता है कि संगीत को करियर का आधार बनाकर ज्यादा कुछ करने की संभावनाएं सीमित हो जाती हैं पर वास्तविकता पर बात करें तो कम से कम आज के संदर्भ में स्थितियां बहुत भिन्न हैं और तमाम नए विकल्प उबरकर सामने आ रहे हैं। म्यूजिक इंडस्ट्री = इस उद्योग में कई प्रकार के म्यूजिक आधारित प्रोफेशनलों की अहम भूमिका होती है, इनमें विशेष तौर पर म्यूजिक सॉफ्टवेयर प्रोग्रामर, कंपोजर, म्यूजिशियन, जैसे कार्यकलापों के अलावा म्यूजिक बुक्स की पब्लिशिंग, म्यूजिक अलबम रिकार्डिंग म्यूजिक डीलर, म्यूजिक स्टूडियो के विभिन्न विभागों इत्यादि का उल्लेख किया जा सकता है।

टेलीविजन = साउंड रिकार्डिस्ट, म्यूजिक एडिटर, प्रोडक्शन, आर जे एवं डीजे म्यूजिक लाइसेंस में ऐसे जानकार और अनुभवी लोगों की जरूरत पड़ती है।

स्टेज परफार्मेंस = म्यूजिक शो, टेलीविजन म्यूजिक प्रोग्राम, म्यूजिक कंपीटिशन आर्म्ड फोर्सेज बैंडज, सिंफनी आर्केस्ट्रा, डांस बैंड, नाइटक्लब, कसर्ट शो, रॉक और जैज ग्रुप इत्यादि में भी इनकी भूमिका को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है। म्यूजिक थेरेपिस्ट = विकलांगता के शिकार बच्चों और लोगों के अलावा मानसिक तनाव से ग्रस्त व्यक्तियों के उपचार में आजकल संगीत को काफी महत्वपूर्ण माना जाने लगा है। इस प्रोफेशन में सफल होने के लिए संगीत, अध्यायन और थेरेपी का जानकार होना जरूरी है। इनके लिए हॉस्पीटलों, मेंटल टैम्थ सेंटरों, नर्सिंग होम्स इत्यादि में रोजगार के अवसर हो सकते हैं।

स्टूडियो टीचिंग = म्यूजिक टीचर के रूप में स्कूलों कॉलेजों और अन्य संगीत प्रशिक्षण संस्थाओं में करियर बनाने के बारे में भी सोचा जा सकता है। इनमें भी विशेषतता प्राप्त टीचर का खासा महत्व होता है। विशेषताओं में में खासतौर पर म्यूजिक थ्यरी, म्यूजिक हिस्ट्री एंड लिट्रेचर, म्यूजिक एजुकेशन, म्यूजिकोलॉजी, इलेक्ट्रॉनिक म्यूजिक, कंपोजिशन अथवा म्यूजिक थेरेपी की बात की जा सकता है। इन सबके अतिरिक्त फिल्म इंडस्ट्री, चर्च म्यूजिशियन म्यूजिक लाइब्रेरियन, म्यूजिक अरेंजिंग, म्यूजिक सॉफ्टवेयर, प्रोडेक्शन म्यूजिक, वर्चुअल रिअल्टी साउंड एंवायरनमेंट इत्यादि जैसी विधाओं में भविष्य बनाया जा सकता है। प्रसार भारती के चेयरमैन ए सूर्य प्रकाश ने ऑल इंडिया रेडियो (एआईआर) के लिए सभी विधाओं में संगीत के ऑडिशन के लिए ऑनलाइन आवेदन प्रणाली शुरू की है। यहां आयोजित हुए 64वें आकाशवाणी संगीत सम्मेलन के मौके पर यह कदम उठाया गया।

एआईआर के अनुसार ''ऐसा मानना है कि इस सुविधा के शुरू होने से आवेदन करने के इच्छुक उम्मीदवारों को पहुंच और सुविधा के रूप में बेहतर अनुभव मिलेगा।'' एआईआर शास्त्रीय संगीत, सुगम संगीत, लोक संगीत, जनजातीय और पश्चिम समेत संगीत की अलग-अलग शैलियों में ऑडिशन लेता है।

08 मई ईएमएस फीचर

जीवन की हर स्थिति से निपटना सीखें, सकारात्मक बनिए

- किशन सनमुखदास भावनानी

वैश्विक स्तरपर खुशियों या सकारात्मक परिस्थितियों में तो हर व्यक्ति जीवन जीनें को आतुर रहता है, परंतु सृष्टि का यह नियम है कि हमेशा ऐसा नहीं होता, जीवन का चक्र घूमते रहता है। यदि आज सकारात्मक परिस्थितियां हैं तो कल नकारात्मक परिस्थितियां भी आनी ही है।जिससे हमें मुकाबला कर आगे बढ़ना है और स्थितियों पर परिस्थितियों से निपट कर सफलता के झंडे गाड़कर इतिहास रचना है। जो खुद में स्थिर होते हैं, हर परिस्थितियों से लड़ते हैं, वही अपने जीवन में इतिहास रखते हैं। क्योंकि जब हम निर्भीकता से विपत्तियों का मुकाबला करने के लिए कटिबद्ध होंगे त्योहिं विपत्तियां दुम दबाकर भाग खड़ी होगी। इसलिए आज हम इस आर्टिकल के माध्यम से विभिन्न विचारों को समाहित करते हुए चर्चा करेंगे आओ परिस्थितियों से लड़ कर इतिहास रचें। साथियों बात अगर हम मानवीय जीवन में परीक्षा की घड़ी की करें तो अनुकूल परिस्थितियों में तो सभी सटीकता से जीवन यापन करने और अपने आप को सुदृढ़ और सुलझा हुआ कहने लगते हैं परंतु असली व्यक्तित्व और सटीकता का पता तो तब चलता है जब विपरीत परिस्थितियों में भी स्थिरता के से मुकाबला कर उन्हें अनुकूल बनाकर इतिहास रचते हैं। असल में हमें विपरीत परिस्थितियों में हिम्मत रखना और जिंदगी में जो भी परिस्थितियां हो उसका डटकर सामना करना हमारी जिंदगी में जो भी समस्या हो उन समस्याओं का हल निकालना और उन समस्याओं का हल निकालते और लड़ते-लड़ते मर जाना बेहतर है। किसी भी समस्या से भागना नहीं चाहिए विकट परिस्थितियों में जूजते रहेंगे तो हमारी समस्याओं का हल अपने आप निकलता रहेगा और आने वाली पीढ़ी के लिए समस्याओं का निराकरण भी लाएंगे और हमारी आने वाली पीढ़ी के लिए आदर्श भी बनेंगे जो लोग समस्याओं से लड़ते हैं और उसका हल निकालते हैं और डरते नहीं है, वही लोग महान हैं।

साथियों बात अगर हम सटीक कहावत मानव परिस्थितियों का दास होता है और उस दास शब्द को अस्वीकार करने की करें तो, मुश्किल परिस्थितियों से बाहर निकलने के लिए हमें सर्वप्रथम उन वजहों को समझने का प्रयास करना चाहिए जिनके चलते ये परिस्थितियाँ पैदा हुईं हैं जिसपर पर बारिकी से नजर रखते हुए सब्र के साथ परिस्थितियों का सामना करने का प्रयास करना चाहिए,जो परिस्थितियाँ हमारे बस में ना हों उनके लिए अधिक चिंतित हम ना हों । वे समय के साथ खुद ब खुद सामान्य हो जाएँगी। हर हालत में धैर्यवान बने रहकर ईश्वर अल्लाह (समय) पर भरोसा करना चाहिए।समय से बलवान कोई नहीं।चाहे कितनी भी मुश्किल परिस्थिति हो समय बीतने के साथ-साथ मुश्किल से मुश्किल परिस्थितियों को बदलकर सामान्य होते देर नहीं लगतीं।कितना भी गहन अंधकार वाली रात्रि हो कुछ पलों में सूर्योदय अवश्यंभावी है।

साथियों वह नियति हो या फिर परिस्थिति कोई फर्क नहीं पड़ता और जीवन में अच्छे और बुरे दोनों वक्त आते हैं। जिस तरह से हम अच्छे वक्त को संभालना बचपन से जानते हैं, उसी तरीके से हमें बुरे वक्त को भी संभालना सीखना चाहिए किस तरीकेसे हम इनको संभाले कि यह परिस्थितियां कभी भी हमारे जीवन में ऐसी परिस्थिति ना क्रिएट करें की हम टूट कर बिखर जाएं यदि टूट कर बिखर भी जाएं तो स्वयं को जोड़कर पुन:खड़ा होने की हिम्मत अपने अंदर रखनी चाहिए। जीवन में जीवन से ज्यादा कुछ भी महत्वपूर्ण नहीं होता परंतु अक्सर देखा जाता है कि इंसान छोटी-छोटी बातों को लेकर के भी आत्महत्या कर लेता है या फिर कोई ऐसा कदम उठा लेता है जिसकी हम कल्पना भी नहीं करते इन्हीं सब से निपटने के लिए हमें स्वयं को मानसिक रूप से सबल बनाना होता है।

साथियों बात अगर हम विपरीत परिस्थितियों को हावी ना होने देने की करें तो, जब भी हम अपने जीवन में कमजोर होते हैं, चाहे वह कमजोरी शारीरिक होआर्थिक हो या मानसिक हो उस वक्त हमारा मन दुर्बल होता है तथा हम परिस्थितियों से संघर्ष करने में कमजोर होते हैं। अत: ऐसी स्थिति में हमारे ऊपर परिस्थितियों को हम हावी होने देते हैं यदि हम चाहते हैं कि हमारे ऊपर परिस्थितियां हावी ना हो तो हमको अपने आप को मानसिक रूप से बहुत सफल बनाए रखना होगा। जिंदगी में कहीं बार ऐसे पड़ाव, वक्त आता हैं कि हमें क्या करना चाहिए और क्या नहीं समझ में ही नहीं आता,उस परिस्थितियों में हमको सब्र रखना हैं, खुद से बातें करना हैं, खुद को एकांत में लाने का प्रयास करना चाहिए, क्योंकि यहीं वह समय हैं जब हम खुद कों समझ सकते हैं, हमारे अंदर रहा सामर्थ्य को पहचान सकते हैं, हमारी क्षमता को समझ सकते हैं,और जरूरी हैं सकारात्मक बने रहना। प्रतिकूल परिस्थितियों में अगर हमारा अपने दिल और दिमाग पर काबू है तो हमको किसी की भी आवश्यकता नहीं पड़ेगी तो सबसे पहले हमको स्ट्रांग रखने के लिए अपने दिल और दिमाग को अपने काबू में रखना पड़ेगा अगर वह काबू में आ गए तो हम किसी भी परिस्थिति का सामना कर पाएंगे।

साथियों बात अगर हम खुद के अनुसार परिस्थितियों को बदलकर इतिहास रचने की करें तो, हमें ऐसे व्यक्ति बननां है जो परिस्थितियों के अनुसार खुद नही बल्कि खुद के अनुसार परिस्थितियों को बदल डाले इसलिए पुन:प्रयास करें और तब तक करते रहें जब तक हम उस परिस्थिति को बदल न दे हमें अपनी परिस्थिति को सुधारने का भरसक प्रयत्न करना और उसके मार्ग में आने वाले संकटों का धैर्यपूर्वक मुकाबला करना चाहिए ,पर यदि प्रयत्नों के बावजूद हमारी आकाँक्षा और इच्छाओं के अनुसार हमारी परिस्थिति में किसी अज्ञात कारणवश शीघ्र वाँछित परिवर्तन या सुधार नहीं होता है, तो हमें घबराकर प्रयत्नों को नहीं छोड़ देना चाहिए बल्कि दुगने उत्साह के साथ हमें अपने उद्देश्य-प्राप्ति में जुटे रहना चाहिए। ऐसे समय में हमें अपने आत्म मित्र एवं हितचिंतकों से इस विषय में परामर्श और मार्गदर्शन प्राप्त करने का प्रयत्न करना चाहिए संभव है उनकी सूझबूझ और सहायता से हमारे संकट का निवारण हो जाए। समस्या को हम अपने परिवार के सदस्यों के सन्मुख उपस्थित कर उनकी सलाह भी ले सकते है इस प्रकार हमें कहीं न कहीं से ऐसे प्रेरक विचार मिल जायेंगे, जिनके द्वारा हम अपनी परिस्थितियों को बदल सकेंगे। साथियों जीवन एक संग्राम है इसमें वही व्यक्ति विजय प्राप्त कर सकता है, जो या तो परिस्थिति के अनुकूल अपने को ढाल लेता है या जो अपने पुरुषार्थ के बल पर परिस्थिति को बदल देता है। हम इन दोनों में से किसी भी एक मार्ग का या समयानुसार दोनों मार्गों का उपयोग कर जीवन-संग्राम में विजयी हो सकते हैं।

आर्य विद्यापीठ बस्तली में बड़े धूमधाम से मनाई वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप जयंती व मातृ दिवस

निसिंग, 9 मई (जोगिंद्र सिंह) : वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप जयंती के उपलक्ष्य में आर्य स्कूल बस्तली में सांस्कृतिक और ऐतिहासिक कार्यक्रम शौर्य गाथा और काव्य पाठ का आयोजन किया गया। स्कूल संचालक कृष्ण आर्य, सीमा आर्य व प्रिंसिपल सुनील कुमार ने महाराणा प्रताप की तस्वीर पर पुष्प अर्पित कर कार्यक्रम की शुरुआत की। स्कूल संचालक कृष्ण आर्य ने महाराणा प्रताप के जीवन पर प्रकाश डाला। उन्होंने बच्चों को बताया कि महाराणा प्रताप सिसोदिया राजपूत परिवार में जन्मे महान योद्धा हुए। जो बचपन से ही काफी वीर और साहसी थे। प्रिंसिपल सुनील कुमार ने कहा महाराणा प्रताप को भारतीय इतिहास के सबसे महान और वीर शासकों में से एक माना जाता है। उनके वीरता के किस्से आज भी बच्चे-बच्चे की जुबान पर रहते हैं। इसके साथ 11 मई को मातृ दिवस होने के उपलक्ष में बच्चों ने माताओं के लिए कार्ड बनाकर, माताओं को समर्पित कविता लिख व गा कर समा बांधा। इस कार्यक्रम का आयोजन समन्वयक संजय कुमार की देखरेख में किया गया। समन्वयक संजय कुमार ने कहा मदर-डे मई महीने के दूसरे रविवार को मनाया जाता है। यह दुनिया भर में माताओं के सम्मान और उनकी अहमियत को पहचानने के लिए मनाया जाता है। इस अवसर पर रमेश कुमार, सतीश कुमार, प्रियंका, बीरबल देवी, सुमन, सुखचैन, नीरू सहित सभी अध्यापकगण व बच्चे मौजूद रहे।

डीटीपी की टीम ने राजस्व संपदा कुरुक्षेत्र में लगभग 18 एकड़ में पनप रही एक अवैध कॉलोनी में किए गए निर्माण को किया नष्ट

कुरुक्षेत्र, 9 मई (सुदेश कुमार) : जिला नगर योजनाकार की टीम ने उपायुक्त के आदेशानुसार कुरुक्षेत्र में राजस्व संपदा कुरुक्षेत्र में लगभग 18 एकड़ में पनप रही एक अवैध कॉलोनी को जिला प्रशासन की मदद से तोड़-फोड़ की कार्रवाई अमल में लाई गई। जिला नगर योजनाकार अधिकारी विक्रम कुमार ने जारी एक प्रेस विज्ञप्ति में कहा कि राजस्व संपदा कुरुक्षेत्र के गांव खेडी मारकंडा में 18 एकड़ में पनप रही एक अवैध कालोनी में उपायुक्त के आदेशानुसार प्रशासन के सहयोग से तोडफ़ोड़ की कार्रवाई अमल में लाई गई है। डीटीपी विक्रम कुमार ने कहा कि उपायुक्त के आदेशानुसार डयूटी मजिस्ट्रेट के नेतृत्व में पुलिस बल के साथ डीटीपी की टीम ने कुरुक्षेत्र में राजस्व संपदा कुरुक्षेत्र के गांव खेडी मारकंडा में 18 एकड़ में पनप रही एक अवैध कॉलोनी में कच्ची सडक़ों, डीपीसी व कंट्रोल एरिया में एक अवैध निर्माण को पीले पंजे से हटाया गया। उन्होंने कहा कि डीटीपी विभाग के पास राजस्व संपदा कुरुक्षेत्र के गांव खेडी मारकंडा में लगभग 18 एकड़ में एक अवैध कॉलोनी के पनपने का मामला आया था, जिसके उपरांत विभाग द्वारा भूस्वामी और प्रॉपर्टी डीलरों को एचडीआर एक्ट 1975 की धाराओं के तहत नोटिस जारी कर जरूरी अनुमति लेने के आदेश दिए गए थे। परंतु भूस्वामी और प्रॉपर्टी डीलरों ना तो अवैध कालोनियों में निर्माण को नष्ट करने का काम किया गया है। उन्होंने लोगों

कालोनियों में किए जा रहें निर्माण को रोका और ना ही विभाग से अनुमति प्राप्त की। इस पर कार्रवाई करते हुए विभाग द्वारा इन अवैध कालोनियों में निर्माण को नष्ट करने का काम किया गया है। उन्होंने लोगों को सचेत करते हुए कहा कि सस्ते प्लाटों के चक्कर में प्रॉपर्टी डीलर के बहकावे में आकर प्लाट ना खरीदें और ना ही किसी प्रकार का निर्माण कार्य करे। इतना ही नहीं जमीन की खरीद करने से पहले डीटीपी कार्यालय से कॉलोनी की वैधता और अवैधता की जानकारी प्राप्त कर लें। सभी तहसीलदार और नायब तहसीलदार भी रजिस्ट्री करने से पहले सरकार द्वारा जारी हिदायतों की पालना करें। यदि कोई व्यक्ति अवैध कालोनियों में कोई प्लॉट खरीदता है तो उसके विरुद्ध भी डीटीपी कार्यालय द्वारा कार्रवाई अमल में लाई जाएगी और जिसमें 50 हजार का जुर्माना व 3 साल की सजा का प्रावधान है। उन्होंने कहा कि ग्रुप हाउसिंग स्कीम में दीनदयाल हाउसिंग स्कीम व अफोर्डेबल ग्रुप हाउसिंग स्कीम के तहत 5 एकड़भूमि पर लाइसेंस प्रदान किया जाता है, जिसमें आवेदन करके कॉलोनी काटने की जरूरी अनुमति प्राप्त की जा सकती है।

महाराणा प्रताप जयंती पर बतौड़ गांव में हर्षोल्लास, बच्चों व ग्रामीणों ने किया नमन

बरवाला, 9 मई (प्रवीन कुमार) : गांव बतौड़ में वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप जी की जयंती बड़े धूमधाम व श्रद्धा भाव से मनाई गई। कार्यक्रम के दौरान पूर्व सरपंच लक्ष्मण बतौड़, समाजसेवी गोपाल राणा खटौली, जसबीर राणा, कैप्टन सतपाल राणा, पंच प्रेमचंद, सोहन सिंह राणा, बुद्धप्रकाश राणा, कृष्ण चंद शर्मा, अजीत राणा, काला राणा, प्रदीप राणा, शरवण राणा सहित भारी संख्या में बच्चों और ग्रामीणों ने महाराणा प्रताप की तस्वीर पर पुष्प अर्पित कर नमन किया। कार्यक्रम में उपस्थित सभी लोगों को लड्डू बांटे गए। इस

अवसर पर पूर्व सरपंच लक्ष्मण बतौड़, कैप्टन सतपाल राणा, गोपाल राणा खटौली व जसबीर राणा ने अपने विचार रखते हुए कहा कि महाराणा प्रताप एक वीर योद्धा थे जिन्होंने अपने प्राणों की परवाह किए बिना कई युद्ध लड़े। उन्होंने कहा कि हमारी भारतीय संस्कृति सबका सम्मान करना और बिना किसी भेदभाव के सभी की सहायता करना सिखाती है। महाराणा प्रताप सभी जातियों को साथ लेकर चलते थे और समरसता का संदेश देते थे। उनके संघर्षों का इतिहास में विशेष स्थान है और वे आज भी प्रेरणा का स्रोत हैं।

भाजपा जिला कार्यालय में हुई एक राष्ट्र एक चुनाव को लेकर महत्वपूर्ण बैठक

कैथल, 9 मई (प्रवेश बहादुर) : बैठक की अध्यक्षता जिलाध्यक्ष ज्योति सैनी ने की। बैठक में मुख्यातिथि के तौर पर एक राष्ट्र-एक चुनाव के प्रदेश सह संयोजक मदन मोहन छाबड़ा ने शिरकत की। जिलाध्यक्ष ज्योति सैनी ने मुख्यातिथि मदन मोहन छाबड़ा को पुष्पगुच्छ देकर समनित किया। मुख्यातिथि मदन मोहन छाबड़ा ने कहा कि एक राष्ट्र-एक चुनाव को सिरे चढ़ाने के लिए भाजपा ने कमर कस ली है। इस मुद्दे पर जहां राजनीतिक स्तर पर प्रयास किए जा रहे हैं वहीं जनमत हासिल करने के लिए विशेष अभियान चलाया जा रहा है। अब हरियाणा भाजपा ने सोशल मीडिया के जरिये जनमत हासिल करने की रणनीति तैयार की

है।

उन्होंने कहा कि युवा व अन्य वर्गों के साथ 100 से ज्यादा सम्मेलन किए गए हैं। पिछले दो महीने से एक राष्ट्र-एक चुनाव अभियान को लेकर चलाई जा रही मुहिम की समीक्षा की। एक राष्ट्र-एक चुनाव के प्रदेश सह संयोजक मदन मोहन छाबड़ा ने दो महीनों में जिलावार आयोजित किए सम्मेलनों का ब्योरा बैठक में प्रस्तुत किया। छाबड़ा ने बताया कि अभी तक 100 से ज्यादा सम्मेलन हो चुके हैं, जिनमें किसान, व्यापारी, युवा, शिक्षक और प्रबुद्ध बुद्धिजीवियों के बीच में पहुंचकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के एक राष्ट्र-एक चुनाव अभियान के साथ आमजन को जोड़ा गया है। अब सोशल मीडिया पर चलेगी एक देश एक चुनाव की मुहिम में कहा कि पीएम के अभियान के साथ आमजन को जोड़ने के लिए सोशल मीडिया और इलेक्ट्रानिक मीडिया के जरिये प्रचार-प्रसार को बढ़ावा दिया जाना है। उन्होंने कहा कि आज हर व्यक्ति सोशल मीडिया से जुड़ा हुआ है, इसलिए जनमत संग्रह के लिए सोशल मीडिया सबसे बड़ा माध्यम बन सकता है। कांग्रेस कर रही इस अभियान का विरोध। एक राष्ट्र-एक चुनाव समिति के सह संयोजक मदन मोहन छाबड़ा ने कहा कि हर व्यक्ति एकमत के साथ समर्थन कर रहा है। विश्वविद्यालयों व कालेजों में आयोजित किए जा रहे सम्मेलनों में युवा और शिक्षक वर्ग के साथ बुद्धिजीवी वर्ग भी एक राष्ट्र-एक चुनाव का पक्षधर है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस आज एक राष्ट्र-एक चुनाव का विरोध कर रही है, लेकिन वर्ष 1967 तक देश में एक साथ लोकसभा और विधानसभा चुनाव हुए हैं। छाबड़ा ने कहा कि कांग्रेस ने अपने राजनीतिक फायदे के लिए देश में अलग-अलग चुनाव कराने की रिवायत शुरू की थी । अलग-अलग चुनाव से देश हर वक्त चुनावी मोड़ में रहता है, जिसके चलते विकास कार्य प्रभावित होते हैं और मतदान भी घट रहा है, जोकि लोकतंत्र के लिए सबसे बड़ा खतरा है। इस मौके पर चैयरमैन कर्मवीर कौल,जिला मीडिया प्रभारी राज रमन दीक्षित अजीत चहल शक्ति सौदा राजेश बिदान सुभाष भगत, रविंदर धीमान प्रदीप भट्ट डॉक्टर जितेंद्र ठुकराल अरुण वर्मा डॉक्टर श्रवण कौशिक सुमित कल्याण विजय भारद्वाज आदि कार्यकर्ता मौजूद थे।

गुरु पूर्णिमा पर 300 से ज्यादा श्रद्धालुओ को हरिद्वार गंगा स्नान करवाएगी आढ़ती एसोसिएशन : सुभाष गुप्ता

तरावड़ी, 9 मई (छाया शर्मा) : गुरु पूर्णिमा के अवसर पर 12 मई को 300 से ज्यादा श्रद्धालुओं का एक जत्था हरिद्वार के लिए रवाना होगा।

आढ़ती एसोसिएशन तरावड़ी की तरफ से 300 से ज्यादा आढ़ती, सामाजिक कार्यकर्ताओं, कर्मचारी एवं पत्रकारो को गुरु पूर्णिमा के अवसर पर हरिद्वार में गंगा स्नान कराया जाएगा। जानकारी देते हुए आढ़ती एसोसिएशन तरावड़ी के प्रधान सुभाष गुप्ता ने बताया कि 12 मई को सुबह करीब 6:00 बजे श्रद्धालुओं से भरे जत्थे की बसें हरिद्वार के लिए रवाना होंगी। सभी श्रद्धालुओं का ठहराव हरिद्वार की अग्रवाल धर्मशाला में होगा। फिर सभी श्रद्धालुओं को आढ़ती एसोसिएशन तरावड़ी की तरफ से गंगा स्नान कराया जाएगा। उन्होंने बताया कि 300 से ज्यादा श्रद्धालुओं के लिए नाश्ते और लंच का इंतजाम किया गया है। काबिलेगौर है कि तरावड़ी अनाज मंडी की तरफ से पहली बार 300 से ज्यादा श्रद्धालु एक साथ हरिद्वार में गंगा स्नान करेंगे।

इस यात्रा से सभी आढ़तियों में उत्साह नजर आ रहा है। गुरु पूर्णिमा का अवसर पर भजन संकीर्तन करते हुए सभी आढ़ती 12 मई को सुबह 6:00 बजे तरावड़ी अनाज मंडी से हरिद्वार के लिए रवाना होंगे।

आपदाओं के समय छात्राओं को बचाव के बारे में दी जानकारी

मूनक, 9 मई (जय भगवान) : राजकीय कन्या महाविद्यालय पाढ़ा कार्यवाहक प्राचार्या सुमन आर्या की अध्यक्षता में विश्व रेडक्रॉस दिवस आयोजन पर छात्राओं जानकारी देते हुए छात्राओं को संबोधित करते हुए कहा कि हर साल 8 मई को रेडक्रॉस और रेड क्रिसेंट मूवमेंट के संस्थापक हेनरी डुनेंट की जयंती के उपलक्ष्य में मनाया जाता है। यह दिन रेड क्रॉस के सिद्धांतों का सम्मान करने और मानवीय सेवा के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए भी मनाया जाता है। विश्व रेडक्रॉस दिवस प्राकृतिक आपदाओं, सशस्त्र संघर्षों और अन्य संकटों से प्रभावित लोगों के लिए सहायता और समर्थन प्रदान करने के महत्व पर जोर देता है, रेडक्रॉस और रेड क्रिसेंट मूवमेंट के छह सिद्धांत हैं मानवता, तटस्थता, निष्पक्षता, स्वतंत्रता, स्वयंसेवक, और एकता। इस कार्यक्रम के इंचार्ज जितेंद्र ने रेडक्रॉस के लक्ष्य पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि रेडक्रॉस का मुख्य उद्देश्य प्राकृतिक व मानवीय आपदाओं के दौरान पीड़ित लोगों की सहायता करना है, चाहे वे किसी भी राष्ट्र या पक्ष से संबंधित हों. इसमें घायल सैनिकों की चिकित्सा, राहत सामग्री प्रदान करना और आपदाओं के समय लोगों की मदद करना शामिल है। भारत में, भारतीय रेडक्रॉस सोसाइटी की स्थापना 1920 में हुई

थी। विश्व रेडक्रॉस और रेड क्रिसेंट दिवस 2025 की आधिकारिक थीम है। मानवता को जीवित रखना। मानवता को जीवित रखना एक ऐसा संदेश है जो आज के चुनौतीपूर्ण समय में अत्यंत प्रासंगिक है, जहाँ संघर्ष, स्वास्थ्य संकट और सामाजिक असमानताएँ लगातार बढ़ रही हैं। यह विषय हमें मानवीय मूल्यों की रक्षा करने की आवश्यकता का स्मरण कराता है और रेड क्रॉस कार्यकर्ताओं को एक श्रद्धांजलि अर्पित करता है, जो जमीन पर शांति, दया और आशा फैलाने के लिए निरंतर प्रयासरत हैं। यह सिर्फ एक थीम नहीं, बल्कि एक आह्वान है कि हम सब मिलकर सेवा, सहानुभूति और सहयोग की भावना से मानवता को जीवित रखें। विश्व रेड क्रॉस दिवस न केवल एक दिन है, बल्कि यह सेवा, साहस, करुणा और मानवता का प्रतीक है। हेनरी ड्युना द्वारा शुरू किया गया यह आंदोलन आज लाखों लोगों को संकट की घड़ी में सहायता प्रदान कर रहा है। इस दिन हम सभी को यह प्रेरणा लेनी चाहिए कि जरूरतमंद की सहायता करना ही सच्चा धर्म है। इस अवसर पर सुदेश रानी, डॉ. कर्मजीत कौर दीपिका और डॉ. विजय मौजूद रहें।

बाबू अनंत राम जनता महाविद्यालय कौल में विश्व रेड क्रॉस दिवस के उपलक्ष्य में प्रतिज्ञा समारोह का हुआ आयोजन

निसिंग/पुंडरी 9 मई (जोगिंद्र सिंह/जगदीश दहिया) : बाबू अनंत राम जनता महाविद्यालय कौल में विश्व रेड क्रॉस दिवस के उपलक्ष्य में प्रतिज्ञा समारोह का आयोजन किया किया। यह आयोजन रेडक्रॉस की मानवीय विरासत को सम्मान देने और विद्यार्थियों में सेवा भावना को जागृत करने के उद्देश्य से आयोजित किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत में कॉलेज के प्राचार्य डॉ. ऋषिपाल ने विश्व रेड क्रॉस दिवस के महत्व के बारे में बच्चों को अवगत कराया। इसके पश्चात विद्यार्थियों ने शपथ

ली कि वे मानवता की सेवा में हमेशा तत्पर रहेंगे और जरूरतमंदों की मदद करेंगे व आपदा के समय सहायता प्रदान करेंगे। विद्यार्थियों ने कहा कि वे रेडक्रॉस के सिद्धान्तों का पालन करेंगे और मानवता के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को निभाने का प्रयास करेंगे। इसके पश्चात यूथ रेडक्रॉस की संयोजिका डॉ. मीनाक्षी ने प्राचार्य डॉ. ऋषिपाल, स्टाफ़ सदस्यों और सभी विद्यार्थियों को धन्यवाद ज्ञापित किया।

एसएमएस मैमोरियल पब्लिक स्कूल में बच्चों ने माँ के त्याग पर किये अनुभव सांझे

प्रधानाचार्य डा. विभा कौशिक बोली : जिंदगी जीने का सही रास्ता दिखाती है मां

तरावड़ी, 9 मई (छाया शर्मा) : एसएमएस मैमोरियल पब्लिक स्कूल तरावड़ी में मातृदिवस बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ विद्यालय के प्रबंधक गुरशरण ग्रेवाल और प्रधानाचार्य डा. विभा कौशिक ने सरस्वती मां के समक्ष दीप प्रज्वलित कर किया। विद्यालय में अनेक रंगारंग कार्यक्रमों का आयोजन भी किया गया। इस कार्यक्रम में छात्रों ने अपनी-अपनी माँ के लिए कविताएँ, नाटक और गीत प्रस्तुत किए। सभी ने अपनी माँ के प्रेम और त्याग के बारे में अपने अनुभव सांझा किए। नन्हे मुन्ने छात्र-छात्राओं के द्वारा नृत्य प्रस्तुति दी, जिसने सबका मन मोह लिया।

विद्यालय की प्राचार्या डा. विभा कौशिक ने सभी माताओं को मातृ दिवस की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि मां को ईश्वर के समान दर्जा दिया गया है। सिर्फ ईश्वर ही नहीं बल्कि वह हमारी गुरु भी होती हैं। बच्चा जब बोलना सीखता है तो वह सबसे पहला शब्द मां या मम्मी ही बोलता है। दुख हो या सुख हर भावना में व्यक्ति को सबसे पहले मां की ही याद आती है। मां से बड़ा और अनमोल धन इस दुनिया में कुछ नहीं है। मातृत्व दिवस इसी मां के प्रति अपना प्यार, लगाव, आभार और सम्मान दिखाने का दिन है। एक मां न सिर्फ बच्चे को जन्म देती है बल्कि अपने सभी सुखों को छोड़कर उसे पाल पोस कर बड़ा करती है। बच्चों व परिवार की खुशियों के लिए अपना सब कुछ त्याग देती है। मां के इसी त्याग, निस्?वार्थ प्रेम और समर्पण को सलाम करने का दिन है। विद्यालय के प्रबंधक गुरशरण ग्रेवाल ने मातृत्व दिवस पर प्रकाश डालते हुए छात्र-छात्राओं को संबोधित करते हुए बताया कि माँ हर जन्म लेने वाले बच्चे को अर्थ देने वाले प्रेम की प्रतिमूर्ति है। लगभग एक घने छायादार पेड़ की तरह जो हमें जीवन के दुखों में ठंडी छाया प्रदान करती है। वह प्रेम और देखभाल का सबसे बड़ा और सबसे अमूल्य स्रोत है जिसने हमारे चेहरे को देखने से पहले ही हमें प्यार करना शुरू कर दिया था। जब हम पैदा होते हैं, वह हमें बहुत प्यार से पालती है। उन्होंने भारत माता को नमन करते हुए उनकी महिमा का बखान किया। भारत को भारत माता कहने का अर्थ है भारत को एक माँ के रूप में देखना, जो जीवन देती है, पालन-पोषण करती है, और अपने बच्चों की रक्षा करती है। भारत माता की जय के साथ कार्यक्रम का समापन किया गया। इस अवसर पर विद्यालय के सभी स्टाफ सदस्य भी मौजूद रहे।

एसपी ओफिस में कार्यरत संदीप कुमार व प्रदीप कुमार एएसआई के पद पर हुए प्रमोट

एसपी आस्था मोदी ने स्टार लगा कर किया सम्मानित व उज्जवल भविष्य के लिए दी शुभकामनाएं

कैथल, 9 मई (प्रवेश बहादुर) : पुलिस प्रवक्ता प्रवीन श्योकंद ने जानकारी देते हुए बताया कि कार्यालय पुलिस अधीक्षक कैथल में कार्यरत संदीप कुमार व प्रदीप कुमार को मुख्य सिपाही से एएसआई के पद पर प्रमोट होने पर एसपी आस्था मोदी ने स्टार लगा कर सम्मानित किया। एसपी आस्था मोदी ने कहा कि

प्रमोशन प्राप्त करने पर पुलिस कर्मचारियों के कंधों पर जिम्मेदारी बढ़ जाती है। क्योंकि प्रमोशन के साथ नई जिम्मेदारी मिलती है। इसलिए इस जिम्मेदारी को ईमानदारी और निष्ठा से निभाना। प्रमोशन पाने वाले एएसआई संदीप कुमार व प्रदीप कुमार ने कहा कि विभाग की ओर से जो भी काम दिया जाएगा उसे पूरी निष्ठा से किया जाएगा। प्रमोशन का पल कर्मचारी के लिए गर्व का पल होता है। इसके लिए कर्मचारी को कड़ी मेहनत और लंबा इंतजार करना पड़ता है।

संत कबीर ने सामाजिक कुरीतियों पर प्रहार कर दुनिया को दिया मानवता और प्रेम का संदेश

हांसी, 9 मई (मनमोहन शर्मा) : गोसाई गेट स्थित आश्रम बाबा सागर नाथ के संत कबीर कुटीर भवन में सामाजसेवी लोगों की एक बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में विश्व के प्रसिद्ध समाज सुधारक संत कबीर दास के विचारों व शिक्षाओं पर चर्चाएं करते हुए महंत सागरनाथ ने कहा कि उन्होंने न केवल सामाजिक कुरीतियों पर प्रहार किया बल्कि दुनियां को मानवता और प्रेम का संदेश भी दिया। उनका दिखाया मार्ग हर पीढ़ी को भाईचारा और सद्भावना के साथ आगे बढऩे के लिए प्रेरित करता रहेगा। महंत ने संत कबीर दास की शिक्षओं को जन-जन तक पहुंचाने हेतु एक सभा का गठन करने का प्रस्ताव रखा। प्रस्तुत प्रस्ताव की सहराना करते हुए उपस्थित सभी सभासदों ने प्रस्ताव का समर्थन किया। महंत सागरनाथ ने पाखंडवाद पर कुठाराघात करने वाले संत शिरोमणी संत कबीर दास के नाम पर ''संत कबीर दास चैरिटेबल ट्रस्ट'' का गठन किया।

बैठक में सर्वसहमति से समाजसेवी सरदार गुरनाम सिंह सोढ़ी को ट्रस्ट का प्रधान चुना गया। ट्रस्ट के अन्य पदाधिकारी मनोनित करने हेतु नवनियुक्त प्रधान को अधिकृत किया गया। उन्होंने सबकी सहमति से महंत सागरनाथ को ट्रस्ट का संरक्षक/संस्थापक, अमीत कुमार को कोषाध्यक्ष, संदीप कुमार को सचिव तथा हैप्पी सिंह को ट्रस्ट का सह-सचिव नियुक्त किया गया। ट्रस्ट ने सर्वप्रथम आई.पी.एस. रैंक अधिकारी ललीत कुमार सैनीपुरा को सम्मानित स्वरूप संत कबीर दास की प्रतिमा सप्रेम भेंट कर आगामी कार्य की रूपरेखा तैयार की। ट्रस्ट ने सर्वसहमति से संत कबीर दास का 628वां प्रकट दिवस जून मास में बड़े धूमधाम के साथ मनाने का निर्णय लिया।

मदर्स डे के उपलक्ष में 14 मई को स्कूल में कराया जाएगा फंक्शन : महिपाल राणा

यमुनानगर, 9 मई (दिनेश कुमार) : गांव खुजूरी के श्रीकृष्णा पब्लिक स्कूल में मदर्स डे के उपलक्ष में होने वाले फंक्शन के लिए बच्चे जी जान से मेहनत कर रहे हैं। बच्चों को अच्छा डांस सीखने के लिए उनकी डांस टीचर भी लगन और मेहनत से बच्चों के साथ जुड़ी है। डांस टीचर अंजलि ने बताया कि हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी में स्कूल में मदर्स डे के उपलक्ष में एक फंक्शन का आयोजन किया जा रहा है जिसमें कक्षा पहली से लेकर कक्षा दसवीं तक के बच्चे भाग लेंगे। स्कूल प्रबंधक महिपाल राणा ने बताया कि स्कूल में निरंतर डांस की क्लासे लगती है जिससे बच्चों के मनोरंजन के साथ-साथ उनका शारीरिक विकास भी होता है डांस क्लास लगाने के बाद बच्चों के दिमाग को एक तरह से आराम मिलता है वहीं बच्चे खुश भी नजर आते हैं स्कूल में कराए जाने वाले फंक्शन में विजेता बच्चों को आकर्षक पुरस्कार देकर सम्मानित किया जाता है और उनका हौसला बढ़ाया जाता है। स्कूल में इस तरह के छोटे-छोटे कार्यक्रमों में भाग लेकर बच्चे उच्च स्तर तक पहुंचाते हैं।

डी.ए.वी महात्मा आनंद स्वामी शताब्दी पब्लिक स्कूल में मनाया गया मातृवंदन दिवस

हांसी, 9 मई (मनमोहन शर्मा) : डी.ए.वी महात्मा आनंद स्वामी शताब्दी पब्लिक स्कूल में मातृ वंदन दिवस बड़ी धूमधाम से मनाया गया। जिसमें सभी बच्चों ने भाग लिया । सबसे पहले विद्यार्थियों ने अपनी माताओं का चरण प्रक्षालन , तिलक माला एवं उपहार द्वारा वंदन किया। बच्चों ने कविता और नृत्य के द्वारा मां की ममता, त्याग वंदना के बारे में बताया। बच्चे अपनी माताओं के लिए सुंदर-सुंदर कार्ड भी बना कर लाए। प्रधानाचार्या शैलजा राणा ने बच्चों को संबोधित करते हुए कहां कि बच्चों का जीवन बनाने में मां का बहुत बड़ा योगदान होता है । बच्चे की सबसे पहली गुरु उसकी मां होती है। इस दुनिया में सबसे कीमती वरदान माँ है और यह प्रकृति की सुंदरता का पहला उपहार है इसलिए माँ को इस धरती पर ममता की देवी कहां जाता है। माताओं के लिए विभिन्न तरह के खेलों का भी आयोजन किया गया । विजेता माताओं कुसुम (दिवांशी , रिया माता) मनीषा (आयूषि माता) रविता (निष्ठा माता) मंजू (दिलदीप माता) को पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया।

जिला की मंडियों में 8 लाख 11 हजार 787 मीट्रिक टन गेहूं की आवक

करनाल, 9 मई (परमजीत कौर) : डी.सी उत्तम सिंह ने बताया कि जिला की मंडियों में गेहूं की आवक निरंतर जारी है। मंडियों में गेहूं की आवक के दृष्टिगत जिला प्रशासन द्वारा सभी आवश्यक प्रबंध पहले से ही पूरे कर लिए गए थे और मंडी में खरीद व्यवस्था सुचारू ढंग से चल रही है। उन्होंने बताया कि वीरवार तक जिला में करीब 8 लाख 11 हजार 787 मीट्रिक टन गेहूं की आवक विभिन्न परचेज सेंटरों व मंडियों में हुई जिसमें से खाद्य आपूर्ति विभाग द्वारा 452672 मीट्रिक टन तथा हैफेड द्वारा 333884 मीट्रिक टन व हरियाणा वेयर हाउसिंग द्वारा 25231 मीट्रिक टन गेहूं खरीदा गया। मंडियों से गेहूं उठान तुरंत करवाने के आदेश खरीद एजेंसी को दिए गए है।

फसल अवशेषों में आग न लगाएं, किसान सही तरीके से करें प्रबंधन : डी.सी उत्तम सिंह ने किसानों से अपील करते हुए कहा कि जो भी किसान मंडी में आएं, वह अपने क्रमानुसार ही आएं ताकि समय पर उनकी फसल की खरीद हो सके। उन्होंने कहा कि किसान खेतों में फानों में आग न लगाएं।

इससे जहां प्रदूषण को बढ़ावा मिलता है, वहीं भूमि की उर्वरा शक्ति भी कम होती है। इसलिए किसानों को चाहिए कि वे फसल अवशेषों में आग न लगाकर उनका सही तरीके से प्रबंधन करें।

थाना रादौर प्रभारी ने किया सामाजिक लोगों के साथ मीटिंग का आयोजन

यमुनानगर, 9 मई (दिनेश कुमार) : पुलिस अधीक्षक सुरेंद्र सिंह भौरिया के मार्गदर्शन में कार्य करते हुए वीरवार शाम को थाना रादौर प्रभारी निरीक्षक नरेंद्र सिंह ने थाना में मौजिज व्यक्तियों के साथ बैठक का आयोजन किया। बैठक में सभी समाज के मौजिज व्यक्तियों ने भाग लिया। थाना प्रभारी द्वारा आमजन को शान्ति और भाईचारा बनाऐ रखने की अपील की गई। सभी समाज के मौजिज व्यक्तियों ने आपसी भाईचारा बनाए रखने तथा शांति व्यवस्था बनाने में पुलिस प्रशासन का भरपूर सहयोग देने का आश्वासन दिया। थाना प्रभारी नरेंद्र सिंह ने बताया कि जिला पुलिस द्वारा जिला में शांति व्यवस्था बनाए रखने के लिए सामाजिक व्यक्तियों और शान्ति समिति के सदस्यों के साथ बैठकों का आयोजन किया जा रहा है। बैठकों के माध्यम से अपील की जा रही है कि मौजूदा माहौल में आपसी भाईचारा बनाकर रखें। पुलिस द्वारा मौजिज व्यक्तियों से अपील की जा रही है कि जो भी शरारती तत्व कानून एवं शांति व्यवस्था और समाज का माहौल को खराब करने वालों की सूचना बिना किसी डर, भय के पुलिस को दें। किसी भी प्रकार की शिकायत मिलने तथा शांति एवं कानून व्यवस्था में किसी भी तरह का अवरुद्ध डालने वालों पर सख्त कारवाई की जाएगी। इन बैठको का मुख्य उद्देश्य क्षेत्र में शांति और कानून व्यवस्था बनाए रखने की अपील करना और आमजन व पुलिस सहयोग को मजबूत करना है। पुलिस द्वारा अपील की जा रही है कि किसी भी तरह की अमर्यादित भाषा किसी व्यक्ति विशेष, जाति, धर्म संप्रदाय को आहत करने की मंशा से पोस्ट के रूप में कोई भी वीडियो, फोटो या अभिलेख ना डालें। अगर किसी व्यक्ति अथवा संस्था द्वारा कोई भी आपत्तिजनक पोस्ट डाली गई तो उसके खिलाफ नियमानुसार कानूनी कारवाई की जाएगी। पुलिस द्वारा अपील की गई है कि कोई भी व्यक्ति सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर किसी प्रकार की भी कोई गलत अफवाह ना फैलाएं।

गीता मॉडल स्कूल में मदर्स डे मनाया गया

पिहोवा, 9 मई (विवेक) : गीता मॉडल स्कूल के प्रांगण में मदर्स डे का कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि कनिका पब्लिक स्कूल करनाल की प्रिंसिपल राज अरोरा व डायरेक्टर जसप्रीत अरोड़ा ने मां सरस्वती के प्रतिबिंब के आगे दीप प्रज्वलित कर किया। कार्यक्रम में स्कूल के विभिन्न क्लब जैसे डांस, योगा, म्यूजिक, आर्ट एंड क्राफ्ट व रंगोली आदि के छात्रों द्वारा सुंदर-सुंदर प्रस्तुतियां देकर अपनी माताओं के प्रति स्नेह को उजागर किया गया। योगा और म्यूजिक क्लब के विद्यार्थियों ने भी अपनी शानदार प्रस्तुति देकर कार्यक्रम को मनमोहक बना दिया। विद्यालय के किड्स विंग के छोटे-छोटे बच्चों ने भी डांस की प्रस्तुति देकर अपनी माताओं के प्रति अपने प्यार और सम्मान को प्रदर्शित किया। माताओं के लिए अनेक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिसमें उन्होंने बढ़-चढ़कर भाग लिया।स्कूल की प्रिंसिपल नरेश रानी ने बताया कि मां प्रकृति की सबसे सुंदर रचना है और मां की ममता और स्नेह और पिता का अनुशासन किसी भी मनुष्य के व्यक्तित्व को निखारने में अहम भूमिका निभाते हैं। कार्यक्रम में प्रबंधक विनय अरोड़ा ने बताया की बच्चे के भविष्य निर्माण में मां की भूमिका अहम होती है। इस अवसर पर कोऑर्डिनेटर, अध्यापकों सहित सभी स्टाफ सदस्य उपस्थित रहे।

डिवाइडर पर टूटी व टेड़ी ग्रील दे रही हादसों को न्यौता, अधिकारी नहीं दे रहे कोई ध्यान

निसिंग, 9 मई (जोगिंद्र सिंह) : निसिंग शहर का तो भगवान ही मालिक है। कहने को तो व्यवस्था करने का जिम्मा अधिकारियों के कंधों पर है। मगर, निसिंग के अधिकारी गहरी नींद में सो रहे हैं। शहर की समस्याओं पर कोई भी ध्यान नहीं दे रहें हैं। खासकर नगर पालिका के अधिकारी ज्यादा ही लापरवाही बरत रहे हैं। शहर में सड़क के बीच बने डिवाइडर पर अवैध कट,टूटे हुए डिवाइडर और वहां पर लगी लोहे की ग्रिल हादसों को निमंत्रण दे रही है। उनकी तरफ न तो पीडब्ल्यूडी और न ही नगर पालिका प्रशासन का ध्यान है। निसिंग में पचास से ज्यादा अवैध कट बने हुए हैं।इन अवैध कटों से हर रोज हादसे हो रहे हैं। डिवाइडर पर ग्रील इसलिए लगाई गई थी, ताकि वाहनों की आवाजाही मे किसी भी प्रकार की कोई भी दिक्कत न हो। कोई व्यक्ति सड़क क्रोस करके दूसरी तरफ ना आ सके। इसलिए ग्रिल लगाई गई थी। डिवाइडर पर ग्रील नगरपालिका द्वारा लगाईं गई थी। कई जगह से ग्रील टुट कर टेड़ी हो गई है। क्षतिग्रस्त लोहे की ग्रील डिवाइडर से इधर-उधर निकल रही है।यह न सिर्फ हादसों का कारण बन सकती है, बल्कि शहर की सुंदरता पर भी एक धब्बा है। पीडब्ल्यूडी विभाग क्षतिग्रस्त डिवाइडर व अवैध कटों की कोई भी सुध नहीं ले रहा है।शहर के बीच में ग्रील टेड़ी व टूटी हुई दिखाई दे रही है। अधिकारी कोई भी ध्यान नहीं दे रहें हैं।

भारत का 'ऑपरेशन सिंदूर' बना आतंकियों का काल : शंटी बजाज

तरावड़ी, 9 मई (छाया शर्मा) : सामाजिक कार्यकर्ता एवं नगरपालिका के पूर्व पार्षद शंटी बजाज ने कहा कि भारत ने कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले का मुंहतोड़ जवाब देते हुए 'ऑपरेशन सिंदूर' के तहत 9 आतंकी ठिकानों पर एयर स्ट्राइक की है और आधी रात को पूरे पाकिस्तान को हिला के रखा दिया, जिसको लेकर जनता में खुशी का माहौल है। उन्होंने भारतीय सेवा की ओर से चलाए गए ऑपरेशन सिंदूर का स्वागत किया। सामाजिक कार्यकर्ता एवं नगरपालिका के पूर्व पार्षद शंटी बजाज ने कहा कि पूरा देश भारत सरकार और सेना के साथ खड़ा है। इस तरह की आतंकवादी गतिविधियां करने वालों पर सख्त से सख्त कार्रवाई की जानी चाहिए। उन्होंने कहा कि आतंकवादियों का जड़ से सफाया किया जाना बेहद जरूरी है। उन्होंने कहा कि आतंकवाद और आतंकवादियों को पनाह देने वालों पर सख्त कार्रवाई की जानी चाहिए। बीते दिनों, जो पहलगाम में आतंकी हमला हुआ था, उसके बाद देश की जनता यही इंतजार कर रही थी की कब आतंकवादियों पर कार्रवाई की जाएगी।

उन्होंने कहा कि इस तरह की आतंकवादी घटनाओं को बिल्कुल सहन नहीं किया जाएगा। भारत देश की सेना आतंकवाद के हर एक ठिकाने पर इस तरह की एयर स्ट्राइक कर उसे नष्ट करेगी।

टी बी बीमारी कोई लाईलाज बीमारी नहीं है इसका होता है पक्का इलाज : डा. सिमी कपूर

कतलाहेड़ी में टी.बी.मुक्त भारत अभियान के तहत कैंप का हुआ आयोजन

निसिंग, 9 मई (जोगिंद्र सिंह) : क्षेत्र के गांव कतलाहेडी में टी.बी.मुक्त भारत अभियान के तहत कैंप का आयोजन किया गया।कैंप सिविल सर्जन करनाल के आदेश अनुसार किया गया। जिसमें उप सिविल सर्जन (जिला टी.बी. अधिकारी) डॉ सिमी कपूर ने शिरकत की।डॉ कपूर ने बताया कि इस तरह के कार्यक्रम पूरे हरियाणा प्रदेश में किए जा रहे है, उन्होंने बताया की यह कैंप 90 दिन के शिविर के कार्यक्रम के माध्यम से अलग-अलग जगह पर किए जा रहे हैं। इस कैंप के माध्यम से लोगों को टी.बी. जैसी बीमारी के बारे में जागरूक करना और मौके पर ही संभावित लोगों का फ्री में चेकअप करना प्रमुख उद्देश्य है। इस कैंप में संभावित टी.बी.मरीजो का एक्स-रे किया गया और साथ ही बलगम की जांच के लिए सैंपल भी लिए गए।उन्होंने बताया की भारत को टी.बी. मुक्त करने के लिए सभी पंचायतो को इसमें सहयोग करने की आवश्यकता है। टी.बी.बीमारी कोई लाइलाज बीमारी नहीं है इसका पूर्ण और पक्का इलाज है। टी . बी रोगी को इलाज के दौरान प्रतिमाह पौष्टिक आहार के लिए धन राशि भी दी जाती हैं जो की डीबीटी के माध्यम से उनके बैंक अकाउंट में जमा किए जाती हैं। इस मौके पर डॉ महेश मेहरा चिकित्सा अधिकारी प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र जुंडला, वरिष्ठ उपचार पर्यवेक्षक सुनील ढांडा, जिला प्रोग्राम कॉर्डिनेटर कमल शर्मा, सीएचओ डॉ विकास, ए. एन. एम चन्द्रकान्ता, मीना व आशा वर्कर मौजूद रही।

हरियाणा राज्य नारकोटिक्स कण्ट्रोल ब्यूरो द्वारा नशे के विरुद्ध बकेट चैलेंज अभियान चलाकर किया जागरूक

यमुनानगर, 9 मई (दिनेश कुमार) : हरियाणा राज्य नारकोटिक्स कण्ट्रोल ब्यूरो के पुलिस महानिदेशक ओपी सिंह, भापुसे के दिशानिर्देशों एवं एस.पी मोहित हांडा, भापुसे और एस.पी पंखुड़ी कुमार के नेतृत्व में नशे के विरुद्ध विभिन्न प्रकार के प्रकल्पों के माध्यम से लोगों को जागरूक करने का अभियान चलाया गया है। ब्यूरो द्वारा न केवल शहरों अपितु गाँव गाँव तक नशे के विरुद्ध प्रचार प्रसार किया है। इनमें मुख्य रूप से गाँव गाँव तक जागरूकता कार्यक्रम, नून लौटा, नुक्कड़ नाटक, बकेट चैलेंज और हृदय परिवर्तन के द्वारा लोगों को नशे से दूर रहने के लिए प्रेरित किया जा रहा है।

आज हरियाणा राज्य नारकोटिक्स कण्ट्रोल के जागरूकता कार्यक्रम एवं पुनर्वास प्रभारी उप निरीक्षक डॉ. अशोक कुमार वर्मा यमुनानगर पहुंचे और नशे के विरुद्ध विभिन्न स्थानों पर जागरूकता कार्यक्रम के अंतर्गत बकेट चैलेंज के माध्यम से लोगों को नशे के विरुद्ध जागरूक किया।

उन्होंने कहा कि सरकार हर प्रकार से नशा मुक्त समाज निर्माण करने में जुटी हुई है। सबको मिलकर इस अभियान को सफल बनाना होगा। उन्होंने बताया कि आज भारत माता के वीर पुत्र वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप जयंती है। हमें उनके जीवन से देश प्रेम की शिक्षा लेनी चाहिए। उन्होंने बताया कि सभी ग्रंथों में लिखा है नशा मनुष्य के जीवन के लिए विष के समान है।

नशा मुक्त अभियान को सफल बनाने के लिए सभी को सहयोग करना होगा। कोई भी व्यक्ति निश्चिन्त होकर हरियाणा राज्य नारकोटिक्स कण्ट्रोल ब्यूरो के हेल्पलाइन नंबर पर अथवा 1933 पर अथवा मानस पर नशे के विरुद्ध गुप्त सूचनाएं दे सकता है।

छात्रों ने किया तू कितनी अच्छी है गीत पर डांस

रतिया, 9 मई (अमन सेठी) : स्थानीय मढ़ कॉलोनी स्थित अपैक्स समार्ट स्कूल में शुक्रवार को मातृ दिवस के उपलक्ष्य में छात्रों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति दी। छात्रों ने तू कितनी अच्छी है गीत और तेरी उंगली पकड़ के चला नृत्य प्रस्तुत किया। कविता पाठ ने कार्यक्रम को भावनात्मक बना दिया। स्कूल में विभिन्न कक्षाओं के लिए रचनात्मक प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। मैनेजमेंट प्रबंधक अशोक मदान ने मातृत्व की महिमा पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि मां के बिना जीवन की कल्पना अधूरी है। माता के प्रति प्रेम और जीवन में उनके द्वारा बच्चों के लिए किए कार्यों के बारे में बताया। प्रधानाचार्या सोनिया अरोड़ा ने बच्चों को संबोधित करते हुए कहा कि मां एक ऐसा शब्द है, जिसमें संपूर्ण सृष्टि की ममता, त्याग, प्रेम और बलिदान समाहित है। इसी मातृत्व की महानता को सम्मान देने और मां के प्रति अपने प्रेम और कृ कृतज्ञता को प्रकट करने के लिए हर साल मदर्स डे मनाया जाता है। यह दिन मां के प्रति हमारे प्रेम, सम्मान और समर्पण को व्यक्त करने का विशेष अवसर है। विद्यालय प्रबंधक शैलेंद्र गोस्वामी ने मातृ दिवस के अवसर पर समस्त माताओं के प्रेम, बलिदान एवं त्याग को रेखांकित करते हुए कहा कि आज भी मां दुनिया का सबसे विश्वसनीय शब्द है। हम सभी को सदैव माता-पिताओं के प्रति समर्पण भाव रखना चाहिए। इस अवसर सोनिया मदान, ज्योतिक म्बोज, कुलवीर, पारुल, अंजलि, सोनिया कटारिया, बबीता, कमल, आदि मौजूद रहे।

खरीद एजेंसियों ने खरीदा 5 लाख 58 हजार 813 एमटी गेहूं : नेहा सिंह

कुरुक्षेत्र, 9 मई (सुदेश कुमार) : उपायुक्त नेहा सिंह ने कहा कि कुरुक्षेत्र के विभिन्न खरीद केन्द्रों और मंडियों में विभिन्न एजेंसियों द्वारा 5 लाख 58 हजार 813 मीट्रिक टन गेहूं खरीदा जा चुका है। इन खरीद केन्द्रों से 99 प्रतिशत लिफ्टिंग का कार्य पूरा किया गया है। उपायुक्त नेहा सिंह ने बातचीत करते हुए कहा कि गेहूं के सीजन में खाद्य आपूर्ति एजेंसी द्वारा 3 लाख 25 हजार 934 मीट्रिक टन गेहूं खरीदा है। इसके अलावा हैफेड ने 201851 मीट्रिक टन, हरियाणा वेयर कारपोरेशन द्वारा 8 हजार 987 एमटी, प्राइवेट एजेंसियों द्वारा 22041 एमटी गेहूं खरीदा है। उन्होंने कहा कि खादय आपूर्ति द्वारा 99 प्रतिशत, हैफेड द्वारा 100 प्रतिशत, हरियाणा वेयर कारपोरेशन द्वारा 100 प्रतिशत और निजी एजेंसियों द्वारा 100 प्रतिशत लिफ्टिंग का कार्य पूरा कर लिया है। उन्होंने कहा कि इस जिले में अब तक 5 लाख 58 हजार 813 एमटी गेहूं खरीदा है, इसमें से 24 हजार 645 एमटी एफसीआई को डिलीवर किया गया है, 5 लाख 55 हजार 413 एमटी गेहूं की लिफ्टिंग की गई है। अभी भी मंडियों में 3400 एमटी गेहूं रखा हुआ है। उन्होंने एजेंसियों के अधिकारियों को निर्देश दिए कि गेहूं की लिफ्टिंग का कार्य जल्द से जल्द पूरा किया जाए।

कुरुक्षेत्र के सभी अधिकारी, कर्मचारी मुख्यालय पर रहेंगे उपस्थित : नेहा सिंह

कुरुक्षेत्र, 9 मई (सुदेश कुमार) : उपायुक्त नेहा सिंह ने कहा कि कुरुक्षेत्र जिले के सभी अधिकारियों व कर्मचारियों को मुख्यालय पर रहना होगा। इसके साथ ही सभी अधिकारी व कर्मचारी अपने मोबाइल को 24 घंटे ऑन रखेंगे। अहम पहलू यह है कि सभी अधिकारियों व कर्मचारियों के अवकाश को भी तुरंत प्रभाव से रद्द कर दिया गया है। उपायुक्त नेहा सिंह ने जारी आदेशों में कहा है कि मुख्य सचिव हरियाणा के आदेशों की अनुपालना में जिला कुरुक्षेत्र में स्थित सभी कार्यालयों में कार्यरत सभी अधिकारियों व कर्मचारियों को हिदायत दी जाती है कि कोई भी अधिकारी, कर्मचारी अवकाश स्वीकृत करवाने से पूर्व कार्यालय से अनुपस्थित नहीं रहेंगे और सभी अधिकारी, कर्मचारी मुख्यालय पर उपस्थित रहेंगे। प्रत्येक अधिकारी, कर्मचारी को सख्त हिदायत दी गई है कि कोई भी अधिकारी, कर्मचारी अपने मोबाइल फोन को स्विच आफ नहीं रखेंगे और 24 घंटे अपने मोबाइल को ऑन रखेंगे। उपायुक्त ने कहा कि कुरुक्षेत्र जिले में आकस्मिक अवकाश,अर्जित अवकाश व बालक देख रेख अवकाश आदि अवकाश पर गए सभी अधिकारियों, कर्मचारियों का अवकाश तुरंत प्रभाव से रद्द किया जाता है और हिदायत दी जाती है कि सभी तुरंत प्रभाव से अपनी डयूटी ज्वाईन करेंगे। यदि कोई अधिकारी, कर्मचारी उपरोक्त आदेशो की पालना नहीं करता और लापरवाही बरतता है तो उसके विरूद्ध हरियाणा सिविल सेवा नियम 2016 के तहत सख्त से सख्त अनुशासनात्मक कार्रवाई अमल में लाई जाएगी।

राष्ट्रीय लोक अदालत में आमजन भुगता सकते है अपना ट्रैफिक चालान

कुरुक्षेत्र, 9 मई (सुदेश कुमार) : जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की सचिव एवं सीजेएम नीतिका भारद्वाज ने कहा कि जिला एवं सत्र न्यायधीश दिनेश कुमार के मार्गदर्शन में जिला विधिक सेवा प्राधिकरण द्वारा 10 मई 2025 को होने वाली राष्ट्रीय लोक अदालत के बारे में आमजन को जागरूक करने के लिए अभियान चलाया गया है।आमजन को जागरूक किया जा रहा है कि वो अपना ट्रैफिक चालान लोक अदालत में आकर भुगत सकते है। जिसके तहत उन्हें कोई समस्या नहीं आएगी और उनका पैसा और समय दोनों में ही बचत होगी।

उत्तर रेलवे

खुली निविदा सुचना संख्या ETrU-T-01-2025-26

वरि. मंडल विद्युत अभियंता/क.वि./ उत्तर रेलवे, अम्बाला छावनी द्वारा भारत के राष्ट्रपति की ओर से निम्नलिखित कार्यों के लिए ई–टेंडरिंग के माध्यम से निविदाये आमंत्रित करते है। इन निविदाओ को प्रत्येक कार्य के आगे दर्शाई गई तिथि को **15:00** बजे तक **www.ireps.gov.in** पर अपलोड किया जा सकता। इनको **15:00** बजे के उपरांत तत्काल खोला जायेगा।

निविदा संख्या	कार्य का विवरण				
ETrU-T-01 -2025-26	बस्सी पठाना स्टेशन के गुड्स साइडिंग में आधे गुड्स रेक के एक हुक प्लेसमेंट के प्रावधान के साथ **50** हर्ट्ज, एकल चरण **25** केवी एसी ओएचई का डिजाइन, आपूर्ति, निर्माण, परीक्षण और कमीशनिंग हेतु कार्य।				
निविदा बंद/ खुलने की तिथि	लगभग लागत	धरोहर राशि	कार्य पूरा करने की अवधि	वैधता अवधि	
02.06.2025	₹ 45,73,244.90/-	₹ 91,500/-	04 माह	60 दिन	

टेण्डर फॉर्म की कीमत: Downloading through IREPS Portal-NIL (₹ 3,000/- Sr.DEE/ TRD/UMB ऑफिस से हार्ड कॉपी के लिए)

1. निविदाकार को सभी जरुरी योग्यता दस्तावेज एवं **PAN/GSTIN and Scanned Copies IREPS** पोर्टल पर अपलोड करनी है। **2.** निविदाकार के पास ई– निविदा में भाग लेने के लिए क्लास-III **Digital Signature Certificate** होनी चाहिए। **3.** कार्य में **GST, BOCWW, Income Tax** एवं नियमानुसार आवश्यक टैक्स लागू होंगे। **4.** टेंडर डॉक्यूमेंट एवं निविदा सूचना की विस्तृत जानकारी के लिए रेलवे वेबसाइट **www.ireps.gov.in** पर जाये।

संख्या: ETrU-T-01-2025-26 दिनांक: 09.05.2025 1380/2025

ग्राहकों की सेवा में मुस्कान के साथ

उत्तर रेलवे

ई–नीलामी नोटिस

भारत के राष्ट्रपति की ओर से, वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक, उत्तर रेलवे, अंबाला छावनी द्वारा ई–नीलामी की जाएगी, जिसका विवरण सारणीबद्ध है–

क्र. सं.	कैटगरी एवं विवरण	Area (क्षेत्रफल)	ई–कैटलॉग	ई–नीलामी की तिथि और समय
1	सरहिन्द रेलवे स्टेशन पर Cloak रूम मनैजमेंट का ठेका आवंटन हेतु।	16.11 sqm.	UMB-PnU-CR-0325	23.05.2025 को 12:00 बजे
2	अंबाला छावनी रेलवे स्टेशन पर Cloak रूम मनैजमेंट का ठेका आवंटन हेतु।	13.38 sqm.	UMB-PnU-CR-0325	23.05.2025 को 12:00 बजे
3	राजपुरा रेलवे स्टेशन पर Cloak रूम मनैजमेंट का ठेका आवंटन हेतु ।	12 sqm.	UMB-PnU-CR-0325	23.05.2025 को 12:00 बजे

ई–नीलामी लीजिंग आमंत्रण सूचना, नीलामी प्रपत्र, एक बार पंजीकरण व अधिक जानकारी हेतु, रेलवे वेबसाईट **www.ireps.gov.in** पर जायें। 1373/2025

ग्राहकों की सेवा में मुस्कान के साथ

आदेश अस्पताल में सुविधाओं से सुसज्जित बर्न आईसीयू का हुआ उद्घाटन

शाहाबाद मारकंडा, 9 मई रूबी) : आदेश मैडिकल कॉलेज व अस्पताल में चिकित्सा सेवाओं की दिशा में एक और ऐतिहासिक कदम बढ़ाते हुए बर्न आईसीयू के साथ नयी बर्न यूनिट शुरू की गई है। अत्याधुनिक सुविधाओं से लैस इस आईसीयू और यूनिट का शुभारंभ आदेश ग्रुप के चेयरमैन डा. एच. एस. गिल द्वारा किया गया। यह नयी बर्न यूनिट आधुनिक चिकित्सा उपकरणों और अनुभवी विशेषज्ञ डॉक्टरों की टीम से सुसज्जित है, जो गंभीर से गंभीर झुलसने, जलने से जुड़े मामलों का इलाज यहीं संभव बनाएगी। खास बात यह है कि इसमें विशेष रूप से एक उच्च स्तरीय (इंटेंसिव केयर यूनिट) भी स्थापित किया गया है, जिससे मरीजों को 24 घंटे गहन चिकित्सा सुविधा मिलेगी।

अब क्षेत्र के लोगों को झुलसने से संबंधित गंभीर उपचार के लिए चंडीगढ़ स्थित पीजीआई जैसे बड़े अस्पतालों का रुख नहीं करना पड़ेगा। आदेश अस्पताल अब स्थानीय स्तर पर ही बर्न जैसी विश्वस्तरीय चिकित्सा सुविधा

उपलब्ध करा रहा है। इस अवसर पर डा. एच. एस. गिल ने कहा आदेश ग्रुप का सदैव प्रयास रहा है कि जनता को विश्वस्तरीय चिकित्सा सेवाएं उपलब्ध कराई जाएं। बर्न यूनिट की यह नयी ब्रांच उसी दिशा में एक मजबूत कदम है। अब झुलसने से संबंधित किसी भी आपात स्थिति में मरीजों को स्थानीय स्तर पर ही सर्वोत्तम इलाज मिल सकेगा। यह नई शुरुआत न केवल चिकित्सा के क्षेत्र में एक उपलब्धि है बल्कि पूरे क्षेत्रवासियों के लिए स्वास्थ्य सेवाओं की एक नई पहल भी है।

इस अवसर पर आदेश ग्रुप के एम.डी. डा. गुणतास सिंह गिल, प्रिंसीपल डा.एन.एस. लांबा, डा. अरमान खोसा गिल, डा. गुरसतिन्द्र सिंह सहित अन्य स्टॉफ मौजूद रहा।

श्री गुरु अर्जुन देव जी का शहीदी पर्व 30 मई को मनेगा

डेरा कारसेवा गुरुद्वारे में गुरु की महिमा के गुणगान के साथ अटूट लंगर बरतेगा

करनाल, 9 मई (संदीप रोहिला) : श्री गुरु पर्व प्रबंधक कमेटी द्वारा करनाल के डेरा कार सेवा गुरुद्वारे में गुरु अर्जुन देव जी का शहीदी दिवस डेरा कार सेवा के प्रमुख पंथ प्रचारक बाबा सुक्खा सिंह जी के मार्गदर्शन में 30 मई, शुक्रवार को मनाया जाएगा। इस अवसर पर सुबह 9 बजे से दीवान सजाया जाएगा। इस कार्यक्रम में भाग लेने से देश भर से रागी ढाडी जत्थे पहुंच रहे हैं। इस अवसर पर गुरु का अटूट लंगर बरता जाएगा। यह जानकारी गुरुपर्व प्रबंधक कमेटी के प्रधान बरिंदर सिंह, महासचिव इंद्रपाल सिंह ने बताया कि शहीदी पर्व कार्यक्रम सुबह 9 से दोपहर 3 बजे तक एवं सायं 6.30 से रात 10.30 बजे तक आयोजित किया जाएगा।

इस अवसर पर पहुंच रहे रागी, ढाडी एवं प्रचारक जत्थों में भाई गुरदित्त सिंह जी (हजूरी रागी) श्री दरबार साहिब श्री अमृतसर साहिब ,भाई गुरप्रीत सिंह जी (हजूरी रागी, पाऊंटा साहिब) कविश्री जत्था भाई प्यारा सिंह जी, फिरोजपुर वाले भाई अमृतपाल सिंह जी (हेड ग्रंथी) गुरुद्वारा मंजी साहिब पातशाही पहली करनाल शामिल हैं। नितनेम एवं पाठ रहरास साहिब जी (भाई मंजूर सिंह जी एवं भाई गुरप्रीत सिंह जी) करेंगे। स्टेज सेक्रेटरी की सेवा भाई दर्शन सिंह जी करेंगे इस अवसर पर गुरु का लंगर अटूट बरता जाएगा।

अब 14 जून तक नि:शुल्क अपडेट करवाएं आधार कार्ड : उत्तम सिंह

करनाल, 9 मई (परमजीत कौर) : डी.सी उत्तम सिंह ने बताया कि सरकारी योजनाओं का लाभ लेने में आधार कार्ड सबसे अहम दस्तावेज है और 10 साल पुराने आधार कार्ड को अपडेट करवाना आवश्यक है। उन्होंने बताया कि यूआईडीएआई द्वारा आधार कार्ड को अपडेट करवाने की अंतिम तिथि 14 जून 2025 कर दी गई है। अब 14 जून 2025 तक आधार कार्ड को निशुल्क अपडेट करवाया जा सकता है। नागरिक स्वयं भी वेबसाइट पर जाकर अपना आधार कार्ड अपडेट कर सकते हैं। इसके अलावा किसी भी सीएससी व आधार सेंटर पर जाकर अपना आधार कार्ड अपडेट करवाया जा सकता है। डी.सी ने बताया कि आधार कार्ड मुफ्त में अपडेट करने की आखिरी तारीख 14 जून 2025 तक बढ़ा दी गई है। आधार की जानकारी मुफ्त में अपडेट करने की सुविधा सिर्फ यूआईडीआई के ऑनलाइन पोर्टल पर ही उपलब्ध है। अपनी पहचान और पते के दस्तावेज पर अपने आधार नंबर से लॉग इन करके अपडेट कर सकते हैं। ऑनलाइन अपडेट की सुविधा सिर्फ उन्हीं लोगों के लिए है, जिनका मोबाइल नंबर उनके आधार से लिंक है। डी.सी ने आमजन से आह्वान करते हुए कहा कि जिन व्यक्तियों ने पिछले 10 सालों में आधार कार्ड को अपडेट नहीं करवाया है, वे अपने आधार कार्ड में समय रहते अपडेशन जरूर करवा लें ताकि उन्हें भविष्य में सरकारी योजना का लाभ लेने व अन्य किसी प्रयोजन में परेशानी व समस्या का सामना न करना पड़े। आधार कार्ड को अपडेट करने के लिए जो दस्तावेज इस्तेमाल करते हैं उस पर आपका नाम, जन्मतिथि सही होनी चाहिए। आधार कार्ड अपडेट कराने के लिए रिहायशी प्रमाण पत्र या अन्य निर्धारित पहचान पत्र ऑनलाइन अपलोड करना होगा। आधार कार्ड धारक द्वारा ऑनलाइन अपडेट करने पर किसी प्रकार के शुल्क की अदायगी नहीं करनी होगी। उन्होंने बताया कि आधार कार्ड धारक माई आधार पोर्टल से आधार ऑनलाइन सेवाओं का लाभ उठा सकते हैं, वहीं माईआधार एप में जहां पहचान पत्र के प्रमाण के रूप में स्वीकार्य दस्तावेजों की सूची भी है और पते का प्रमाण भी उपलब्ध है। उन्होंने जिला वासियों से इस निःशुल्क सेवा का लाभ उठाते हुए आधार कार्ड अपडेट कराने का आह्वान किया है, साथ ही ऑनलाइन सेवाओं का लाभ उठाने के लिए अपने मोबाइल नंबर को आधार में अपडेट रखने की सलाह भी दी है।

आधार सेवाओं का लाभ उठाने के लिए, आधार में मोबाइल नंबर और ईमेल देना ज़रूरी : डी.सी उत्तम सिंह ने बताया कि आधार सेवाओं का लाभ उठाने के लिए आधार में मोबाइल नंबर और ईमेल देना जरूरी है। अगर किसी नागरिक ने अभी तक अपने आधार में मोबाइल नंबर और ईमेल नहीं जोड़ा है, या फिर किसी नागरिक के मौजूदा आधार में मोबाइल नंबर या ईमेल बदल गया है, तो वे इसे नजदीकी अक्षय आधार केंद्र के जरिए अपडेट कर सकते हैं।

नवजात शिशुओं का भी बनवाएं आधार कार्ड, बच्चों का बायोमेट्रिक पाँच साल और 15 साल की उम्र में जरूर करवाएं अपडेट : डी.सी उत्तम सिंह ने बताया कि नवजात शिशुओं का भी आधार कार्ड बनवाना चाहिए। पांच साल से कम उम्र के बच्चों के आधार के लिए बायोमेट्रिक जानकारी नहीं ली जाती। बच्चे का जन्म प्रमाण पत्र और माता-पिता में से किसी एक का आधार, नामांकन के लिए काफी है। बच्चों का बायोमेट्रिक पांच साल और 15 साल की उम्र में जरूर अपडेट करवाना चाहिए। पांच साल की उम्र में जरूरी बायोमेट्रिक अपडेट सात साल की उम्र से पहले और 15 साल की उम्र में जरूरी बायोमेट्रिक अपडेट 17 साल की उम्र से पहले करवाने पर ही मुफ्त अपडेट की सुविधा मिलेगी।

ऐसे अपडेट करें आधार कार्ड : आधार कार्ड अपडेट करने के लिए सबसे पहले ऑफिशियल वेबसाइट पर जाएं। इसके बाद अपडेट आधार के विकल्प पर क्लिक करें। अब आधार नंबर डालकर ओटीपी के जरिए लॉगिन करें। अब आपको आधार कार्ड अपडेट करने के विकल्प पर क्लिक करना होगा। एड्रेस के विकल्प का चुनाव करें। इसके बाद प्रोसीड टू अपडेट आधार पर क्लिक करना होगा। अब अपडेट एड्रेस के संबंधित दस्तावेज अपलोड करें। अपडेट रिक्वेस्ट एक्सेप्ट होने के बाद 14 डिजिट का यूआरएन नंबर जनरेट होगा। इस नंबर को सेव कर लें। कुछ दिनों के बाद आपका आधार अपडेट हो जाएगा। नागरिक रिक्वेस्ट नंबर के जरिए अपना आधार का स्टेटस चेक कर सकते हैं।

दो अवैध असलों सहित स्पेशल डिटेक्टिव युनिट द्वारा आरोपी काबू

कैथल, 9 मई (प्रवेश बहादुर) : अवैध असला-अमुनेशन रखने वाले अपराधियों की धरपकड़ के लिए एसपी आस्था मोदी के निर्देशानुसार चलाई जा रही मुहिम तहत स्पेशल डिटेक्टिव युनिट द्वारा थाना पूंडरी क्षेत्र से एक आरोपी को काबू किया गया है। जिसके कब्जे से 2 अवैध देशी कट्टे व एक कारतुस बरामद हुआ। पुलिस प्रवक्ता ने बताया कि स्पेशल डिटेक्टिव युनिट प्रभारी एसआई रमेश कुमार की अगुवाई में एचसी राजबीर सिंह व सिपाही संदीप कुमार की टीम को गश्त दौरान एक गुप्त सूचना मिली कि गांव कोथ जिला हिसार निवासी राजु अपने पीठु बैग में अवैध देशी कट्टा लिए हुए है।

जो कैथल करनाल रोड़ नजदीक मोहना 152डी फ्लाईओवर के नीचे किसी वाहन के इंतजार में खड़ा है। जिसे तुरंत दबिश देकर काबु किया जा सकता है। सूचना विश्वसनीय होने कारण पुलिस द्वारा 152डी फ्लाईओवर के नीचे दबिश देकर संदिग्ध गांव कोथ कलां जिला हिसार निवासी राजु को काबू कर लिया गया। जांच दौरान आरोपी के कब्जे में पीठु बैग से दो अवैध देशी कट्टे तथा एक कारतुस बरामद हुआ। आरोपी के खिलाफ थाना पूंडरी में शस्त्र अधिनियम तहत मामला दर्ज करके एचसी राजबीर द्वारा आरोपी को गिरफ्तार कर लिया गया। आरोपी का शुक्रवार को अदालत में पेश किया जाएगा।

एएसआई से एसआई बने प्रवीन कुमार व बलराज सिंह

कैथल, 9 मई (प्रवेश बहादुर) : पुलिस प्रवक्ता ने जानकारी देते हुए बताया कि प्रवीन कुमार व बलराज सिंह को एएसआई से सब इंस्पेक्टर के पद पर प्रमोट होने पर एसपी आस्था मोदी ने स्टार लगा कर सम्मानित किया। एसपी आस्था मोदी ने कहा कि प्रमोशन प्राप्त करने पर पुलिस कर्मचारियों के कंधों पर जिम्मेदारी बढ़ जाती है। क्योंकि प्रमोशन के साथ नई जिम्मेदारी मिलती है। इसलिए इस जिम्मेदारी को ईमानदारी और निष्ठा से निभाना। प्रमोशन पाने वाले एसआई प्रवीन कुमार व एसआई बलराज सिंह ने कहा कि विभाग की ओर से जो भी काम दिया जाएगा उसे पूरी निष्ठा से किया जाएगा। एसआई प्रवीन कुमार सीआईए-1 में तथा एसआई बलराज बतौर पुलिस चौकी हरनौली इंचार्ज कार्यरत है।

मॉक ड्रिल, वास्तविक स्थिति और ब्लैक आउट के लिए हर नागरिक के सहयोग की जरूरत : नेहा सिंह

कुरुक्षेत्र, 9 मई (सुदेश कुमार) : डी.सी नेहा सिंह ने कहा कि कुरुक्षेत्र में मॉक ड्रिल, वास्तविक स्थिति और ब्लैक आउट के लिए हर नागरिक के सहयोग की जरूरत है। इस जिले में किसी भी आपदा से निपटने के लिए प्रशासन तैयारी कर रहा है। इस जिले में किसी भी नागरिक को घबराने या चिंता करने की जरूरत नहीं है। सभी नागरिकों के सहयोग के लिए प्रशासन हमेशा तत्पर रहेगा। उपायुक्त नेहा सिंह शुक्रवार को लघु सचिवालय के सभागार में अधिकारियों की एक बैठक को सम्बोधित कर रही थी। इससे पहले उपायुक्त नेहा सिंह ने हर विभाग से स्ट्रीट लाइट, बिजली विभाग से जिले के फीडर व सब स्टेशन, जनस्वास्थ्य विभाग से पीने के पानी की व्यवस्था, फायर विभाग से फायर विभाग द्वारा किए गए प्रबंधों की तैयारियों, जिला नगर आयुक्त,एनएचएआई के साथ-साथ अन्य संबंधित विभागों द्वारा की गई तैयारियों के बारे में रिपोर्ट ली और सख्त निर्देश दिए कि सभी अधिकारी पूरी तरह सतर्क रहेंगे। उन्होंने सभी एसडीएम को अपने-अपने क्षेत्र में आपदा को लेकर हर प्रकार के प्रबंध करने के निर्देश देते हुए कहा कि जिला नगर आयुक्त सुनिश्चित करेगा कि सभी स्ट्रीट लाइट आदेश मिलने के तुरंत बाद बंद किए जाए, केडीबी के अधिकारी ब्रह्मसरोवर, सन्निहित सरोवर के साथ-साथ अधीनस्थ क्षेत्रों, हरियाणा शहरी विकास प्राधिकरण सेक्टर 10,2,30 व 17 में स्ट्रीट लाइट की व्यवस्था देखने, सभी जगहों पर सोलर लाइट बंद करने के निर्देश दिए है। सभी अधिकारी हैड क्वाटर मेंनटेन करेंगे, इस मामले में रत्ती भर भी लापरवाही सहन नहीं की जाएगी। उन्होंने कहा कि प्रशासन की तरफ से आपदा कंट्रोल रूम स्थापित कर दिया गया है। इस कंट्रोल रूम में 01744-221035 दूरभाष पर किसी भी प्रकार की सहायता ले सकता है। इस मौके पर एसडीएम अमन कुमार, एसडीएम पंकज सेतिया, डीएमसी सतेन्द्र सिवाच, सीएमओ डा. सुखबीर सिंह, डीआरओ चेतना चौधरी सहित अन्य अधिकारी मौजूद थे।

ब्लैक आउट की कुरुक्षेत्र में आज रात्रि 7:50 से 8 बजे तक होगी मॉक ड्रिल : डी.सी नेहा सिंह ने कहा कि कुरुक्षेत्र में शनिवार 10 मई को रात्रि 7:50 से लेकर 8 बजे तक ब्लैक आउट की मॉक ड्रिल की जाएगी। इस मॉक ड्रिल में जहां बिजली विभाग, नगर परिषद, नगर पालिका, एनएचएआई, पंचायत विभाग, हरियाणा शहरी विकास प्राधिकरण विभाग सहित सभी विभाग अपने-अपने अधीनस्थ लाइट को निर्धारित समय अवधि तक बंद करना सुनिश्चित करेंगे। उपायुक्त ने नागरिकों के साथ-साथ वाहन चालकों से भी अपील की है कि 10 मई को रात्रि 7:50 से 8 बजे तक ब्लैक आउट मॉक ड्रिल में अपना सहयोग देंगे।

कुरुक्षेत्र में आपातकालीन स्थिति से निपटने के लिए 3 हजार बैड की होगी व्यवस्था : जिला सिविल सर्जन डा. सुखबीर सिंह ने कहा कि कुरुक्षेत्र में किसी भी आपातकालीन स्थिति से निपटने के लिए स्वास्थ्य सेवाओं के पर्याप्त प्रबंध किए गए है। इस जिले में 26 सरकारी और 15 प्राइवेट एंबुलेंस की व्यवस्था की गई है। प्रत्येक एंबुलेंस में स्वास्थ्य अधिकारी और कर्मचारी की ड्यूटी लगा दी गई है। इस जिले में लगभग 3 हजार बैड की व्यवस्था की गई है। इसमें 542 सरकारी और 2414 प्राइवेट अस्पतालों में बैड की व्यवस्था की गई है। उन्होंने कहा कि दवाइयों और यंत्रों की भी पर्याप्त व्यवस्था है। इस जिले में आईएमए के सदस्यों के साथ मीटिंग कर ली गई है और सभी तालमेल के साथ किसी भी आपदा से निपटने के लिए तत्पर रहेंगे। उन्होंने कहा कि प्राइवेट अस्पताल से तालमेल बनाने के लिए एक डिप्टी सीएमओ को नोडल अधिकारी बनाया गया है। इसके साथ ही स्वास्थ्य सेवाओं के लिए नोडल अधिकारियों की नियुक्ति कर दी गई है।

जिला हेड क्वार्टर के साथ-साथ लाडवा, पिहोवा और शाहाबाद में गाड़ियां तैनात : फायर ऑफिसर संदीप ने कहा कि किसी भी आपातकालीन स्थिति से निपटने के सभी प्रबंधों को पूरा कर लिया गया है। जिला में फायर विभाग के पास 20 गाड़ियां है, जिन्हें जिला हेड क्वार्टर के साथ-साथ लाडवा, पिहोवा और शाहाबाद में तैनात किया गया है। सभी 102 कर्मचारियों अधिकारियों का अवकाश रद्द कर दिया गया है। बिजली सप्लाई बंद होने की स्थिति से निपटने के लिए डीजल इंजन का प्रबंध किया जा चुका है। साथ ही गाड़ियों के लिए पेट्रोल भी पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध करवाया जा चुका है।

आज जिला, उपमंडल इन्द्री, असंध व घरौंडा की सभी अदालतों में लगेगी राष्ट्रीय लोक अदालत

करनाल, 9 मई (परमजीत कौर) : सीजेएम एवं जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की सचिव इरम हसन ने बताया कि 10 मई शनिवार को जिला, उपमंडल इन्द्री, असंध व घरौंडा की सभी अदालतों में लंबित मुकदमों के लिए राष्ट्रीय लोक अदालत का आयोजन किया जाएगा। उन्होंने बताया कि इस राष्ट्रीय लोक अदालत के बैंच में प्रिंसिपल न्यायाधीश पारिवारिक कोर्ट प्रवीण कुमार, अतिरिक्त जिला एवं सत्र न्यायाधीश डॉ. रजनीश कुमार शर्मा, अतिरिक्त जिला एवं सत्र न्यायाधीश रजनीश कुमार, मुख्य न्यायिक दण्डाधिकारी खुशबू गोयल, अतिरिक्त सिविल जज (सिनियर डिवीजन) असंध हरीश सब्रवाल, अतिरिक्त सिविल जज (सिनियर डिवीजन) इंद्री उदय प्रताप व अतिरिक्त सिविल जज (सिनियर डिवीजन) घरौंडा गौरंग शर्मा, सिविल जज (जूनियर डिवीजन) अभिषेक वर्मा, सिविल जज (जूनियर डिवीजन) नितिका बंसल शामिल हैं। उन्होंने जन साधारण से अपील की कि वे राष्ट्रीय लोक अदालत में अपने लम्बित मुकदमों का निपटारा करवाएं। उन्होंने यह भी बताया कि लोक अदालत में निपटारा होने पर किसी की हार नहीं होती, आपसी रजामंदी से मामलों का निपटारा होता है और इससे समय व धन की बचत होती है। लोक अदालत के निर्णय पर आगे अपील भी नहीं होती। अधिक जानकारी के लिए जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के हैल्पलाइन नं. 0184-2266138 पर संपर्क किया जा सकता है।

अपोलो इंटरनैशनल स्कूल में बच्चों ने मातृदिवस पर बिखेरे सांस्कृतिक रंग

तरावड़ी, 9 मई (छाया शर्मा) : अपोलो इंटरनैशनल स्कूल दादूपुर खुर्द में मातृ दिवस के उपलक्ष्य में छात्रों ने सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति दी।

बच्चों ने मनभावन रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किए। कार्यक्रम का प्रारंभ गणेश वंदना के साथ हुआ। बच्चों ने सुंदर मन भावन नाटक प्रस्तुत किया। जिसने सभी का मन मोह लिया। मातृ दिवस के अवसर पर माताओं को अवार्ड देकर उन्हें सम्मानित किया गया। इस दौरान राजीव मिश्रा ने बच्चों को संबोधित करते हुए कहा कि मां एक ऐसा शब्द है, जिसमें संपूर्ण सृष्टि की ममता, त्याग, प्रेम और बलिदान समाहित है। इसी मातृत्व की महानता को सम्मान देने और मां के प्रति अपने प्रेम और कृतज्ञता को प्रकट करने के लिए हर साल मदर्स डे मनाया जाता है। यह दिन मां के प्रति हमारे प्रेम, सम्मान और समर्पण को व्यक्त करने का विशेष अवसर है। मातृ दिवस के अवसर पर समस्त माताओं के प्रेम, बलिदान एवं त्याग को रेखांकित करते हुए कहा कि आज भी मां दुनिया का सबसे विश्वसनीय शब्द है। हम सभी को सदैव माता-पिता के प्रति समर्पण भाव रखना चाहिए। प्रधानाचार्या रजनी शर्मा ने सभी को मातृ दिवस की शुभकामनाएं दी।

परमानेंट लोक अदालत में हल किए 141 केस

कुरुक्षेत्र, 9 मई (सुदेश कुमार) : जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की सचिव एवं सीजेएम नीतिका भारद्वाज ने कहा कि परमानेंट लोक अदालत में जिला एवं सत्र न्यायाधीश दिनेश कुमार मित्तल के मार्गदर्शन में जिला विधिक सेवा प्राधिकरण द्वारा एडीआर सेंटर में परमानेंट लोक अदालत का आयोजन किया गया। सीजेएम नीतिका भारद्वाज ने कहा कि इस परमानेंट लोक अदालत के चेयरमैन प्रवीण गुप्ता की अध्यक्षता में बैंच गठित किया गया। इस गठित बैंच के सदस्य प्रेम चंद शर्मा और तृप्ता शर्मा द्वारा 1711 केस इस लोक अदालत में लिए गए और 141 केस हल किए गए। इनमें से 7 केसों में सेटलमेंट राशि 964379 रही है।

मुख्य खेल मैदान को राज्य स्तरीय योग कार्यक्रम के लिए प्रस्तावित : डा. जयदीप आर्य

हरियाणा योग आयोग की टीम ने कुरुक्षेत्र के कई स्थानों का किया दौरा

कुरुक्षेत्र, 9 मई (सुदेश कुमार) : हरियाणा योग आयोग के अध्यक्ष डॉ. जयदीप आर्य ने टीम के साथ अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस-2025 के राज्य स्तरीय समारोह की तैयारियां के लिए कुरुक्षेत्र में कई स्थलों का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान कार्यक्रम को लेकर विस्तार से चर्चा की, ताकि राज्य स्तरीय कार्यक्रम को सफल बनाया जाए। निरीक्षण के दौरान मुख्य खेल मैदान एवं बहुउद्देशीय हॉल (हॉकी ग्राउंड के निकट) को लगभग 15 एकड़ के क्षेत्रफल तथा उपयुक्त सुविधाओं के कारण राज्य स्तरीय योग आयोजन के लिए प्रस्तावित स्थान माना गया। डॉ. जयदीप आर्य ने कहा कि कुरुक्षेत्र अध्यात्म और संस्कृति की भूमि है। योग दिवस जैसे वैश्विक आयोजन के लिए एक अत्यंत प्रतीकात्मक और प्रेरणादायक स्थान है। उन्होंने कहा कि इस कार्यक्रम में मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी इस भव्य कार्यक्रम की शोभा बढ़ाएंगे। निरीक्षण के पश्चात एक प्राथमिक रिपोर्ट संबंधित विभागों को सौंप दी जाएगी। अंतिम निरीक्षण चरण आगामी दिनों में किया जाएगा। हरियाणा योग आयोग द्वारा जिला प्रशासन और सभी संबंधित विभागों के सहयोग से इस आयोजन को ऐतिहासिक और भव्य स्वरूप प्रदान करने की दिशा में कार्य प्रारंभ कर दिया गया है। इस अवसर पर कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. वीरेन्द्र पाल, हरियाणा योग आयोग के सदस्य एवं जिला समन्वयक डॉ. मनीश कुकरेजा, केयूके खेल विभाग निदेशक डॉ. सतीश राणा, जिला योग कोऑर्डिनेटर डॉ. जागीर सिंह, योग प्रशिक्षक श्री रमेश कुमार मौजूद रहे।

भारत-पाक तनाव के चलते फायर ब्रिगेड एवं आपात सेवाएं पूरी तरह से मुस्तैद

चंडीगढ़, 9 मई (निस) भारत और पाकिस्तान के बीच मौजूदा तनाव के मद्देनजर पंजाब सरकार ने राज्य की फायर ब्रिगेड और आपातकालीन सेवाओं को तैयार रखने के लिए तत्काल कदम उठाए हैं।स्थानीय निकाय मंत्री डॉ. रवजोत सिंह ने सख्त निर्देश जारी करते हुए फायर ब्रिगेड स्टाफ की सभी छुट्टियाँ रद्द कर दी हैं और पंजाब भर में संवेदनशील स्थानों पर उन्हें 24 घंटे तैनात रहने के लिए कहा गया है। उन्होंने कहा कि युद्ध एक बड़ी आपात स्थिति है और फायर ब्रिगेड ऐसी परिस्थितियों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। उन्हें अधिकारियों को मॉक ड्रिल करने, यह सुनिश्चित करने के लिए कि सभी उपकरण पूरी तरह से काम कर रहे हैं और किसी भी आपात स्थिति में तेज प्रतिक्रिया के लिए फौज के अधिकारियों के साथ निरंतर संचार बनाए रखने के निर्देश दिए गए हैं। अधिकारियों को हर समय अपने मोबाइल फोन चालू रखने और हाई अलर्ट पर रहने के निर्देश दिए गए हैं। डॉ. रवजोत सिंह ने कहा कि मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान की अगुवाई वाली राज्य सरकार लोगों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए पूरी तरह वचनबद्ध है और किसी भी हंगामी परिस्थितियों से प्रभावशाली ढंग से निपटने के लिए सरकार द्वारा सभी आवश्यक संसाधन जुटाए गए हैं। तेजी से प्रतिक्रिया सुनिश्चित करने के लिए कैबिनेट मंत्री ने फायर ब्रिगेड अधिकारियों को डिप्टी कमिश्नरों के साथ निकटता से तालमेल कर संवेदनशील स्थानों पर रणनीतिक तौर पर फायर टेंडर (अग्निशमक या आपातकालीन वाहन) तैनात करने के लिए कहा है। उन्होंने आगे कहा कि तैयारियों की समीक्षा के लिए नियमित बैठकें करने के साथ-साथ तुरंत सभी आवश्यक प्रबंध पूरे किए जाने चाहिए।लोगों को भरोसा दिलाया कि स्थिति नियंत्रण में है नागरिकों से न घबराने की अपील की।

तनावपूर्ण माहौल के बाद फैल रही अफवाहों के बीच प्रशासन की लोगों से खास अपील

अजनाला 9 मई (निस) पहलगाम हमले के बाद गत रात्रि भारत द्वारा पाकिस्तान में आतंकवादी ठिकानों पर किए गए हमले को लेकर पंजाब के सीमावर्ती गांवों के आम लोगों में तरह-तरह की अफवाहें फैलाई जा रही हैं। कहा जा रहा है कि, कंटीली तार से सटे गांवों को खाली कराने के आदेश दे दिए गए हैं। कल रात कुछ स्थानों पर गोलाबारी हुई, बम गिरे और लोगों को सुरक्षित स्थानों पर जाने को कहा गया। इन अफवाहों पर विराम लगाते हुए एसडीएम अजनाला ने कहा कि प्रशासन ने सिर्फ आज के लिए स्कूल-कॉलेज बंद किए हैं और इसके अलावा प्रशासन की ओर से कोई अन्य निर्देश जारी नहीं किए गए हैं और न ही किसी को गांव छोड़ने के लिए कहा जा रहा है। उन्होंने लोगों से ऐसी झूठी अफवाहों से बचने और आपस में शांति बनाए रखने की अपील की। इसके अलावा प्रशासन आम जनता को सरकार द्वारा जारी हिदायतों के अनुसार जागरूक करेगा तथा आम जनता को हर प्रकार की सहायता उपलब्ध करवाने के लिए प्रशासन पूरी तरह प्रतिबद्ध रहेगा।

याचिका पर हाईकोर्ट का बड़ा फैसला, जानें अदालत ने क्या कहा

चंडीगढ़ 9 मई (निस) भाखड़ा-ब्यास प्रबंधन बोर्ड (बी.बी.एम.बी.) की याचिका पर पंजाब एवं हरियाणा हाईकोर्ट द्वारा बड़ा फैसला सुनाया गया है। अदालत ने पंजाब सरकार और पंजाब पुलिस को सख्त आदेश जारी किए हैं डैंम और कंट्रेल रूम के कामों में दखल न दिया जाए। अदालत ने पंजाब सरकार से केंद्रीय गृह सचिव की बैठक में लिए गए फैसले को स्वीकार करने को कहा। हालांकि, कोर्ट ने यह भी कहा कि कानून के मुताबिक पंजाब सरकार डैम पर पंजाब पुलिस तैनात कर सकती है। कोर्ट ने यह भी कहा कि अगर पंजाब सरकार को कोई आपत्ति है तो वह बी.बी.एम.बी. के चेयरमैन के समक्ष अपना पक्ष रख सकती है। गौरतलब है कि बी.बी.एम.बी. ने पानी के मुद्दे पर हाईकोर्ट का दरवाजा खटखटाया था, जिसके बाद आज कोर्ट में इस मामले की सुनवाई हुई।

अमृतसर के बिजली बुनियादी ढांचे में प्रमुख उपलब्धियों की घोषणा

चंडीगढ़, 9 मई (निस)पंजाब के बिजली मंत्री स. हरभजन सिंह ई.टी.ओ. ने आज वित्तीय वर्ष 2024-25 के लिए रिवैम्प्ड डिस्ट्रीब्यूशन सेक्टर स्कीम (आर.डी.एस.एस.) के तहत अमृतसर के बिजली वितरण नेटवर्क के आधुनिकीकरण संबंधी प्रगति पर प्रकाश डाला।उन्होंने बताया कि अमृतसर एक प्रमुख धार्मिक, सांस्कृतिक और आर्थिक केंद्र के रूप में उभर रहा है, जिसके चलते मुख्यमंत्री स. भगवंत सिंह मान के नेतृत्व वाली सरकार ने नुकसान को कम करने, कुशलता बढ़ाने और निवासियों व व्यवसायों को निर्बाध बिजली आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए इसके पुराने बिजली ढांचे को अपग्रेड करने को प्राथमिकता दी है। उन्होंने कहा कि यह पहल बुनियादी ढांचे की मजबूती, वोल्टेज की स्थिरता, तकनीकी और वाणिज्यिक नुकसानों को कम करने और भविष्य में ग्रिड को सुरक्षित बनाने के लिए स्मार्ट तकनीकों को अपनाने जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों पर केंद्रित है। इस पहल में बिजली ट्रांसफार्मरों का विस्तार, पुराने कंडक्टरों को हाई-टेंपरेचर लो-सैग (एच.टी.एल.एस.) केबलों से बदलना, एडवांस्ड डिस्ट्रीब्यूशन ट्रांसफार्मर लगाना और चोरी वाले व पुराने संवेदनशील क्षेत्रों में भूमिगत केबलिंग करना शामिल है। इसके अलावा, संचालन संबंधी पारदर्शिता और उपभोक्ताओं को बेहतर ढंग से सेवा प्रदान करने के लिए स्मार्ट मीटरों, एस.सी.ए.डी.ए. प्रणालियों और जी.आई.एस.-आधारित निगरानी विधियों को स्थापित करने में तेजी लाई गई है। परियोजना की उपलब्धियों पर प्रकाश डालते हुए, स. हरभजन सिंह ई.टी.ओ. ने बताया कि पाँच 12.5 एम.वी.ए. क्षमता वाले बिजली ट्रांसफार्मरों को 20 एम.वी.ए. तक अपग्रेड किया गया है, जबकि चार 20 एम.वी.ए. यूनिटों को 31.5 एम.वी.ए. तक अपग्रेड किया गया है। इसी तरह, ग्रिड की क्षमता को बढ़ाने के लिए पाँच नए 100 एम.वी.ए. ट्रांसफार्मर लगाए गए हैं। उन्होंने कहा कि 5,200 नए डिस्ट्रीब्यूशन ट्रांसफार्मर लगाने और 4,060 ओवरलोड यूनिटों को बदलने के साथ-साथ 508 किलोमीटर से अधिक हाई-टेंशन (एच.टी.) लाइनों और 299 किलोमीटर लो-टेंशन (एल.टी.) लाइनों को अपग्रेड किया गया। लोड प्रबंधन को अनुकूलित बनाने के लिए, 60 फीडरों को विभाजित किया गया है और बिजली की अधिक चोरी वाले क्षेत्रों में एरियल बंचड केबल (ए.बी.सी.) लगाई गई हैं, जिससे एग्रीगेट टेक्निकल एंड कमर्शियल (ए.टी. एंड सी) नुकसानों में 2 प्रतिशत की कमी आई।

घर में सो रहे 2 सगे भाइयों के साथ घटी अनहोनी, एक की मौत

रूपनगर 9 मई (निस) रूपनगर के निकटवर्ती गांव टपरियां में बीती रात 2 भाइयों को सांप ने डस लिया, जिनमें से 4 वर्षीय छोटे भाई की मौत हो गई तथा दूसरे को उपचार के लिए पी.जी.आई. रैफर कर दिया गया, जहां उसकी हालत स्थिर बताई जा रही है। प्राप्त जानकारी के अनुसार मृतकों की पहचान 4 वर्षीय आनंद तथा उसके बड़े भाई 10 वर्षीय सागर के रूप में हुई है। परिजनों के अनुसार मृतक आनंद को सांप ने चेहरे पर तीन-चार बार डसा, जिससे उसकी मौत हो गई परिजनों ने बताया कि इन दोनों भाइयों को रात को करीब 11-12 बजे सांप ने डसा तथा तुरंत ग्रामीणों की मदद से उन्हें उपचार के लिए सिविल अस्पताल रूपनगर ले जाया गया, जहां चिकित्सकों ने आनंद को मृत घोषित कर दिया, जबकि सागर को पी.जी.आई. रैफर कर दिया गया। ग्रामीणों ने बताया कि यह प्रवासी परिवार गांव कोटला टपरियां में मोटर पर रह रहा था, जो मूल रूप से बिहार का रहने वाले हैं।

पंजाब में ड्राइविंग लाइसेंस बनवाना हुआ मुश्किल! सैंकड़ों लोग परेशान

जालंधर 9 मई (निस) पंजाब सरकार द्वारा डिजिटल सिस्टम जरिए सेवाओं को पारदर्शी और सुगम बनाने के उद्देश्य से स्थापित किए गए ऑटोमेटेड ड्राइविंग टैस्ट सैंटर, नजदीक बस स्टैंड में सोमवार को एक बार फिर तकनीकी खामी ने सैंकड़ों लोगों को परेशानी का कारण बना। इस सैंटर पर दोपहर 2 बजे सर्वर पूरी तरह ठप्प हो गया, जिससे ड्राइविंग लाइसैंस बनवाने आए लोगों को घंटों तक इंतजार करना पड़ा। शाम तक के लंबे इंतजार और जानकारी के अभाव में आवेदकों को काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ा। सैंटर पर दोपहिया और चारपहिया वाहनों के लिए रूटीन ड्राइविंग टैस्ट सुबह शुरू हो गए थे लेकिन जैसे ही दोपहर का वक्त हुआ, सिस्टम ने काम करना बंद कर दिया। सुबह से ही सैंटर के बाहर लोगों की लंबी कतारें लगनी शुरू हो गई थीं। स्कूटर, मोटरसाइकिल और कार लेकर छात्र, महिलाएं, नौकरीपेशा लोग और बुजुर्ग बड़ी उम्मीद के साथ पहुंचे थे। कुछ स्कूल और कॉलेज के छात्र छुट्टी लेकर आए थे, तो कुछ महिलाओं ने अपने घर के कामकाज से समय निकालकर केंद्र पर दस्तक दी थी। हालांकि सुबह का टैस्टिंग कार्य रूटीन की तरह सुचारू रूप से चलता रहा, लेकिन जैसे ही घड़ी ने दोपहर 2 बजे का समय पार किया, सर्वर ने पूरी तरह से जवाब दे दिया। सैंटर के अधिकारियों ने शुरूआत में इसे 'क्षणिक समस्या' बताते हुए लोगों को प्रतीक्षा करने को कहा, लेकिन जैसे-जैसे समय बीतता गया, सैंटर पर मायूसी और झुंझलाहट का माहौल बढ़ता गया। एक ओर सर्वर की समस्या से जूझ रहे लोग इंतजार में बैठे रहे, दूसरी ओर तेज धूप और उमस ने उनके धैर्य की परीक्षा लेना शुरू कर दी। सैंटर में न तो पीने के पानी की कोई उचित व्यवस्था थी, न ही बैठने का कोई माकूल इंतज़ाम। कतार में खड़े कुछ बुजुर्ग तो ऐसी हालत में आ गए कि उन्हें छांव में बैठाना पड़ा। एक महिला आवेदक ने गुस्से में कहा, हम छोटे बच्चों को घर छोड़कर यहां आए हैं।

तनाव बीच लोगों में मची हलचल, मॉल्स के बाहर लगी लंबी कतारें

जालंधर 9 मई (निस) भारत सरकार द्वारा किए गए ऑपरेशन %सिंदूर% के बाद पूरे देश के लोगों हलचल मच गई है। वहीं इसके बाद लोगों में दहशत का माहौल पाया जा रहा है। लोगों द्वारा राशन व जरूरी वस्तुओं को स्टॉक किया जा रहा है ताकि एमरजेंसी की स्थिती अगर आती है तो परेशानी का सामना न करना पड़े। इस दौरान आज सुबह से ही बाजारों और शहर को मॉलों में लोगों की भीड़ जुट गई है और लोग डर के साय में है। इसके साथ ही पैट्रोल पंपों पर भी भीड़ जुटी हुई है। वहीं लोगों का कहना है कि लगातार बढ़ रहे तनाव के कारण अगल लॉकडाउन जैसे हालात बनते हैं तो उनके घरों में जरुरत का सामान होना चाहिए। वहीं प्रशासन द्वारा लोगों से पैनिक न करने की अपील की जा रही है।

पाकिस्तान का हर हमला नाकाम

पृष्ठ एक का शेष ...इरादे से ऐसी गलतबयानी कर रहा है।

पाकिस्तान ने नागरिक विमानों को ढाल बनाया- विदेश मंत्रालय ने बताया कि पाक वायुसेना ने बड़े पैमाने पर हमले किए, बठिंडा स्टेशन पर हमले की कोशिश की गई।

क्रिकेट स्टेडियम को बम से उड़ाने की धमकी

चेन्नई में क्रिकेट स्टेडियम को बम से उड़ाने की धमकी मिली है। धमकी भरे ईमेल में लिखा गया कि अगर यहां क्रिकेट कार्यक्रम आयोजित किए गए तो बम विस्फोट किया जाएगा।

चंडीगढ़ के हॉस्टल में बम की धमकी-चंडीगढ़ के सेक्टर 3 स्थित स्क्र हॉस्टल में बम की धमकी मिली है। पुलिस, बॉम्ब स्क्वॉड और फायर ब्रिगेड की टीम हॉस्टल की तलाशी ली। पुलिस का कहना है कि यह एक फेक कॉल थी।

गुजरात में पटाखे और ड्रोन बैन

गुजरात के गृह मंत्री हर्ष संघवी ने 15 मई तक पटाखे और ड्रोन बैन कर दिए हैं। गुजरात सरकार ने इसके तहत आदेश जारी किए हैं।

पाक ने अपने एफ-16 लड़ाकू विमानों की जगह बदली

भारत की सैन्य कार्रवाई के बाद पाकिस्तान में खलबली मच गई है। ताज़ा जानकारी के अनुसार, पाकिस्तान की हवाइसेना ने अपने स्न-16 ब्लॉक 52+ लड़ाकू विमानों में से आधे विमानों को अरब सागर तट पर स्थित ग्वादर के पास पासनाई एयरफील्ड में स्थानांतरित कर दिया है। यह कदम पाकिस्तान की ओर से उठाया गया एक रणनीतिक निर्णय माना जा रहा है, जिसका मुख्य उद्देश्य भारत के स्-400 ट्रायंफ एयर डिफेंस सिस्टम द्वारा इन विमानों की पहचान और नष्ट होने से बचना है।

पंजाब में नए दिशा निर्देश ...

के लिए चंडीगढ़ प्रशासन और पुलिस के सोशल मीडिया हैंडल को फॉलो करें। चंडीगढ़ में स्थिति सामान्य है। दिन में सारी मार्केट खुली है, डरने की कोई स्थिति नहीं है। एसएसपी के मुताबिक उन्हें कल रात और आज सुबह 9 बजे के आसपास अलर्ट मिला था, दोनों ही स्थिति में सायरन बजाया गया। लोगों ने ब्लैकआउट में बहुत अच्छा सहयोग भी किया है। इसके साथ ही लोगों से अपील है कि दिशानिर्देशों को अच्छे से पढ़े और समझें।

फिर मिले पाकिस्तानी मिसाइल के टुकड़े-पंजाब के जिला अमृतसर में एक बार मिसाइल के टुकड़े मिलने की सूचना मिली है। जानकारी के मुताबिक, गांव मक्खनविंडी में पाकिस्तानी मिसाइल का टुकड़े मिले है। सेना के अधिकारियों द्वारा जांच करने पर पाया गया कि यह सक्रिय है, जिसे आज सुबह सेना की एक टीम ने डिफ्यूज कर दिया। सेना ने किसी भी अप्रिय घटना को रोकने के लिए इस दिशा में यातायात रोक दिया। वहीं इंडियन एयरफोर्स ने मिसाइल के इस टुक्कड़ों को सफलतापूर्वक नष्ट कर दिया गया। वहीं आपको बता दें कि अमृतसर में लोगों से अपील की जा रही है कि वह शाम को 7 बजे से सुबह 6 बजे तक अपने घरों की लाइटें बंद रखें ताकि दुश्मन अपनी किसी भी चाल में कामयाब न हो सकें।

विदेश मंत्रालय ...

पृष्ठ एक का शेष ...हाईअलर्ट मोड पर है। काशी विश्वनाथ मंदिर को अभेद सुरक्षा में कर दिया गया है। थल, जल और नभ तीनों जगहों से सेना-पुलिस काशी की निगरानी कर रही है।

प्रदेश के सभी धार्मिक स्थलों पर सुरक्षाबलों की संख्या बढ़ा दी गई है। काशी विश्वनाथ मंदिर में 600 से अधिक जवान तैनात किए गए हैं जो आम दिनों से अधिक हैं। शुक्रवार सुबह में फैंटम बाइक पर 200 जवान सड़क पर उतरे। लोगों को सुरक्षा का एहसास दिलाया। ड्रोन दिनभर शहर के चप्पे-चप्पे पर नजर रख रहे हैं और गतिविधियों को रिकार्ड कर रहे है। डीजीपी के निर्देश पर इन शहरों की भी सुरक्षा और चौकसी बढ़ा दी गई है।

पुंछ में गोलीबारी ...

चालेरी इलाके के लयकत हुसैन शामिल हैं।

पाकिस्तान को दिया जा रहा करारा जवाब-एडीजीपीआई ने एक्स पर कहा कि भारतीय सेना राष्ट्र की संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता की रक्षा के लिए प्रतिबद्ध है।

सभी नापाक इरादों का बलपूर्वक जवाब दिया जाएगा। भारत ने गुरुवार रात को जम्मू और पठानकोट सहित सैन्य स्थलों पर ड्रोन और मिसाइलों से हमला करने के पाकिस्तान के नए प्रयासों को विफल कर दिया।

संक्षिप्त समाचार

विदेश जाने के नाम पर एजैंट ने ठगे लाखों, मामला दर्ज

टांडा उड़मुड़ 9 मई (निस) टांडा पुलिस ने एक व्यक्ति को वर्क परमिट देने और इंगलैंड भेजने का झांसा देकर 9 लाख रुपए की ठगी करने के आरोप में एक एजैंट के खिलाफ मामला दर्ज किया है। थाना मुखी टांडा इंस्पैक्टर गुरिंदरजीत सिंह नागरा ने बताया कि पुलिस ने यह मामला ठगी का शिकार हुए हरमिंदर सिंह पुत्र बलबीर सिंह निवासी रामपुर सीकरी के बयान के आधार पर पर एजैंट साक्षी शर्मा पत्नी साजन मल्होत्रा निवासी पुराना अस्पताल कपूरथला के खिलाफ दर्ज किया है। अपने बयान में हरमिंदर सिंह ने कहा कि उसे वर्क परमिट देने और इंगलैंड भेजने का झांसा ठगी की गई। उसने रकम लेने के बावजूद न तो वर्क परमिट पर विदेश भेजा गया और न ही उनका पैसा वापस किया गया।

पंजाब में गैस लीक होने से 3 की मौत, मची भगदड़

बठिंडा 9 मई (निस) पंजाब में एक बार फिर गैस लीक होने की खबर सामने आई है, जिसमें 3 लोगों की दर्दनाक मौत हो गई। मिली जानकारी के अनुसार जिला बठिंडा में आज गैस लीक हो गई, जिससे मौके पर भगदड़ मच गई। जिले के तलवंडी साबो स्थित रामा मंडी रिफाइनरी में अमोनिया गैस रिसाव के कारण 3 कर्मचारियों की मौत हो गई, जिसके बाद मौके पर भगदड़ मच गई। फिलहाल गैस रिसाव को रोकने के लिए बचाव अभियान चलाया जा रहा है। बताया जा रहा है कि, बठिंडा जिले में सीवरेज ट्रीटमेंट प्लांट की सफाई के दौरान गैस चढ़ने से 3 कर्मचारियों की मौत हो गई है, जबकि एक हालत गंभीर बनी हुई है। दरअसल, रिफाइनरी की सफाई ठेकेदार कंपनी के 4 कर्मचारियों द्वारा की जा रही थी। इस दौरान 4 कर्मचारियों को सांस लेने में दिक्कत होने लगी। इसकी सूचना मिलने पर स्वास्थ्य एवं सुरक्षा टीम मौके पर पहुंची और उक्त कर्मचारियों को बठिंडा एम्स ले आई। काफी प्रयासों के बाद भी 3 कर्मचारियों को बचाया नहीं जा सका और उनकी मौत हो गई, जबकि एक कर्मचारी की हालत गंभीर बनी हुई है। मृतकों की पहचान सुखपाल सिंह, राजविंदर सिंह और अस्तर अली के रूप में हुई है, जबकि चौथे कर्मचारी कृष्ण कुमार की हालत खतरे से बाहर बताई गई है। फिलहाल गैस रिसाव को रोकने के लिए बचाव अभियान चलाया जा रहा है।

24 साल पुराने धोखाधड़ी मामले में महिला को कड़ी सजा, दोषी करार

चंडीगढ़ 9 मई (निस) पंजाब एवं हरियाणा हाईकोर्ट ने 24 साल पुराने एक मामले में महिला को दोषी करार देते हुए सख्त सजा सुनाई है। बेहद ही हैरान करने वाला ये मामला मोहाली से सामने आया हैं। जानकारी के मुताबिक, 74 वर्षिय महिला को 24 साल पुराने धोखाधड़ी के मामले दोषी करार दिया है। आरोपी महिला की पहचान चरणजीत कौर निवासी बठिंडा के रूप में हुई है। महिला चरणजीत कौर व उसके एक सह आरोपी पर 1999 में जगजीत सिंह व प्रताप सिंह से 15 लाख रुपए लेकर कनाडा भेजने का झांसा दिया गया था। महिला पर आरोप है कि न तो उसने शिकायतकर्ता को विदेश भेजा और न उसके पैसे वापस किए है। इस मामले में 2008 में ट्रायल कोर्ट ने आरोपी महिला को धारा 420 के तहत दोषी ठहराया और 2 साल की कैद की सजा सुनाई। इसके बाद मामला हाईकोर्ट के पास पहुंचा। हाईकोर्ट ने उम्र व समय को ध्यान में रखते हुए महिला को 2 साल से घटाकर एक साल की साधारण कारावास की सजा सुनाई है।

तनावपूर्ण हालात में सीमावर्ती गांवों के लोग आए सामने, बोले- जरूरत पड़ी तो...

अमृतसर 9 मई (निस) एक तरफ शहरी क्षेत्रों में किराना, सब्जी व अन्य जरूरी सामान बेचने वाली दुकानों पर लोगों की भारी भीड़ देखी गई तथा लोग जमाखोरी करते नजर आए, वहीं दूसरी तरफ भारत-पाकिस्तान सीमा से सटे गांवों के लोगों के चेहरों पर एक भी शिकन नजर नहीं आई। इन गांवों में अटारी, मोदे, धनोआ, नेष्टा, राजाताल, रत्तनखुर्द, धनोआ खुर्द आदि शामिल हैं, जो सरहदी कटींली तार से 100 से 200 मीटर की दूरी पर स्थित हैं और यहां घरों की छतों से पाकिस्तान को देखा जा सकता है। इन लोगों का कहना है कि चाहे कुछ भी हो जाए, वे अपना गांव और अपनी जमीन नहीं छोड़ेंगे और सेना के साथ मिलकर पाकिस्तान को कड़ी टक्कर देकर सबक सिखाएंगे। धनोआ निवासी राजिंदर सिंह और रौड़ावाला निवासी सक्तर सिंह ने कहा कि देश का इतिहास गवाह है कि जब भी किसी बाहरी ताकत ने भारत पर हमला किया है, तो पंजाब और सीमावर्ती गांवों के लोगों ने सबसे पहले दुश्मन का सामना किया है और हमेशा दुश्मन को कड़ी टक्कर दी है। हम सीमावर्ती गांवों के लोग हैं जो पीठ दिखाना नहीं और दुश्मन की छाती पर गोली चलाना नहीं जानते। सेना के साथ मिलकर जहां खाने-पीने व अन्य सामान से सहयोग किया जाएगा वहीं समय आने पर बंदूकों का भी उपयोग किया जाएगा।

1965-71 के युद्ध में सेना के साथ खड़े लोग-सीमा पर बाड़ के पास रहने वाले सेवा सिंह और जरनैल सिंह ने बताया कि 1965 और 1971 के युद्ध के दौरान जब भारतीय सेना पाकिस्तान से लड़ रही थी, तब गांव वालों ने खुद ही सेना को राशन-पानी पहुंचाया था और सेना की सप्लाई लाइन को मजबूत किया था।

कितना ताकतवर है एस-400 मिसाइल सिस्टम, जिसने जालंधर सहित 15 जगहों पर हमले किए नाकाम

जालंधर 9 मई (निस) भारत और पाकिस्तान के बीच तनाव बढ़ता जा रहा है। ऑपरेशन सिन्दूर के बाद पाकिस्तान इतना बौखला गया है कि उसने कल देर रात जालंधर, कपूरथला, लुधियाना, अमृतसर, आदमपुर, बठिंडा, चंडीगढ़, अवंतीपोरा, श्रीनगर, जम्मू, पठानकोट, नाल, फुलड़ी, भुज, उत्तरलाई में हमले की कोशिश की है। यह जानकारी भारत सरकार द्वारा दी गई है। जानकारी के मुताबिक, पाकिस्तान द्वारा ड्रोन और मिसाइलें दागी गईं, जिन्हें भारत ने एस-400 मिसाइल प्रणाली से विफल कर दिया। भारत की वायु रक्षा प्रणाली ने पाकिस्तान द्वारा दागी गई मिसाइलों को हवा में ही नष्ट कर दिया।

क्या है एस-400 मिसाइल और कितनी शिक्ताशाली ?

एस-400 मिसाइल को भारत की सबसे घातक और शक्तिशाली वायु रक्षा प्रणाली माना जाता है। यह प्रणाली भारत को किसी भी हवाई हमले से बचाने में कारगर है। 2018 में भारत ने रूस से करीब 5 अरब डॉलर में इसे खरीदने का सौदा किया था। जिसके बाद भारत ने रूस से मिसाइलों की 5 यूनिट खरीदी हैं। कहा जाता है कि इसकी मारक क्षमता इतनी घातक है कि यह उन्नत लड़ाकू विमानों को भी मार गिरा सकता है। यह मिसाइल ऐसी है कि अगर पाकिस्तान या चीन परमाणु हमला करने की कोशिश भी करता है तो एस-400 उस हमले को भारत पहुंचने से पहले ही नष्ट कर सकता है। एस-400 मिसाइल को दुश्मन के लिए सबसे खतरनाक माना जाता है और इसकी स्थिति स्थिर नहीं है। इसीलिए इसका आसानी से पता नहीं लगाया जा सकता। इसमें लगा रडार बहुत उन्नत है। इसकी मिसाइलें 400 किलोमीटर की दूरी तक हमला कर सकती हैं। एस-400 एक बार में 72 मिसाइलें दाग सकता है। यह मिसाइल माइनस 50 डिग्री से लेकर माइनस 70 डिग्री तक काम कर सकती है। एस-400 मिसाइल 100 फीट से लेकर 40,000 फीट तक के लक्ष्यों को आसानी से पकड़ कर मार गिरा सकती है। इस मिसाइल को कहीं भी ले जाकर नष्ट करना आसान नहीं है।

कितना शक्तिशाली है पाकिस्तान का शाहीन-3?

वहीं अगर पाकिस्तान के शाहीन-3 की बात करें तो शाहीन-3 बहु-चरणीय ठोस ईंधन रॉकेट द्वारा संचालित होता है। इस मिसाइल का परीक्षण 9 अप्रैल 2022 को किया गया। पाकिस्तान ने इस मिसाइल को सफल घोषित किया। इसे पाकिस्तान की सबसे खतरनाक मिसाइल कहा जाता है, जिसकी मारक क्षमता 2750 किलोमीटर तक है। बताया जा रहा है कि, पाकिस्तान ने इस मिसाइल को और अपडेट किया है, जिससे इसकी मारक क्षमता और बढ़ गई है।

लोगों को महंगाई का बड़ा झटका, सूखे मेवों की कीमतों में भारी उछाल

श्रीनगर 9 मई (निस) भारत पाकिस्तान के बीच चल रहे तनाव के बीच लोगों को महंगाई का बड़ा झटका लगा है। सूखे मेवों की कीमतों में भारी उछाल देखने को मिल रहा है। पहलगाम आतंकी हमले के बाद अटारी-वाघा बॉर्डर के हाल ही में बंद होने से अफगानिस्तान से भारत में सूखे मेवों के आयात पर असर पड़ा है। विशेषज्ञों का अनुमान है कि इस रुकावट का घरेलू सूखे मेवों के बाजार, खासकर कश्मीर में काफी असर पड़ेगा। सूखे मेवों के डीलरों ने बताया कि पिछले 10 दिनों में कुछ सूखे मेवों की कीमतों में लगभग 10-15 प्रतिशत की वृद्धि हो चुकी है। उन्होंने चेतावनी दी कि अगर रुकावटें जारी रहीं तो आने वाले दिनों में कीमतों में और वृद्धि होने की संभावना है। औसतन, सूखे मेवे लेकर 15 से 20 ट्रक प्रतिदिन वाघा बॉर्डर के माध्यम से भारत में प्रवेश करते थे, दिवाली जैसे त्योहारों के दौरान इनकी संख्या बढ़ जाती है। 22 अप्रैल से अटारी-वाघा बॉर्डर बंद होने के कारण, जल्दी खराब होने वाले सामान ले जाने वाले कई ट्रक कथित तौर पर आपूर्ति किए बिना ही वापस लौट गए हैं, जिससे आपूर्ति में कमी आई है जिसका स्थानीय उत्पादकों को लाभ हो सकता है।

CHARDIKLA TIME TV
24X7 INFOTAINMENT CHANNEL
SCAN TO DOWNLOAD OUR APP
SCAN TO WATCH LIVE
Available FREE! at following Platforms
TATA PLAY CH. NO. 1945
DD Free Dish CH. NO. 340
VIDEOCON d2h Digital DTH Service CH. NO. 779
airtel digital TV CH. NO. 557
dishtv CH. NO. 1152
in digital CH. NO. 581
Jio TV
Available Worldwide on
in USA sling TELEVISION
dish CH. NO. 748-008
amazon fireTV
YouTube
TikTok
Roku TV
eBaba Ent
SMART STB
TANGO TV
FREE TV
MOBI FREE TV
EKOM FLIX
CHARDIKLA MEDIA NETWORK
Also available on Social Media @
/Chardikla Time TV
/CK Time TV North America
/Chardikla Time TV Live
ceo@cktimetv.com
www.timetv.news
www.cktimetv.com

इन्द्रप्रीत कौर दर्दी, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक भारत देश हमारा ने जेएसडी पब्लिकेशन्स प्रा. लिमि. पटियाला के लिए मोर्चा प्रिंटर्स, एससीओ 3-4, चौंक दुखनिवारण साहिब, सरहिंद रोड पटियाला के कीपर जगजीत सिंह से छपवाकर कार्यालय भारत देश हमारा गुरू हरिकृष्ण पब्लिक स्कूल बिल्डिंग, पुरानी प्रेस रोड, पटियाला से प्रकाशित किया।
PRGI (RNI) Regd. No.42376/1985